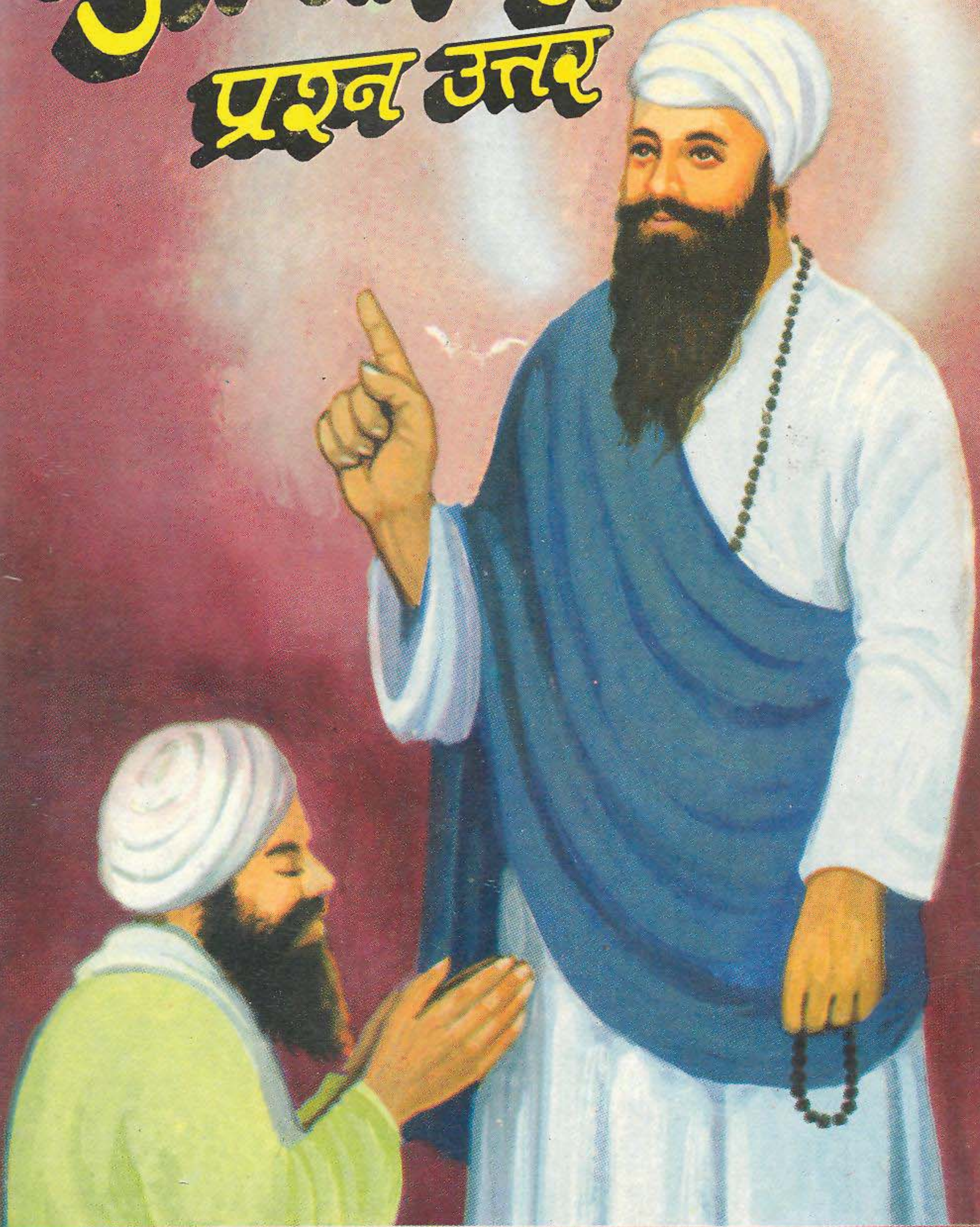
गुरु और गुरबाणी

प्रश्न उत्तर



सुरिंदरजीत सिंह 'पाल'

गुरु और गुरबाणी
प्रश्न उत्तर

लेखक :
सुरिंदरजीत सिंघ 'पाल'



प्रकाशक
भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ
अमृतसर

ISBN : 81-7601-251-3

प्रथम संस्करण : 1999

द्वितीय संस्करण : अप्रैल 2005

भेटा : 90-00

हिन्दी अनुवादक :

राजेश कुमार शर्मा (एम.ए.)



प्रकाशक :

भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ

बाज़ार माई सेवा, अमृतसर।

टैली–फैक्स : (0183) 2542346, 2547974, 2557973

E-mail : csjs@vsnl.com, csjsexport@vsnl.com

Website : www.csjs.com

(1000) (Printed in India)

मुद्रक : जीवन प्रिंटर्ज़, 312, ईस्ट मोहन नगर, अमृतसर। फोन :– 2705003, 5095774

खालसा स्थापना दिवस
के ३०० वर्ष पूर्ण होने के
उपलक्ष्य में खालसा पंथ की
शान 'युवा गुरसिख पीढ़ी'
को समर्पित

'पाल'

अनुक्रम



भूमिका

खालसा पंथ की स्थापना के ३०० वर्ष के सम्बन्ध में जब मुझे कई नेताओं और लोगों से बातचीत करने का अवसर मिला तो पता चला कि इस उत्सव को सारी दुनिया में बहुत उचित ढंग से मनाये जाने का कार्यक्रम बनाया जा रहा है। मेरे मन में भी यह विचार आया कि कोई ऐसा तरीका ढूंढा जाये, जिससे मैं अपने स्तर पर इस अवसर को मनाने में कुछ योगदान पा सकूं। जब मेरी मुलाकात केस संभाल प्रचार संस्था के प्रधान डाक्टर भूपिंदर सिंघ और सचिव स. जसबीर सिंघ सी.ए., श्री जजबीर सिंघ और स.सुखदेव सिंघ से हुई तो मुझे यह जान कर खुशी हुई कि सिक्ख धर्म की रहित मर्यादा अनुसार यह संस्था केसों का प्रचार करके बहुत अच्छा काम कर रही है। प्रधान साहिब ने मुझे बताया कि संस्था का विचार है कि केसों की बेदअबी का मुख्य कारण सिक्ख बच्चों में अपने इतिहास और अपने विरसे के ज्ञान की कमी है; इसलिए कोई ऐसी पुस्तक तैयार करनी चाहिए जिस में आवश्यक जानकारी अल्प शब्दों में दी जाये। उन्होंने मुझे हुक्म किया कि इस सिलसिले में मैं कुछ सेवा करूं। मैंने यह सेवा कबूल कर ली और वाहिगुरु के आगे अरदास की कि वह मुझे इस को पूरा करने का बल दें।

गुरुओं की जिन्दगी और गुरबाणी बारे लिखना मुझ जैसे तुच्छ इन्सान के लिये बहुत मुश्किल काम था। विद्वानों ने बहुत बड़ी-बड़ी पुस्तकें और इतिहासकारों ने इतिहास लिख कर यह काम किया है, लेकिन आजकल टैलीविज़न के युग में कम पढ़ने की दिलचस्पी को देख कर विद्यार्थियों को कुछ पढ़ने के लिये देना एक असंभव बात लगती है। सभी कठिनाइयों के बावजूद वाहिगुरु का आसरा लेकर मैंने यह विचार किया कि छोटे-छोटे सवालों की शक्ल में अगर एक पुस्तक तैयार की जाये तो लोग इस को पढ़ने के लिए कुछ समय ज़रूर निकाल लेंगे। इस का एक उद्देश्य यह भी है कि यदि किसी प्रश्न के बारे में जानकारी चाहिये तो उस प्रश्न

को पढ़ कर वह जानकारी तुरंत ही हासिल की जा सकती है।

इस पक्ष से यह छोटी-सी कोशिश वाहिगुरु ने मुझ से करवाई और पंजाबी में प्रश्न-उत्तर की एक पुस्तक तैयार हो गई। परमात्मा की कृपा से जब वह पुस्तक लोग पढ़ने लगे तो मैंने यह महसूस किया कि इस पुस्तक को हिन्दी और इंगलिश में भी छपवाया जाये ताकि इस को ज़्यादा से ज़्यादा लोग पढ़ सकें। इसी उद्देश्य से यह पुस्तक हिन्दी में तैयार की गई है तथा प्रश्न और उत्तर के नम्बर ३०० तक कर दिये गए हैं।

इस से पहले मैं यह भूमिका समाप्त करूं मैं उनका शुक्रिया करना चाहूंगा जिन्होंने इस पुस्तक को लिखने में, छापने में और आप तक पहुंचाने में मेरी बहुत मदद की। एस.के.एस कम्प्यूटर लिंक्स अमृतसर के स. प्रितपाल सिंघ और उनके स्टाफ के सदस्य समय-समय पर इस पुस्तक को लिखने के लिए अपना कीमती समय मेरे लिए निकालते रहे हैं। उन की मदद के बिना यह किताब लिखनी बहुत मुश्किल थी। मैसर्ज़ चतर सिंघ जीवन सिंघ के स. हरभजन सिंघ इस प्रयत्न के लिए मेरे प्रेरणा स्रोत रहे हैं। मैं जब भी कहता कि इस में कठिनाई आ रही है वह मेरी हौसला अफज़ाई करते और मुझे हिम्मत देकर फिर इस काम पर लगा देते। वाहिगुरु ने मुझसे यह काम करवाने के लिए उनको मेरा प्रेरक बना कर रखा। मैं अपने बच्चों हरप्रीत, हरमनजीत, जजबीर और इंदरबीर का भी धन्यवादी हूं कि उन्होंने मेरे लिए कई प्रश्न और उत्तर लिखे। आखिर में मैं अपनी माता जी और अपनी पत्नी मिसिज़ शरणपाल का भी कृतज्ञ हूं जिन्होंने मेरे लिखने के समय मेरा साथ निभाया। कई ऐसे घर के काम जिनके लिये मैं समय नहीं दे सका उन्होंने मेरी तरफ से करके मुझे अपने काम पर ध्यान देने का समय दिया।

—सुरिंदरजीत सिंह 'पाल'

सिक्ख धर्म के बानी—गुरु नानक

१. प्रश्न - 'सिक्ख' शब्द से क्या भाव है? सिक्ख धर्म को मानने वाले कौन लोग हैं?

उत्तर - 'सिक्ख' शब्द संस्कृत के 'शिष्य' शब्द से बना है, जिस का अर्थ है शागिर्द। सिक्ख धर्म को मानने वाले वो लोग हैं जो दस सिक्ख गुरुओं के उपदेश को मानते हैं और गुरु ग्रंथ साहिब को अपना गुरु मानते हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा जारी की हुई सिक्ख रहित मर्यादा अनुसार "जो स्त्री या पुरुष एक अकाल पुरुष, दस गुरु साहिबान, श्री गुरु ग्रंथ साहिब और दस गुरु साहिबान की बाणी व शिक्षा तथा दशमेश पिता के अमृत पर निश्चय रखता है तथा किसी और धर्म को नहीं मानता, वह सिक्ख है।"

२. प्रश्न - सिक्ख धर्म के दस गुरु साहिबान के नाम बताओ और उनके जीवन काल और गुरुगद्दी-काल का विवरण दो?

उत्तर -

क्रम	गुरु जी का नाम	जीवन काल	गुरयाई समय
पहले गुरु	गुरु नानक देव जी	१४६९-१५३९ ई.	१४६९-१५३९ ई.
दूसरे गुरु	गुरु अंगद देव जी	१५०४-१५५२ "	१५३९-१५५२ ई.
तीसरे गुरु	गुरु अमरदास जी	१४७९-१५७४ "	१५५२-१५७४ ई.
चौथे गुरु	गुरु रामदास जी	१५३४-१५८१ "	१५७४-१५८१ ई.
पांचवें गुरु	गुरु अर्जुन देव जी	१५६३-१६०६ "	१५८१-१६०६ ई.
छठे गुरु	गुरु हरिगोबिंद साहिब जी	१५९५-१६४४ "	१६०६-१६४४ ई.
सातवें गुरु	गुरु हरिराय जी	१६३०-१६६१ "	१६४४-१६६१ ई.
आठवें गुरु	गुरु हरि कृष्ण जी	१६५६-१६६४ "	१६६१-१६६४ ई.
नौवें गुरु	गुरु तेग बहादुर जी	१६२१-१६७५ "	१६६४-१६७५ ई.
दसवें गुरु	गुरु गोबिंद सिंघ जी	१६६६-१७०८ "	१६७५-१७०८ ई.
वर्तमान गुरु	श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी	८-१०-१७०८ से......	

३. प्रश्न - ईस्वी सन्, बिक्रमी सम्वत् और नानकशाही सम्वत् से किस प्रकार अलग है?

उत्तर - ईस्वी सन्, ईसा के संसार त्यागने के बाद शुरू हुआ। इस अनुसार जनवरी से दिसंबर तक महीने होते हैं और आने वाला साल १९९९ का होगा। ईस्वी सन् का सम्बन्ध उज्जैन के राजा बिक्रमादित्य के साथ है। बिक्रमी सम्वत् ईस्वी सन् से ५७ साल पहले शुरू हुआ था। उदाहरण के तौर पर गुरु नानक देव जी का अवतार जो १४६९ ईस्वी में हुआ, बिक्रमी सम्वत् के मुताबिक १५२६ सम्वत् में था, यानी कि ५७ साल ज़्यादा। नानकशाही सम्वत् गुरु नानक देव जी के आगमन के साथ शुरू होता है। खालसा पंथ की स्थापना के ३००वें वर्ष को मनाने के उपलक्ष्य में पंथ ने अपने पूर्व नानकशाही सम्वत् अनुसार मनाने का फैसला किया है। इस सिलसिले में नानकशाही सम्वत् ५३१ की जन्त्री एस. जी. पी. सी. अमृतसर की तरफ से जारी की गई है।

इस जन्त्री में महीने गुरुबाणी में आए बारह माहा के अनुसार इस प्रकार लिए गए हैं—

महीना	*कुल दिन*	*शुरू होने की ई. तारीख*
चेत्र	३१	१४ मार्च
वैसाख	३१	१४ अप्रैल
ज्येष्ठ	३१	१५ मई
आषाढ़	३१	१५ जून
सावन	३१	१६ जुलाई
भाद्रपद	३०	१६ अगस्त
आश्विन	३०	१५ सितंबर
कार्तिक	३०	१५ अक्तूबर
मार्गशीर्ष	३०	१४ नवम्बर
पौष	३०	१४ दिसम्बर
माघ	३०	१३ जनवरी
फाल्गुन	३० (लीप के वर्ष में)-३१	१२ फरवरी

४. प्रश्न - नानकशाही कैलेंडर का खालसा पंथ को क्या फायदा है?

उत्तर - यह कैलेंडर पंथक परम्परा अनुसार होने के कारण सिक्ख धर्म में फ़रव्र की भावना पैदा करेगा। इस के लागू होने से सारे गुरुपर्व सांझे कैलेंडर की तय हुई तारीखों पर ही आया करेंगे। अब गुरुपर्व १०-११ दिन पीछे या १८-१९ दिन आगे हो जाते हैं। इस तरह गुरुपर्व के आगे-पीछे होने से किसी वर्ष गुरु गोबिंद सिंघ का गुरुपर्व साल में २ बार आ जाता है और किसी वर्ष आता ही नहीं था। अब यह गुरुपर्व ई. की एक ही तारीख को आएगा क्योंकि यह हर वर्ष २३ पौष को होगा जो कि ५ जनवरी को आया करेगा। इस तरह बारह माहा के महीने हर वर्ष मौसम अनुसार ही आएंगे। विस्तार के लिए एस. जी. पी. सी. की जन्त्री देखिए।

५. प्रश्न - सिक्ख धर्म के गुरुओं के जीवन के बारे में जानकारी देने वाले मुख्य स्रोत कौन से हैं?

उत्तर - गुरुओं के जीवन के बारे जानकारी उनकी अपनी रची हुई बाणी और समकालीन लेखकों की रचनाओं में से मिलती है। भाई गुरदास जी की रचनाएं एक ऐसा ही स्रोत हैं। गुरु नानक देव जी के जीवन के बारे में लिखी हुई जन्म साखियां भी एक प्रमुख स्रोत हैं। गुरु गोबिंद सिंघ जी की रचनाएं ज़फ़रनामा और बचित्र नाटक भी बहुत महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। इनके अलावा सेनापति की गुरु शोभा और भाई मनी सिंघ जी द्वारा रचित ज्ञान रत्नावली गुरमुखी में लिखे हुए बहुत ही लाभदायक स्रोत हैं। गुरु काल से बाद लिखी हुई पुस्तकों में महत्त्वपूर्ण हैं; बाबा कृपाल सिंघ की महिमा प्रकाश, सरूप दास भल्ला की महिमा प्रकाश (काव्य रूप में) और केसर सिंघ छिब्बर की बंसावली नामा, गुरु बिलास पातिशाही छठी और भाई सुखा सिंघ की गुरु बिलास पातिशाही दसवीं भी सिक्ख इतिहास के अमूल्य स्रोत हैं। फारसी भाषा में भी कई ऐसे स्रोत हैं जिन से गुरुओं के जीवन के बारे में लाभदायक जानकारी प्राप्त होती है, जैसे कि बाबर की तुजके बाबरी, जहांगीर की तुजके जहांगीरी, अबल फज़ल की आइने अकबरी, मोहसिन फानी की दासिताने मज़हिब और खाफी खान द्वारा लिखी पुस्तक मुतखिबल लुबाब। गुरुओं के बारे में जानकारी देने वाली कुछ और महत्त्वपूर्ण पुस्तकें १८वीं और १९वीं सदी में लिखी गईं जैसे कि भाई संतोख सिंघ का सूरज प्रकाश ग्रंथ और अंग्रेज़ लेखक मैकालफ का छः भागों में लिखा सिक्ख रिलिज़न।

६. प्रश्न - गुरु नानक देव जी के जीवन के बारे में जानकारी देने वाली जन्म साखियों पर रौशनी डालें?

उत्तर - जन्म साखियां पहले गुरु के जीवन के बारे में जानकारी देने वाला एक महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। अब तक प्राप्त हुए दस्तावेजों के हिसाब से नीचे लिखीं जन्म साखियां उपलब्ध हैं:-

१. पुरातन जन्म साखी (जिसको भाई वीर सिंघ ने इंगलैंड और कुछ पंजाब में से मिले दस्तावेजों को मिला कर तैयार की)।

२. शंभूनाथ वाली जन्म पत्री (जिस के संपादक डा. प्यार सिंघ जी हैं)।

३. जन्म साखी श्री गुरु नानक देव जी (जिस का संपादन डा. प्यार सिंघ ने किया)।

४. भाई मिहरबान वाली जन्म साखी (जिस में गोष्टियां हैं और जिस का संपादन डा. कृपाल सिंघ जी ने किया है)।

५. भाई बाले वाली जन्म साखी।

६. भाई मनी सिंघ वाली जन्म साखी।

वैसे तो इन जन्म साखियों में इतिहास के साथ पौराणिक कथाओं का संगम है, परन्तु इस सिलसिले में जानकारी इक्ट्ठी करने के लिए और निरंतर खोज करने के लिए जन्म साखियां एक महत्त्वपूर्ण आधार हैं।

७. प्रश्न - गुरु नानक देव जी के जीवन काल में दिल्ली के हाकम कौन थे?

उत्तर - गुरु नानक देव जी के अवतार लेने के समय मुल्क में लोधी खानदान का शासन था। बहिलोल खां लोधी, सिकंदर शाह लोधी और फिर इब्राहीम लोधी ने राज किया। इब्राहीम लोधी को बाबर ने १५२६ ई. में पानीपत की पहली लड़ाई में हरा कर शासन सम्भाल लिया। बाबर काबुल से आया था। उसके द्वारा पंजाब में हमले करते रहने से राजनीतिक स्थिति में काफी हलचल हुई। लोगों को इन हमलों के कारण जो तकलीफें सहनी पड़ीं, उस का ज़िक्र गुरु जी ने अपनी बाणी में किया है। बाबर के बाद उसका पुत्र हमायूं १५३० ई. में गद्दी पर बैठा।

८. प्रश्न - सिक्ख धर्म के बानी गुरु नानक देव जी कब और कहां पैदा हुए? आप जी के माता-पिता के क्या नाम थे?

उत्तर - श्री गुरु नानक देव जी का जन्म राय भोइं की तलवंडी; जिस को आजकल ननकाणा साहिब भी कहा जाता है और जो अब पाकिस्तान में है, में सन् १४६९ में पिता महिता कालू जी और माता तृप्ता देवी जी के गृह में हुआ।

९. प्रश्न - गुरु नानक देव जी के जन्म के बारे में कार्तिक अथवा वैसाख महीने के मतभेद हैं। कुछ इतिहासकारों का कथन है कि आप जी का जन्म वैसाख के महीने में हुआ था, पर आजकल गुरु नानक देव जी का जन्म कार्तिक की पूर्णमाशी वाले दिन मनाया जाता है, ऐसा क्यों?

उत्तर - गुरु नानक देव जी के बारे में हमें ज़्यादा जानकारी उनके जीवन बारे लिखी साखियों में से मिलती है। इन जन्म साखियों में से भाई बाले वाली जन्म साखी सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध है। इस बारे कहा जाता है कि यह गुरु अंगद देव जी ने भाई पैड़े मोखे से १६०१ बिक्रमी में भाई बाले की ज़ुबानी लिखवाई थी। इस जन्म साखी में गुरु महाराज जी का अवतार कार्तिक की पूर्णमाशी सम्वत् १५२६ लिखा है। बेशक इस के बाद भाई मनी सिंघ जी ने अपनी जन्म साखी में अवतार धारण करने का महीना वैसाख १५२६ बताया और मास्टर करम सिंघ हिस्टोरियन ने अपनी पुस्तक "कार्तिक और वैसाख" में भी वैसाख १५२६ ही जन्म का महीना माना, परन्तु इस मत से पंथ में पैदा हुए विवाद को हल करने के लिये सिक्ख पंथ की दो मुख्य संस्थाएं, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी और चीफ खालसा दीवान ने कौम के लिए यह फैसला किया है कि श्री गुरु नानक देव जी का अवतार पर्व कार्तिक की पूर्णमाशी को ही मनाया जाता रहे। इस फैसले के अंतर्गत ही अब यह गुरुपर्व कार्तिक की पूर्णमाशी को मनाया जाता है। एस. जी. पी. सी. द्वारा नानकशाही जंत्री जारी करने के बाद भी इस परम्परा को बरकरार रखा गया है।

१०. प्रश्न - गुरु नानक देव जी के आगमन के समय पंजाब की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक हालत किस तरह की थी?

उत्तर - उस समय पंजाब में दो धर्म प्रमुख थे: हिन्दू धर्म और इस्लाम। इस्लाम धर्म की सामाजिक और आर्थिक स्थिति हिन्दू धर्म से कुछ अच्छी थी,

क्योंकि मुस्लिम-राज्य था। सो उच्च श्रेणी के मुसलमान जैसे कि सरदार, खान, मलक और अमीर ऐशो-आराम वाला जीवन बिता रहे थे। गरीब मुसलमानों की हालत हिन्दुओं जैसी ही थी, पर उनको हिन्दुओं की तरह धार्मिक टैक्स जैसे कि जजिया नहीं देने पड़ते थे। हिन्दुओं पर कई तरह के और भी ज़ुल्म होते थे और उनको नफ़रत की नज़र से देखा जाता था। हिन्दू समाज में जातियों-उपजातियों ने उनकी हालत और भी बुरी कर दी थी। स्त्री को दोनों धर्मों में ही एक ऐश की वस्तु से बढ़ कर कुछ भी नहीं समझा जाता था। हिन्दू धर्म में व्रत, तीर्थ यात्रा तथा अन्य कई कर्म-कांडों को महत्ता दी जाती थी। लोग धर्म से दूर पाखंडों, भ्रम आदि में फंसे हुए मूर्ति पूजन को प्रमुख मानते थे। इस्लाम में भी कई रस्मों-रिवाज़ों ने लोगों को धर्म के रास्ते से दूर कर दिया था। बाबर के हमले से राजनीतिक अवस्था में भी तनाव बना हुआ था।

११. प्रश्न - भाई गुरदास जी ने उस समय के हालातों को देखते हुए गुरु महाराज के अवतार को अन्धेरे में रौशनी होते दर्शाया है। भाई गुरदास जी की इस सिलसिले में यादगारी पंक्तियां कौन-सी हैं?

उत्तर - भाई गुरदास जी अपनी पहली वार में गुरु नानक देव जी के आगमन की विस्तारपूर्वक चर्चा करते हैं। आप लिखते हैं:-

सुणी पुकारि दातार प्रभु गुरु नानक जग माहि पठाइआ।

... ...

कलिजुगु बाबे तारिआ सतिनामु पड़ि मंत्रु सुणाइआ।

आप जी आगे लिखते हैं:

सतिगुरु नानकु प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।
जिउ करि सूरजु निकलिआ तारे छपि अंधेरु पलोआ।

१२. प्रश्न - आज के युग में भी एक मशहूर मुसलमान कवि ने गुरु महाराज के आगमन को बड़े सुंदर शब्दों में बयान किया है, उस कवि का नाम बता कर उसके उन शब्दों का उल्लेख करो?

उत्तर - इस शताब्दी के मशहूर कवि इकबाल ने अपनी एक ऐतिहासिक नज़्म में गुरु जी के बारे में इस तरह लिखा है :-

(फिर) उठी आखिर सदाअ तोहीद की पंजाब से।

हिन्द को इक मरदे-कामल ने जगाइआ खाब से।
(पुस्तक बांगि दरा में से)

१३. प्रश्न - *कुछ ऐसे व्यक्तियों के नाम बताओ जिनका सम्बन्ध गुरु नानक देव जी के साथ उनके बचपन के दिनों में रहा?*

उत्तर - गुरु जी के जन्म के समय की दाई का नाम दौलतां था। उसने बालक के जन्म समय उसके मुंह पर हंसी और जन्म स्थान पर एक अजब रौशनी देखी। पंडित हरदियाल ने भी बालक को एक असाधारण बालक बताते हुए भविष्यवाणी की कि यह सारे जग का उद्धार करेगा। तलवंडी का ज़मींदार राय बुलार भी गुरु जी के बचपन से ही उनकी महानता को समझता था और गुरु जी के पिता महिता कालू जी को इस बारे में बताता रहता था। गुरु जी की बहन बेबे नानकी भी बचपन में ही अपने भाई को भगवान का रूप समझती थी जो संसार में लोगों को धर्म की राह पर चलाने के लिए प्रकट हुआ था।

१४. प्रश्न - *गुरु नानक देव जी के बचपन में हुई कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं का जिक्र करो?*

उत्तर - गुरु जी आम बच्चों से अलग स्वभाव रखते थे। आप का मन सेवा और प्रेम से भरा रहता था और भक्ति की भावना से जुड़ा रहता था। कई तरह की अलौकिक कहानियां आप के बचपन से जुड़ी हुई हैं। मिसाल के तौर पर जब आप को जनेऊ पहनाने की रस्म अदा की जाने लगी तो कच्चा जनेऊ डालने से आप ने इन्कार करते हुए पांडे को बताया कि असली जनेऊ किस तरह का होता है :-

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु॥
ऐहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु॥
ना ऐहु तुटै न मलु लगै ना ऐहु जलै न जाइ॥
धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ॥
(पन्ना ४७१)

एक बार आप के पिता जी ने आपको भैंसें चराने के लिए कहा। भैंसें चराते हुए आप का ध्यान प्रभु-भक्ति में लीन हो गया और भैंसें एक ज़मींदार के खेत में चली गईं और उस की सारी खेती खा गईं। जब ज़मींदार की शिकायत पर राय बुलार ने पता लगाया तो सारा खेत हरा-भरा ही पाया गया।

इसी तरह एक बार भैंसें चराते हुए आप प्रभु के ध्यान में लीन एक वृक्ष के नीचे विराजमान थे तो आप के मुंह पर आई धूप को दूर करने के लिए एक सर्प ने आप पर छाया कर दी। इस कौतुक को राय बुलार ने भी देखा। उस स्थान पर एक गुरुद्वारा माल जी साहिब (अब पाकिस्तान में) स्थित है।

पिता कालू ने जब बालक नानक को किसी भी काम में दिलचस्पी न लेते हुए और हमेशा एकांत में एकाग्रचित अवस्था में ही देखा तो उन्होंने समझा कि बालक तंदरुस्त नहीं। लेकिन जब वैद्य को बुलाया गया तो वैद्य को नब्ज़ देख कर किसी बीमारी का पता न चला। गुरु जी ने उस वक्त यह वचन किया :

वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढौले बांह॥
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि॥ १॥ (पन्ना १२७९)

गुरु जी के बचपन की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना है 'सच्चा सौदा' करने की। जब पिता ने आप को किसी काम में लगाने के उद्देश्य से बीस रुपए देकर कोई लाभ वाला सौदा करने के लिए भेजा तो गुरु जी ने वे पैसे एक भूखी संत मंडली को भोजन कराने में खर्च कर दिए। भाई बाला, जो उस वक्त आप के साथ थे, आप को पिता जी के मनोरथ के बारे में बताते रहे, पर गुरु जी ने समझाया कि इस से बड़ा सच्चा सौदा कोई और नहीं हो सकता। इस घटना की याद में गांव चूहड़काणे में गुरुद्वारा 'सच्चा सौदा' स्थित है। (अब पाकिस्तान में)।

१५. प्रश्न - गुरु नानक देव जी की शिक्षा प्राप्ति के बारे में बताओ?

उत्तर - गुरु जी को सबसे पहले गोपाल पांधे के पास पढ़ने के लिए भेजा गया। जब गुरु जी ने पांधे से अक्षरों के अर्थ पूछने शुरू किए तो वह लाजवाब हो गया। गुरु जी ने उस वक्त पट्टी की रचना की जो गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना ४३२ पर अंकित है। 'पट्टी साहिब' के नाम से प्रसिद्ध गुरुद्वारा ननकाणा साहिब में इस घटना की यादगार है।

गुरु जी को संस्कृत और धार्मिक विद्या ग्रहण करने के लिए जब पंडित बृज लाल के पास भेजा गया तो वह भी आप के ज्ञान और बुद्धि को देख कर चकित रह गया। गुरु जी को फ़ारसी पढ़ने मुल्लां के पास भी भेजा गया, पर जब उन्होंने मुल्लां को नीचे लिखे वचन सुनाए:

मरणा मुला मरणा॥ भी करतारहु डरणा॥ १॥ रहाउ॥
ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु खुदाई॥
जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई॥ २॥ (पन्ना २४)

तो मुल्लां को समझ आ गई कि नानक को और बालकों की तरह नहीं पढ़ाया जा सकता। सो गुरु जी ने तीनों उस्तादों को अपने आध्यात्मिक ज्ञान और सूझ-बूझ से प्रभावित कर दिया।

१६. प्रश्न - *कहा जाता है कि गुरु नानक देव जी को एक रूहानी व्यक्तित्व समझने वालों में सर्वप्रथम उनकी बहन थी। गुरु जी की बहन का नाम बताओ और उनके जीवन के बारे संक्षेप में बताओ?*

उत्तर - गुरु नानक देव जी की बहन की उम्र उन से कम से कम ६ वर्ष ज्यादा थी। उनका नाम बेबे नानकी था। बेबे नानकी जी अपने भाई को बहुत प्यार करती थीं। बेबे नानकी अभी ११ वर्ष की ही थीं जब उनकी शादी जय राम जी के साथ हो गई। जय राम जी सुलतानपुर में दौलत खां लोधी के मुलाज़िम थे। जब महिता कालू जी ने चाहा कि गुरु नानक कोई काम करें तो उनको जय राम जी के पास सुलतानपुर भेज दिया गया ताकि जय राम जी उनको नौकरी पर लगवा दें। जय राम जी ने गुरु नानक को मोदीखाने में लगवा दिया जहां उनका काम खाने और पहनने वाला सामान बेचना था। गुरु जी सुलतानपुर में काफी समय रहे। गुरु जी का अपनी बहन के साथ इतना प्रेम था कि शादी के बाद वह अपनी पत्नी को सबसे पहले उनके पास ही लेकर आए। जब तक बेबे नानकी जी जीवित रहीं, गुरु जी हर उदासी (फकीरी गमन) के बाद उनको आकर मिलते रहे। बेबे जी के अकाल चलाने पर भी गुरु जी उनके पास सुलतानपुर में ही थे। उन्होंने अपने हाथों से बेबे जी का दाह संस्कार किया।

१७. प्रश्न - *गुरु नानक देव जी के सुलतानपुर लोधी में बिताए हुए समय की जानकारी दो। आजकल वहां पर कौन से गुरुद्वारे हैं जो उनकी याद से सम्बन्धित हैं?*

उत्तर - जब गुरु नानक सुलतानपुर गए, तब उनके जीजा जय राम जी ने नवाब दौलत खां के मोदीखाने में उनको नौकर करवा दिया। वहां गुरु जी का काम खाने और पहनने का सामान बेचना था। जब गुरु जी सौदा तोलते तो तेरह पर आकर रुक जाते और तेरा-तेरा ही करते रहते। कई ईर्ष्यालु

लोगों ने नवाब को जाकर बता दिया कि गुरु जी तेरह के आंकड़े पर रुक कर मोदीखाना लुटाए जा रहे हैं। पर जब नवाब ने एक बार हिसाब की पड़ताल करवाई तो सरकारी रकम में घाटे की जगह लाभ निकला। इस दौरान गुरु जी की शादी भी हो गई और शादी के बाद भी आप सुलतानपुर में ही रहे। सुलतानपुर में आप जी के जीवन के इस समय से सम्बन्धित कई गुरुद्वारे हैं जैसे कि गुः बेर साहिब, गुः हट्ट साहिब, गुः गुरु का बाग, गुः कोठरी साहिब, गुः बेबे नानकी आदि।

१८. प्रश्न - वेईं नदी कहां है और इस का गुरु नानक देव जी के जीवन से क्या सम्बन्ध है?

उत्तर - वेईं नदी सुलतानपुर के पास बहती है। गुरु जी जब सुलतानपुर रहते थे तो वे इस नदी पर स्नान करते थे। एक दिन जब गुरु जी वेईं नदी में स्नान करने के लिए गए तो फिर बाहर न आए। उनकी बहुत तलाश की गई, परन्तु तीन दिन तक उनका कुछ पता नहीं चला। जब सारे थक चुके तो तीसरे दिन सुबह आप नदी के किनारे बैठे परमात्मा में लिवलीन पाए गए। इस समय के दौरान ही गुरु जी ने अपनी ज़िंदगी का मकसद लोगों को धर्म की राह बताना बना लिया। आप जी के पहले वचन थे, 'न कोई हिन्दू न मुसलमान', जिस का भाव था कि हिन्दू-मुसलमान दोनों दिखावे के हैं, सच्चा इमानदार, अपने धर्म पर पक्का दोनों में से कोई भी नहीं है।

१९. प्रश्न - गुरु नानक देव जी की शादी और संतान के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - जब गुरु जी की आयु १८ वर्ष की हुई और मोदीखाने में काम करते उनको २ वर्ष हो गए थे तब आप की शादी बटाला निवासी मूल चंद खत्री की सुपुत्री बीबी सुलखणी जी के साथ हुई। बारात बटाला शहर गई थी। बटाला में स्थित गुः डेरा साहिब और गुः कंध साहिब उनकी शादी से सम्बन्धित हैं। कहा जाता है कि गुरु जी को कच्ची दीवार के पास बिठा दिया गया था, परन्तु गुरु जी के वरदान से वह दीवार अभी भी सलामत है। गुरु जी अपनी पत्नी के साथ सुलतानपुर में रहे और वहां उनके घर दो पुत्र पैदा हुए जिनके नाम थे बाबा श्रीचंद और बाबा लखमी चंद। बाबा श्रीचंद ने बाद में उदासी प्रथा चलाई और बाबा लखमी चंद जी ने गृहस्थ जीवन बिताया।

२०. प्रश्न - उदासी से क्या भाव है? गुरु नानक देव जी ने कितनी उदासियां कीं?

उत्तर - सिक्ख धर्म में उदासी का भाव है गुरु नानक देव जी द्वारा धर्म के प्रचार के लिए की गई यात्राएं। गुरु महाराज ने चार उदासियां कीं।

२१. प्रश्न - गुरु नानक देव जी अपनी पहली उदासी के दौरान कहां-कहां गए?

उत्तर - गुरु जी ने अपनी पहली उदासी सम्वत् १५५४ में शुरू की और १५६५ में समाप्त की। इस उदासी दौरान आप उत्तर-पूर्व की दिशा में गए और लाहौर, मुलतान, पाक-पटन, कुरुक्षेत्र, करनाल, पानीपत, हरिद्वार, दिल्ली, मथुरा, बनारस, पटना, बुद्धगया, आसाम और उड़ीसा की यात्रा करके आगरा के रास्ते सुलतानपुर लोधी वापस आ गए। इसी उदासी दौरान आप एक बार फिर लाहौर, दीपालपुर, पाक-पटन, कीरतपुर और स्यालकोट के स्थानों पर गए। इसी उदासी के दौरान ही जब आप लाहौर से वापस होते हुए रावी के किनारे पक्खो के रंधावे गांव के एक स्थान पर एक वृक्ष के नीचे बैठे तो आप जी को गांव का चौधरी अजिता रंधावा मिलने के लिए आया था। उस ने गुरु जी को विनती की कि आप रावी के दाईं तरफ डेरा लगाएं। उस स्थान पर ही गुरु जी के लिए एक धर्मशाला और रिहायश का सारा इंतज़ाम कर दिया गया। तदुपरांत गुरु जी अपने माता-पिता को तलवंडी से यहां ले आए व अपनी पत्नी और दोनों पुत्रों को भी सुलतानपुर से यहां ले आए। इस तरह एक नए शहर की नींव रखी गई, जिसका नाम बाद में करतारपुर पड़ गया। इस उदासी दौरान कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं का विवरण अगले सवालों के जवाबों में बताया जाएगा।

२२. प्रश्न - सैदपुर कहां है और पहली उदासी समय इस स्थान की यात्रा करते हुए गुरु नानक देव जी ने कौन-सी बाणी का उच्चारण किया?

उत्तर - सैदपुर गुजरांवाला ज़िला में है और आजकल इस का नाम ऐमनाबाद है, लेकिन अब यह स्थान पाकिस्तान में है। इस स्थान पर गुरु जी ने बाबर के हमले से हुए ज़ुल्म को देखते हुए बाबरवाणी की रचना उच्चारण की।

२३. प्रश्न - भाई लालो जी कौन थे और वह कहां पर रहते थे? गुरु नानक देव जी की भाई लालो जी के साथ मुलाकात का विवरण दो?

उत्तर - भाई लालो जी सैदपुर (अब ऐमनाबाद) में रहते थे। उनका गुरु जी के साथ बहुत प्रेम था। जब गुरु जी सैदपुर गए तो वे वहां एक महीना

ठहरे। वह भाई लालो जी के साथ ही उनके घर में भोजन करते रहे। एक बार सैदपुर के दीवान मलक भागो ने ब्रह्म-भोज किया तो उस में गुरु जी को भी बुलाया गया, परन्तु गुरु जी उस के घर भोजन करने के लिए नहीं गए। मलक भागो को गुरु जी की यह बात अच्छी नहीं लगी और उस ने गुरु जी को इस का कारण पूछा। गुरु जी ने मलक की पूरी-कड़ाह तथा अन्य उत्तम पदार्थ अपने एक हाथ में पकड़ लिए और दूसरे हाथ में भाई लालो की कोदरे की सूखी रोटी पकड़ ली। जब गुरु जी ने दोनों को मुट्ठियों में दबाया तो मलक भागो के ब्रह्म-भोज में से लहू की धारा बह निकली और लालो की रोटी में से दूध निकला। गुरु जी ने लोगों को समझाया कि ब्रह्म-भोज गरीबों पर ज़ोर ज़ुल्म करके तैयार किया गया है, परन्तु भाई लालो की सूखी रोटी सच्ची मेहनत करके कमाई गई है। मलक भागो को अपनी गलती का अहसास हो गया और उस ने अपना अभिमान त्याग दिया। इस कथा से यह पता चलता है कि गुरु नानक देव जी सच्ची मेहनत से की हुई कमाई को ही उत्तम कमाई समझते थे।

२४. प्रश्न - धर्मसाल से क्या भाव है? गुरु जी ने पहली धर्मसाल कब और कहां स्थापित की?

उत्तर - धर्मसाल से भाव है जहां धर्म का काम होता हो। गुरु जी से पहले धर्मशाला में मुसाफिरों के रहने और खाने-पीने का इंतज़ाम ही होता था। गुरु जी ने इस के अलावा धर्मशाला में संगत के साथ मिल कर परमात्मा का नाम सिमरन करना शुरू कर दिया। भाई गुरदास जी बताते हैं कि जहां-जहां गुरु जी गए वहां-वहां धर्मसाल बनाते गए। गुरु जी के अनुयायी ऐसे स्थान पर इक्ट्ठे होकर कीर्तन करते थे और नाम जपते थे तथा आए गए की सेवा करते थे। बाद में गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय आदि ग्रंथ का धर्मसाल में प्रकाश करने से धर्मसाल ने गुरुद्वारे का रूप धारण कर लिया। गुरु नानक देव जी ने पहली धर्मसाल भाई लालो के स्थान पर स्थापित की और उस के बाद कई जगह धर्मसाल बनती गईं। गुरु जी ने अपनी उदासियां समाप्त करके जब करतारपुर में निवास किया तो वहां आप ने एक धर्मसाल शुरू की।

२५. प्रश्न - सज्जन ठग कौन था और वह कहां रहता था? गुरु नानक देव जी ने उस का उद्धार कैसे किया?

उत्तर - सज्जन ठग ज़िला मुलतान में तुलंबे के स्थान पर रहता था। वैसे

तो उसने यात्रियों के लिए खाने-पीने और रिहायश का प्रबंध किया हुआ था, परन्तु उस का असल में काम यात्रियों को लूटना था। गुरु जी जब मर्दाने को साथ लेकर इस के स्थान पर रात रहने के लिए गए तो सज्जन ठग ने उनको अमीर आदमी समझ कर उनकी बहुत सेवा की। जब गुरु जी ने शब्द-कीर्तन शुरू किया और सज्जन ठग को उस की असलियत बता कर उस के भयानक नतीजों के बारे में जानकारी दी तो वह गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा। गुरु जी ने उस को अपनी धर्मशाला में आए हुए लोगों को सच्चे दिल से सेवा करने का उपदेश दिया और पाप की कमाई छोड़ कर खून-पसीने की कमाई करने के लिए प्रेरित किया।

२६. प्रश्न - गुरु जी की कुरुक्षेत्र और हरिद्वार की यात्रा का विवरण दो?

उत्तर - कुरुक्षेत्र के स्थान पर सूर्य ग्रहण का बहुत भारी मेला लगता था। गुरु जी इस मेले के मौके पर वहां पहुंचे। जब लोगों को पता चला कि गुरु जी ने वहां मांस पकाया है तो उन्होंने एतराज किया कि सूर्य ग्रहण के समय मांस खाना महापाप है। हिन्दू लोगों में यह विश्वास था कि इस ग्रहण के समय कुछ भी खाना-पीना नहीं चाहिए और चूल्हे में आग भी नहीं जलानी चाहिए। गुरु जी ने लोगों को समझाया कि यह सब व्यर्थ के भ्रम हैं और सत्य धर्म का यह रास्ता नहीं है। गुरु जी का भाव यह नहीं था कि मांस खाना ठीक या ज़रूरी है बल्कि वह यह बताना चाहते थे कि जो लोग दूसरे लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और उनको लूट कर खाते हैं उनका यह कहना कि मांस खाना जीव-हत्या है, बिल्कुल ही गलत है। सच्चा इन्सान तो वही है जो किसी का भी दिल न दुखाए।

अपनी हरिद्वार की यात्रा के दौरान भी गुरु जी ने जब लोगों को सूर्य की तरफ मुँह करके गंगा को पानी देते देखा तो आप ने सूर्य की तरफ पीठ करके पानी को फैंकना शुरू कर दिया। जब लोगों ने पूछा कि आप यह क्या कर रहे हैं तो गुरु जी ने बताया कि मैं अपनी खेती को, जो करतारपुर में है, पानी दे रहा हूं। जब लोगों ने पूछा कि पानी इतनी दूर कैसे पहुंच सकता है तो आप ने उनको समझाने की खातिर कहा कि अगर पानी सूर्य तक पहुंच सकता है तो फिर उनकी खेती तक क्यों नहीं पहुंच सकता। गुरु जी के प्रचार का यह ढंग बहुत प्रभावशाली था।

२७. प्रश्न - गुरु नानक देव जी के प्रचार ढंग को बयान करो?

उत्तर - गुरु जी ने धर्म का प्रचार करने के लिए दूर-दूर तक सफर किया। उन दिनों में जब आने-जाने के कोई साधन नहीं थे, गुरु जी ने यह रास्ता लोगों तक पहुंचने के लिए अपनाया। आप ने हर जगह लोगों को समझाने के लिए कोई न कोई कौतुक किया। हरिद्वार और कुरुक्षेत्र की यात्रा का ऊपर दिया विवरण उनके ढंग को प्रकट करता है। गुरु जी ने जहां हिन्दू धर्म, इस्लाम, बुद्ध धर्म आदि के तीर्थों की यात्रा करके उनके धार्मिक प्रमुखों के साथ विचार-विमर्श करके उनके भ्रम दूर किए, वहीं चोरों, ठगों, पाखंडियों और दुनिया को ठगने वाले लोगों का उद्धार किया। उनके प्रचार ढंग का एक खास पहलू था कीर्तन द्वारा लोगों को प्रभावित करके परमात्मा के नाम के साथ जोड़ना। रूहानी कीर्तन और गुरु जी का रूहानी व्यक्तित्व लोगों के दिलों में एक गहरी छाप छोड़ता था। गुरु जी के प्रभावशाली प्रचार ढंग की वजह से ही जगह-जगह लोग उनके सिक्ख बन गए और धर्मशालाएं स्थापित हो गईं। आज देश के कोने-कोने में उन घटनाओं की याद को समर्पित गुरुद्वारे स्थापित हैं।

२८. प्रश्न - गुरु नानक देव जी की गोरख मत्ता के स्थान पर योगियों के साथ हुई चर्चा का जिक्र करो?

उत्तर - ज़िला पीलीभीत में गोरखनाथ और उस के शिष्य रहते थे व इसी कारण ही इस स्थान को गोरख मत्ता कहा जाता था। गुरु जी ने इस स्थान पर पहुंच कर योगियों के साथ वार्तालाप की और उनको सच्चा योग मत प्राप्त करने का उपदेश दिया। गुरु जी ने कहा कि योग मत्त न ही किसी भेष में है और न ही शरीर पर मिट्टी मल कर योगियों वाले चिन्ह, जैसे कि डंडा मुंद्राएं आदि अपनाने में है। असली योग माया में रहते हुए उस से निर्लेप रहने में है। गुरु जी का शब्द जो कि गुरु ग्रंथ साहिब पन्ना ७३० पर सुशोभित है, इस चर्चा का ज़िक्र करते हुए, गुरु महाराज जी के विचार स्पष्ट करता है :-

जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ॥
जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिंञी वाईऐ॥
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ॥ १॥

....

नानक जीवतिआ मरि रहीऐ ऐसा जोगु कमाईऐ॥

वाजे बाझहु सिंझी वाजै तउ निरभउ पदु पाईऐ॥

(पन्ना ७३०)

२९. प्रश्न - नानक मत्ता का स्थान कहां पर है? मीठे रीठे की घटना का भी विवरण दो?

उत्तर - पिछले प्रश्न के उत्तर में जिस गोरख मत्ता स्थान का ज़िक्र किया गया है, उस का नाम ही बाद में नानक मत्ता प्रसिद्ध हुआ। यहां अब एक गुरुद्वारा है जहां हर वर्ष दीवाली को मेला लगता है। नानक मत्ते से करीब ४५ मील दूर पूर्व दिशा में मीठे रीठे का स्थान है। इस स्थान पर रीठों का एक वृक्ष है। जब मर्दाने ने कुछ खाने की मांग की तो गुरु जी ने मर्दाने को रीठे खाने को कहा। जब मर्दाने ने रीठे खाए तो वह बहुत ही मीठे थे। आज भी इस वृक्ष के रीठे मीठे हैं और नानक मत्ते जाने वाले प्रेमियों को प्रसाद के तौर पर दिए जाते हैं।

३०. प्रश्न - गुरु जी की बनारस, पटना, बुद्धगया और आसाम की यात्रा का विवरण दो?

उत्तर - अपनी पहली उदासी के दौरान गुरु जी हिन्दुओं के मशहूर तीर्थ-स्थल बनारस भी गए और वहां के पंडितों को अपनी बाणी से प्रभावित किया। आप की बाणी दखणी ओअंकार वहां पर ही रची बताई जाती है। इस बाणी द्वारा, जिस में ५४ पउड़ियां हैं, गुरु जी ने परमात्मा की सर्ब-व्यापकता और महिमा का व्याख्यान किया। बनारस से गुरु जी पटना गए और वहां सालस राय जौहरी को उपदेश देकर उसे वाहिगुरु के सिमरन के साथ जोड़ा। फिर आप 'गया' शहर आए जो बुद्ध धर्म का महान केंद्र है। यहां भी विद्वानों को सच्चे धर्म की राह के साथ जोड़ कर आप आसाम चले गए। गुवाहाटी शहर में जब एक जादूगरनी ने मर्दाने को भेडू बना दिया तो गुरु जी ने उस के जादू की ताकत को नकार कर उसको सीधे रास्ते डाला। आसाम में आप चिट्टागाउं भी गए और वहां के राजा को उपदेश देकर निहाल किया।

३१. प्रश्न - गुरु जी अपनी पहली उदासी दौरान कटक ज़िले में स्थित जगन्नाथ पुरी के मशहूर मंदिर के स्थान पर भी गए थे। इस स्थान पर आप द्वारा उच्चारण की गई विख्यात रचना के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - जब गुरु जी जगन्नाथ पुरी पहुंचे तो उन्होंने मंदिर में पंडितों को आरती करते हुए देख कर, उनको ब्रह्मांड में कुदरत की तरफ से हो रही सच्ची आरती के बारे में ज्ञान दिया। आप जी ने बड़े सुंदर शब्दों में इस आरती का व्याख्यान राग धनासरी में किया जो कि गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना ६६३ पर उपलब्ध है।

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती॥
धूपु मलआन लो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती॥ १॥
कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती॥
अनहता सबद वाजंत भेरी॥ १ ॥ रहाउ ॥

(पन्ना ६६३)

इस आरती के बारे में एक बड़ी महत्त्वपूर्ण बात यहां बतानी ज़रूरी है कि जब श्री रविंदर नाथ टैगोर को यह पूछा गया कि अगर सारी दुनिया एक देश बन जाए तो उस के लिए राष्ट्रीय गीत कौन-सा हो सकता है तो टैगोर ने बड़ी श्रद्धा से जवाब दिया कि ऐसे देश के लिए गुरु नानक देव जी द्वारा रची हुई आरती ही राष्ट्रीय गीत हो सकता है।

३२. प्रश्न - अपनी पहली उदासी के समय गुरु नानक देव जी ने एक कोहड़ी का उद्धार किया था? वह कोहड़ी कहां रहता था?

उत्तर - एक बहुत ही अमीर आदमी को जब कोहड़ का रोग हो गया तो उस के घर वालों ने उस को शहर के बाहर एक झौंपड़ी डाल दी। गुरु जी उस कोहड़ी के पास दिपालपुर शहर की यात्रा के दौरान गए तो उन्होंने अपनी कृपादृष्टि से उस के रोग को दूर किया। गुरु जी ने उस को नाम सिमरन का उपदेश दिया जिस से उसकी उदास और वीरान ज़िंदगी में रौशनी की किरण जाग उठी।

३३. प्रश्न - गुरु जी ने अपनी पहली उदासी दौरान पाक पटन के स्थान पर किस प्रसिद्ध महापुरुष फकीर से मुलाकात की?

उत्तर - गुरु जी ने पाक पटन के स्थान पर शेख ब्रह्म से दो बार मुलाकात की। यह बहुत ही प्रसिद्ध महापुरुष फकीर थे। गुरु जी ने उनके साथ ज्ञान गोष्टी की तो कई शंकाएं निवृत्त थीं। जिस स्थान पर गुरु जी ने शेख से चर्चा की थी, उस स्थान पर एक गुरुद्वारा नानकसर है और यहां पाकिस्तान बनने से पहले कार्तिक की पूर्णमाशी को मेला लगता था।

३४. प्रश्न - एक और प्रसिद्ध मुसलमान साईं बुड्ढन शाह जी थे। उनको गुरु नानक देव जी कहां पर मिले?

उत्तर - साईं बुड्ढन शाह जी एक बड़ी आयु के फकीर थे। वह कीरतपुर के स्थान पर एक पहाड़ी पर रहते थे और उनके पास शेर और बकरियां थीं जो इक्ट्ठे रहते थे। जब साईं जी ने गुरु जी को बताया कि वह बंदगी करने के लिए एकांत में रहते हैं तो गुरु जी ने उनको समझाया कि इन्सान का मन ही एकांत है और नाम सिमरन करने वाला इन्सान परमात्मा से जुड़ा रहता है। जिस जगह पर गुरु जी जाकर ठहरे थे वहां आजं कल एक गुरुद्वारा चरण-कमल के नाम से निर्मित किया गया है। इस स्थान से दो मील दूर एक पहाड़ी पर साईं बुड्ढन शाह जी की कब्र बनी हुई है।

३५. प्रश्न - गुरु नानक देव जी ने दुनी चंद को किस तरह सीधे रास्ते डाला?

उत्तर - दुनी चंद लाहौर शहर में रहता था और जब गुरु जी लाहौर आए तो उस ने ब्राह्मणों और संतों-महात्माओं को अपने पिता के श्राद्ध पर भोजन खाने के लिए बुलाया हुआ था। गुरु जी ने उस को समझाया कि किसी भी जीव की गति उस के मरने के बाद श्राद्ध करवाने से नहीं होती बल्कि उसके अपने जीवन में किए हुए कर्मों के आधार पर होती है। अच्छे कर्म करने वाले और परमात्मा को याद रखने वाले इन्सान सदा मुक्ति को प्राप्त होते हैं। दुनी चंद गुरु जी के वचनों से बहुत प्रभावित हुआ और उस ने अपने घर को एक धर्मशाला बना दिया।

३६. प्रश्न - गुरु नानक देव जी ने अपनी दूसरी उदासी के दौरान किन-किन स्थानों की यात्रा की?

उत्तर - गुरु जी की दूसरी उदासी दक्षिण दिशा की तरफ थी जिस दौरान (१५६७-१५७१) आप जी बीकानेर से होते हुए विंध्याचल और दक्षिणी जंगलों को पार करके रामेश्वर तक गए। रामेश्वर से समुद्र पार करके आप जी संगलाद्वीप (लंका) पहुंचे, जहां का राजा शिवनाभ था। वापसी पर आप जी मसूरपुर देश में बीजापुर के इलाके से होते हुए और जंगलों-पहाड़ों में से गुजरते हुए समुद्र के पश्चिमी घाट के साथ-साथ बहावलपुर तक आए। आप ने विंध्याचल के जंगलों में रहने वाले एक राक्षस, जिसका नाम कौडा था, का उद्धार किया। राजा शिवनाभ को भी सत्संग करने का उपदेश दिया जिस

अनुसार उस ने वहां एक धर्मशाला बनवाई। कजली वन के जंगल में स्थित योगियों के आश्रम में भरथरी योगी से मुलाकात की और उस को बताया कि परमात्मा को पाने के लिए शरीर को कष्ट देने की कोई ज़रूरत नहीं। नाम सिमरन और सिफत-सलाह करके ही गृहस्थ में रहते हुए परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है। गृहस्थ में रहते हुए परमात्मा के साथ जुड़े रहना ही राजयोग है। जब भरथरी जी ने मदिरा पीकर समाधि लगाने की बात की तो गुरु जी ने समझाया कि न मदिरा पीने की ज़रूरत है और न ही समाधि लगाने की। परमात्मा का गुणगान करने वाला उस के रंग में ही मस्त रहता है। उस का प्रेम-रस ही उस की मदिरा है। गुरु जी का उच्चारण किया हुआ शब्द रागु आसा में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना ३६० पर इस तरह सुशोभित हैः-

गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ॥
भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिउ चुआईऐ॥ १॥
बाबा मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रंग रचि रहिआ॥
अहिनिसि बनी प्रेम लिवलागी सबदु अनाहद गहिआ॥ १॥ रहाउ॥

३७. प्रश्न - कौडा राक्षस कौन था और गुरु जी ने किस तरह उसका उद्धार किया?

उत्तर - कौडा जंगल में रहने वाला एक आदम खोर राक्षस था। जब गुरु जी विंध्याचल के नीचे जंगलों में से जा रहे थे तो कौडे ने मर्दाने को पकड़ लिया। वह उस को तेल में तल कर खाना चाहता था परन्तु गुरु जी ने उस की कड़ाही को ठंडा कर दिया। कौडे ने गुरु जी की आत्मिक शक्ति को पहचान कर उनसे क्षमा मांगी और आगे से अच्छा जीवन व्यतीत करने का वायदा किया। गुरु जी ने उसको नाम सिमरन का उपदेश देकर अच्छा इन्सान बना दिया।

३८. प्रश्न - क्या गुरु नानक साहिब लंका भी गए थे?

उत्तर - गुरु जी के लंका जाने के बारे में विद्वानों में मतभेद हैं। भाई कान्ह सिंघ बताते हैं कि लंका के दौरे का ज़िक्र सबसे पहले "हकीकत राह मुकाम राजे शिवनाभ की" में आया जिस का कर्त्ता भाई पैड़ा था। भाई संतोख सिंघ अनुसार भाई पैड़ा को गुरु अर्जुन देव जी ने लंका भेजा था ताकि वह वहां से गुरु नानक द्वारा रचित 'प्रान संगली' लाएं। "हकीकत" के बाद लंका के दौरे की बात जन्म साखियों में आई। समय के साथ लंका जाने वाली साखी

का विस्तार इतना बढ़ गया कि इस में कई करामातों का ज़िक्र भी होने लगा। कई लेखकों ने करामातों और अद्भुत कहानियों को देखते हुए लंका जाने के बारे में शंका जाहिर की। डब्ल्यू. एच. मैक्लोड ने निर्णय किया कि गुरु जी लंका नहीं गए, परन्तु अब तक हुई खोज के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मैक्लोड का कथन ठीक नहीं। वैसे भी उस में करामातों और अद्भुत कहानियों को बढ़ा-चढ़ा कर बताया गया है परन्तु गुरु जी लंका गए थे। यह बात वहां से मिले सबूतों और वहां के लिखारियों के लेखों से भी साबित होती है। (मिसाल के तौर पर डा. सेवारतन द्वारा लिखी पुस्तक 'ऐन आऊटलाईन हिस्टरी एण्ड प्रिंसीपल्ज़ ऑफ हिन्दूज़' जो कोलंबो में १९६४ में छपी थी)।

३९. प्रश्न - गुरु नानक देव जी अपनी तीसरी उदासी के समय किस दिशा में गए और उन्होंने कौन-कौन से स्थानों की यात्रा की?

उत्तर - गुरु नानक देव जी अपनी इस उदासी उपरांत (१५७३ से १५७५) उत्तर दिशा में गए। आप ने कशमीर में मटन साहिब के स्थान सुमेर पर्वत, नेपाल, सिक्कम और भूटान से होते हुए तिब्बत तक की यात्रा की। आप जम्मू वापस आकर जसरोटा, माधोपुर, सुजानपुर और पठानकोट से सुलतानपुर अपनी बहन बेबे नानकी के पास आकर रुके। आप जी के सुलतानपुर ठहरने के दौरान आप की बहन और जीजा जी दोनों गुजर गए। उनका अन्तिम संस्कार करके आप सम्वत् १५७५ में करतारपुर वापस चले गए।

४०. प्रश्न - गुरु जी ने अपनी चौथी उदासी के समय कौन-कौन से स्थानों की यात्रा की और इस दौरान घटित हुई खास घटनाओं का ज़िक्र करो?

उत्तर - गुरु जी की चौथी उदासी सम्वत् १५७४-१५७९ तक थी जिस दौरान आप ने पश्चिम के कुछ इलाकों की यात्रा की। आप जी रोहतास गए जहां कान फटे योगियों का डेरा था। आप ने उनको निरंकार के नाम से बिरती जोड़ कर सच्चे योगी बनने का उपदेश दिया। चौथी उदासी के दौरान गुरु जी की सबसे महत्त्वपूर्ण यात्रा मक्का की थी जहां जाकर आप काबे की तरफ पैर पसार कर सो गए, जब हाजियों ने उनको गुस्से से घसीट कर दूसरी तरफ किया तो एक अजीब कौतुक हुआ, जिस तरफ भी वह गुरु जी के पैर करते थे उनको उसी तरफ ही मक्का नज़र आता था। भाई गुरदास जी ने इस यात्रा का ज़िक्र अपनी पहली वार की ३२वीं पउड़ी में इस प्रकार किया है :-

बाबा फिरि मक्के गइआ नील बसत्र धारे बनवारी।
आसा हथि किताब कछि कूजा बांग मुसल्ला धारी।

... ...

टंगों पकड़ घसीटिआ फिरिआ मक्का कला दिखारी।
होइ हैरानु करेनि जुहारी ॥ ३२ ॥

मक्के से चल कर आप मदीना होते हुए बगदाद पहुंचे, जहां आप ने पीर बहलोल से चर्चा करके उसको उपदेश दिया। गुरु जी ईरान के शहर बगदाद से चल कर तहरान, तुर्किस्तान, ताशकंद, समरकंद और बुखारा से होते हुए अफगानिस्तान के शहर काबुल पहुंचे। काबुल से गुरु जी खैबर दर्रे से होते हुए पेशावर आए और फिर नौशहरे के रास्ते हसन अबदाल पहुंचे। हसन अबदाल वाले स्थान पर हुई 'वली कंधारी' वाली घटना बहुत प्रसिद्ध है।

४१. प्रश्न - वली कंधारी कौन था और उस को गुरु जी ने किस तरह सीधे रास्ते डाला?

उत्तर - वली कंधारी एक अहंकारी फकीर था जिसने जप-तप करके सिद्धियां प्राप्त की हुई थीं। जब गुरु जी ने उसके पहाड़ पर बने हुए डेरे के नीचे अपना डेरा लगाया तो उसको यह बात अच्छी नहीं लगी। एक दिन मर्दाने को प्यास लगी तो गुरु जी ने उसको पानी लेने के लिए वली कंधारी के पास भेजा। वली कंधारी के डेरे के पास ही पानी का चश्मा था। पर जब मर्दाना पानी पीने के लिए वहां पहुंचा तो वली कंधारी ने उसको पानी देने से इन्कार कर दिया। मर्दाने के प्यासे ही वापस आ जाने पर गुरु जी ने उसकी प्यास बुझाने के लिए एक पत्थर हटा कर नया चश्मा शुरू कर दिया। वली कंधारी को बहुत क्रोध आया तथा उसने चट्टान का एक टुकड़ा गुरु जी तरफ फैंक दिया। गुरु जी ने वह पहाड़ी का टुकड़ा अपने पंजे से रोक लिया जिससे वली कंधारी को उनकी शक्ति के बारे ज्ञान हो गया। वह पहाड़ी से नीचे उतर कर आया और गुरु जी से माफी मांगी और आगे से नम्रता के रास्ते पर चलने लग पड़ा।

गुरु जी के लगे हुए हाथ के पंजे वाला पत्थर अभी तक मौजूद है और उस स्थान पर गुः पंजा साहिब इस घटना की यादगार है। यह गुरुद्वारा हसन अबदाल के स्थान पर अब पाकिस्तान में है परन्तु अभी भी हर साल सिक्ख

यात्री भारत से तथा अन्य देशों से यहां दर्शनों के लिए आते हैं।

४२. प्रश्न - अचल का स्थान कहां पर है और उस स्थान पर गुरु जी के जीवन की कौन-सी घटना घटी?

उत्तर - अचल का स्थान बटाला शहर के पास है। उन दिनों में शिवरात्री वाले दिन हर वर्ष इस स्थान पर एक मेला लगता था जिस में सिद्धों, योगियों का बहुत बड़ा इक्ट्ठ होता था। अपनी चारों उदासियां समाप्त होने के बाद गुरु जी मेले वाले स्थान पर गए और वहां आए योगियों के साथ वार्तालाप की। भाई गुरदास जी की पहली वार से हमें इस बारे में पूरी तरह से पता चलता है। गुरु जी ने आप भी अपनी बाणी 'सिध गोसटि' में 'रागु रामकली' में इस का वर्णन किया है।

४३. प्रश्न - गुरु नानक देव जी ने 'सिध गोसटि' करके सिद्धों को क्या उपदेश दिया?

उत्तर - अचल के स्थान पर सिध गोसटि करके गुरु जी ने सिद्धों को गृहस्थ में रह कर सिद्धि प्राप्त करने का संदेश दिया। उन्होंने समझाया कि जैसे पानी में उगा हुआ कमल का फूल और पानी में तैरती हुई मुरगाबी के पंख पानी से ऊपर ही रहते हैं, ऐसे ही संसार के मनुष्य संसार में विचरते हुए भी उस प्रभु के साथ जुड़ सकते हैं। गुरु साहिब के नीचे लिखे शब्द इस बात का दिशा-निर्देश करते हैं :-

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे॥
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे॥
रहहि इकांति एको मनि वसिआ आसा माहि निरासो॥
अगमु अगोचरु देखि दिखाए नानकु ता का दासो॥ ५॥

(पन्ना १३८)

४४. प्रश्न - गुरु नानक देव जी द्वारा बटाला के बाद मुलतान में किये हुए दौरे के बारे में जानकारी दें?

उत्तर - भाई गुरदास जी की पहली वार से हमें पता चलता है कि बटाले से चल कर गुरु जी मुलतान गये। मुलतान पीरों का शहर है वहां इतने पीर रहते थे कि उनको गुरु नानक देव जी का वहां आना इस लिये अच्छा नहीं लगता था कि कहीं वह उन के मुरीदों को अपने मुरीद न बना लें। वहां के प्रमुख पीर थे पीर बहावल हक्क। उन्होंने गुरु जी को दूध का भरा हुआ एक

कटोरा भेजा जिस का तात्पर्य था कि भरे हुए कटोरे की तरह मुलतान में भी उन के लिये कोई स्थान नहीं है। गुरु जी ने एक चमेली का फूल दूध के कटोरे में रख कर वापस भेज दिया। इस तरह गुरु जी ने समझाया कि वह दूध को हिलाए बिना अपना स्थान एक फूल की सुगंधि की तरह बना लेंगे। जब पीरों को यह बात समझ आ गई तो उन्होंने गुरु जी से चर्चा की और बहुत प्रभावित हुए।

४५. प्रश्न - गुरु जी के अपनी यात्राओं के बाद बिताए हुए समय की जानकारी दें?

उत्तर - गुरु जी ने अपनी ज़िन्दगी के अन्तिम १५ वर्ष गृहस्थ जीवन में करतारपुर में आकर बिताए। आप जी ने यहां खेतीबाड़ी करके मेहनत की और धर्मशाला स्थापित करके लोगों को नाम जपाया तथा कीर्तन से जोड़ा। आप की खेती में से जो अनाज पैदा होता था, उस अनाज को आप लंगर में संगतों के साथ बांट कर खाते थे। आप जी ने इस समय के दौरान बाणी की रचना की, जिस में से 'बारह माहा' 'तुखारी' की रचना विशेष तौर पर प्रसिद्ध है।

४६. प्रश्न - गुरु नानक देव जी के मुख्य उपदेश क्या थे?

उत्तर - आप जी ने मानवीय भाईचारे का संदेश दिया और सारे मनुष्यों को झूठे कर्म-कांडों और भ्रमों को त्याग कर परमात्मा के नाम सिमरन के साथ जुड़ने को कहा। आप ने जात-पात और मूर्ति पूजन का खंडन किया। आप ने नेक कमाई, बांट कर खाने, शुभ कर्म करने और सेवकाई में जीवन बिताने का आदेश दिया।

४७. प्रश्न - 'नाम जपने' से क्या भाव था? गुरु जी ने इस की महत्ता के बारे में क्या वचन किए?

उत्तर - नाम जपने से गुरु जी का भाव था परमात्मा के साथ दिल से सम्बन्ध कायम करना। सच्चे दिल से मन को एकाग्र करके उस के नाम का जाप ही नाम जपना है। आप जी का कथन है :-

भरीऐ मति पापा के संगि॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि॥

(जपु जी साहिब)

"नाम जपने से मन की मैल दूर हो जाती है और अहं समाप्त हो जाता है। नाम जपने वाला इन्सान वाहिगुरु जी के हुक्म में रहना सीख जाता है।

मनुष्य के अंदर शांति, धैर्य जैसे गुण आ जाते हैं। जैसे शरीर के कपड़े की मैल धोने के लिए पानी और साबुन की ज़रूरत पड़ती है, उसी तरह मन की मैल नाम से धोई जा सकती है।'

४८. प्रश्न - गुरु नानक देव जी ने प्रभु की प्राप्ति के लिए गुरु की महानता के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर - गुरु जी ने प्रभु की प्राप्ति के लिए गुरु की बहुत महानता बताई है। गुरु की मिहर बिना प्रभु नहीं मिलता। गुरु प्रभु मिलाप में सहायक होकर उस को मुक्ति तक पहुंचाता है। गुरबाणी में गुरु की महिमा बाद में एक प्रश्न के उत्तर में विस्तार से समझाई गई है।

४९. प्रश्न - क्या यह कहा जा सकता है कि गुरु नानक देव जी एक क्रांतिकारी समाज सुधारक भी थे?

उत्तर - गुरु जी ने प्रचलित हिन्दू और मुस्लिम रीतियों का खंडन करके एक क्रांतिकारी की भूमिका निभाई। आप ने ३४ व्रत, योग, तीर्थ यात्रा तथा अन्य कई कर्म-कांडों की आलोचना की। आप ने कहा कि भगवान को पाने का इनमें से कोई भी तरीका ठीक नहीं, बल्कि नाम सिमरन उचित है। एक क्रांतिकारी ही समय के हाकम को ललकार सकता था। बाबर के ज़ुल्मों के विरुद्ध आवाज़ उठा कर आप ने परमात्मा से भी रोष प्रकट करते हुए कहा कि उसको बेबस लोगों को मार पड़ती देख कर तरस क्यों नहीं आया। औरत की समाज में बुरी हालत के विरुद्ध आवाज़ उठा कर आप ने उस का सत्कार करने को कहा :-

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान॥

(आसा दी वार)

इसलिए हम कह सकते हैं कि गुरु जी एक क्रांतिकारी समाज सुधारक थे।

५०. प्रश्न - क्या गुरु जी भक्ति लहर के दूसरे प्रचारकों से अलग थे?

उत्तर - वैसे तो गुरु जी ने भक्ति लहर के दूसरे प्रचारकों; जैसे कि कबीर, रामानंद, नामदेव आदि की तरह जात-पात और मूर्ति पूजा का खंडन करके एक निरंकार का उपदेश दिया, परन्तु गुरु जी उन दूसरे प्रचारकों से कई बातों में अलग थे। मिसाल के तौर पर गुरु जी उनकी तरह अवतारवाद में विश्वास नहीं करते थे। जहां अन्य भक्ति लहर के प्रचारकों ने गुरु की

महिमा गाई, वहीं गुरु जी ने ऐसे योग्य व्यक्ति को अपनी गद्दी देकर एक धर्म की नींव रखी। गुरु जी ने गृहस्थ जीवन पर भी ज़ोर दिया। वह अन्य किसी भी प्रचारक ने नहीं दिया। गुरु जी ने नाम-मार्ग को कर्म-मार्ग से ज़्यादा महत्ता दी। आप जी ने इन्सान को हंसते-खेलते जीवन बिताते हुए मुक्ति की युक्ति बताई। आप जी ने लंबी यात्राएं करके अपने अनोखे प्रचार ढंग से सब का मन मोह लिया। इस तरह आप ने भक्ति लहर को थोड़े समय के लिए नहीं बल्कि उस को अलग धर्म का रूप देकर चिरंजीव बना दिया।

५१. प्रश्न - गुरु जी की वह कौन-सी बाणी है जिससे गुरु ग्रंथ साहिब जी का आरम्भ होता है?

उत्तर - गुरु जी की इस बाणी का नाम है 'जपु जी साहिब' जिस के पहले शब्दों में सारी गुरबाणी का सारांश मूल मंत्र के रूप में दिया गया है।

५२. प्रश्न - मूल मंत्र से क्या अभिप्राय है और यह जपु जी साहिब में कहां से शुरू होता है और कहां पर समाप्त होता है?

उत्तर - मूल मंत्र से अभिप्राय है शुरू का उपदेश, जिस से सारी रचना शुरू होती हो। गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी मूल मंत्र से शुरू होती है। यह मूल मंत्र जपु जी साहिब की शुरू की पंक्तियों में अंकित है। यह १ ओंकार से शुरू होता है और गुरप्रसादि तक चलता है। इन शब्दों में परमात्मा की स्तुति और गुण बयान किए गए हैं। मूल मंत्र की महत्ता इस बात से साबित हो जाती है कि पूर्ण मूल मंत्र की लिखित गुरु ग्रंथ साहिब में ३३ बार आती है। १ओंकार सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि के संक्षेप रूप में मूल मंत्र का ज़िक्र ८ बार आता है। इस से भी संक्षेप रूप अर्थात १ओंकार सतिगुर प्रसादि की लिखित सबसे ज़्यादा ५२३ बार हुई मिलती है और पांचवें रूप में अति संक्षेप रूप वाली शक्ल में मंगल सिर्फ १ओंकार ही आया है जो एक बार ही आया हुआ है।

५३. प्रश्न - जपु जी साहिब में गुरु नानक देव जी ने परमात्मा के स्वरूप का वर्णन किस तरह से किया है?

उत्तर - गुरु नानक देव जी ने मूल मंत्र में परमात्मा के गुणों का वर्णन करते हुए बताया है कि परमात्मा एक है, अर्थात वह हर धर्म और कौम के लिए अलग-अलग नहीं, वह सारी सृष्टि को पैदा करने वाला है, वह किसी

से भी डरता नहीं और किसी से वैर भी नहीं रखता, वह अपने आप अस्तित्व में आने वाला है और कभी भी मरता नहीं और न ही योनि-चक्र में पड़ता है। उस का नाम सच्चा है और वह युगों से सच्चा रहा है, आज भी सत्य है और आने वाले समय में भी सत्य ही रहेगा। उस को गुरु की कृपा से ही पाया जा सकता है।

५४. प्रश्न - जपु जी साहिब में कितने सलोक और कितनी पउड़ियां हैं?

उत्तर - जपु जी साहिब में २ सलोक हैं और ३८ पउड़ियां हैं। पहला सलोक ***'आदि सचु जुगादि सचु॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु॥'*** थोड़ी सी मात्राओं के अन्तर से सुखमनी साहिब की १०वीं असटपदी से पहले भी आता है।

५५. प्रश्न - जपु जी साहिब की पउड़ियों की रूपरेखा और सार के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - जपु जी साहिब की पहली पउड़ी में गुरु महाराज जी बताते हैं कि अकाल पुरूष की पहचान सोच सोचने से, मौन धारण करने से और चतुराई तथा विवेक से नहीं होती। उस की पहचान हुक्म और रज़ा मानने से ही होती है। दूसरी पउड़ी में उस के हुक्म की महिमा गाते हुए गुरु महाराज बताते हैं कि हर कोई उस के हुक्म में ही चल रहा है। तीसरी और चौथी पउड़ी में उस के यश को गाने के कई तरीकों का वर्णन है। वह दाता जिस से हम सब कामना करते हैं, अपनी मिहर से ही हमें मुक्त कर सकता है। पांचवीं पउड़ी में वाहिगुरु के गुणों का बयान करते हुए अगली दो पउड़ियों में यह बताया गया है कि वह सारे जीव जंतुओं का मालिक है और उस को भूलना नहीं चाहिए। वह चाहे तो एक निर्गुण को विद्वान बना सकता है तथा गुणों के मालिक को और भी कई गुण दे सकता है। पउड़ी ८ से लेकर ११ तक उस का नाम सुनने के गुणों को बयान किया गया है और पउड़ी १२ से १५ तक गुरु के शब्द और उपदेश मानने से जो वरदान हमें हासिल होते हैं उनका बयान है। जो गुरु का सिक्ख उस अकाल पुरुष का ध्यान करता है, उसकी इज्ज़त हर जगह पर होती है। पउड़ी १६ में ऐसे ही विचार हैं जिस से गुरु जी ऐसे गुरु के सिक्खों को हर जगह प्रमुख और सम्माननीय मानते हैं। पउड़ी १७ से १९ तक असंख की पउड़ी है जिन में गुरु जी लोगों के भ्रमों का, झूठे जप-तप का, झूठ और निंदा में पड़े हुए लोगों का ज़िक्र

करते हुए कहते हैं कि मैं उस कुदरत का बयान नहीं कर सकता, मैं तो उस पर से एक बार भी कुर्बान होने के योग्य नहीं हू और उस मालिक के आगे विनती करते हुए कहते हैं कि जो तुम चाहो वही अच्छा है क्योंकि तू सदा अमर रहने वाला है और किसी भी आकार से रहित है।

२०वीं पउड़ी में गुरु जी बताते हैं कि अगर हमारी बुद्धि मैली हो जाए तो उस को नाम के रंग से ही धोया जा सकता है। सृष्टि की रचना किस वक्त हुई इस बारे कोई कुछ नहीं बता सकता। जिस का ज़िक्र करते हुए २१वीं पउड़ी में गुरु जी फुरमाते हैं कि परमात्मा स्वयं जानता है कि उस ने संसार को कैसे रचा है। अगली पउड़ी में वाहिगुरु की रचना का ज़िक्र करते हुए बताते हैं कि अनेकों पाताल और अनेकों आकाश जो उसने रचे हैं उनका अंदाजा लगाना हमारी सामर्थ्या से बाहर है। पउड़ी २३वीं और २४वीं में वह इस बात को स्पष्ट करते हैं कि अकाल पुरुष की सम्मानता की कोई सीमा नहीं और उस का अन्त कोई नहीं पा सकता। उसकी भेंटें सौगातें और उस की कृपा से मुक्ति की प्राप्ति का ज़िक्र २५वीं पउड़ी में भी है। २६वीं पउड़ी में अपने विचार को आगे ले जाते हुए आप कथन करते हैं कि वेद और कुरान भी उस की महिमा गाते हैं। उस की प्रशंसा करने वालों में ब्रह्मा, इन्द्र, शिवजी और महात्मा बुद्ध जैसे देवता भी हैं और कई दैत्य भी हैं, लेकिन उस की प्रशंसा बयान नहीं की जा सकती। अगर कोई यह कहे कि भगवान कितना बड़ा है और इस का बयान हो सकता है तो उस को मूर्खों का मूर्ख जानना चाहिए। २७वीं पउड़ी में परमात्मा के द्वार का ज़िक्र करते हुए अगली चार पउड़ियों में गुरु जी हमें गुणों के बारे में बताते हैं, जिस से हम वाहिगुरु के निकट होकर उस को नमस्कार कर सकते हैं जो पवित्र है, शुरू से है और सदा ही एक परमात्मा रहता है। इन गुणों में मेहनत, इज्ज़त की कमाई, विषय-विकारों से दूरी आदि शामिल हैं। गुरु जी कहते हैं कि मन को जीत कर ही संसार को जीता जा सकता है। रिद्धियां सिद्धियां भगवान के मिलाप की तरफ नहीं ले जातीं बल्कि ज्ञान, दया और धैर्य उस के पास ले जाते हैं। ब्रह्मा, विष्णु और शिव भी उसके हुक्म अनुसार चलते हैं।

३१वीं पउड़ी में गुरु जी फुरमाते हैं कि वाहिगुरु के हाथ में सब खज़ाने हैं, वही सब का सृजण करता है और वही सब को पालता है। अगली पउड़ी में आप कहते हैं कि यदि हमारी लाखों जुबानें भी होतीं तो एक-एक जुबान से लाख बार उस का नाम सिमरन करना चाहिए। ३३वीं पउड़ी के अनुसार

हम में अपनी कोई भी ताकत नहीं। हमें तो मांगना भी नहीं आता और दे तो हम कुछ सकते ही नहीं। जीवन और मौत हमारे वश में ही नहीं, हम अपनी ताकत से अच्छा या बुरा कुछ नहीं कर सकते। यह तो सब कुछ वाहिगुरु के हाथ में है। आप अगली पउड़ी में फुरमाते हैं कि धरती, हवा, पानी सब कुछ उसने बनाया है। धरती धर्म कमाने की जगह बनाई है, अनेकों जीव जो यहां विचरते हैं, उनका निर्णय उस के सच्चे दरबार में उनके कर्मों के अनुसार होता है। उस के सच्चे दरबार का ज़िक्र करते हुए गुरु जी कथन करते हैं कि वहां सिर्फ पूरी कमाई वाले गुरमुख ही शोभा पाते हैं। जीव के स्थायित्व व अच्छाई का पता वहां जाकर ही लगता है। अगली दो पउड़ियों में ज्ञान खंड का ज़िक्र किया गया है। यह खंड है जहां कई भक्त और मुनि हैं। अनेकों देवता रिद्धियां-सिद्धियां प्राप्त कर चुके योगी और महात्मा ज्ञान खंड में हैं। ३६वीं पउड़ी में कर्म खंड का ज़िक्र करते हुए आप जी फुरमाते हैं कि यहां कई योद्धा और महाबली उसकी कृपादृष्टि से उस की प्रशंसा में जुटे रहते हैं। सचखंड में निरंकार आप बसता है और उस का बयान करना लोहे की तरह कठोर और सख्त है। आखिरी पउड़ी में वह हमें अपनी ज़िंदगी, यति धैर्य और ज्ञान से बिताने का उपदेश देते हैं।

५६. प्रश्न - गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल आप की अलग-अलग रागों में बाणी का वर्णन करो?

उत्तर - जपु जी साहिब की बाणी राग में नहीं है। आप की रागों में आई बाणी का वर्णन इस प्रकार है:-

सिरी रागु-	३३ शब्द और १७ असटपदियां।
माझ रागु-	एक असटपदी, एक वार और २७ पउड़ियां।
रागु गउड़ी -	१० शब्द, १८ असटपदियां, २ छंद।
आसा -	४० शब्द, १ वार, २९ सलोक और २४ पउड़ियां, २२ असटपदियां, एक पट्टी (३५ पउड़ियां)।
गूजरी -	२ शब्द, ५ असटपदियां।
वडहंसु -	३ शब्द, ५ अलाहणीयां।
सोरठि -	१२ शब्द, ४ असटपदियां।
धनासरी -	९ शब्द, २ असटपदियां, ३ छंद।

तिलंग - ५ शब्द, २ असटपदियां।

सूही - ९ शब्द, ५ असटपदियां, १ कुचजी, १ सुचजी, ५ छंत।

बिलावलु - ४ शब्द, २ असटपदियां, २ छंत।

रामकली - ११ शब्द, ९ असटपदियां, दखणी ओंकार, ५४ पउड़ियां, सिध गोसटि, १३ पउड़ियां,

मारू - १२ शब्द, ९ असटपदियां, ३ काफियां, २२ सोलहे।

तुखारी - बारह माहा, १६ पउड़ियां, ५ शब्द।

भैरउ - ८ शब्द, १ असटपदी।

बसंत - ११ शब्द, ८ असटपदियां।

सारग- ३ शब्द, २ असटपदियां।

मलार - ९ शब्द, १ वार (२८ पउड़ियां)।

प्रभाती - १७ शब्द, ७ असटपदियां, ४ सलोकु सहसक्रिती।

सलोकु वारां और वधीक -३३ सलोकु।

५७. प्रश्न - गुरु ग्रंथ साहिब में आए रागों में से वे कौन से राग हैं जिन में से गुरु नानक देव जी की कोई रचना नहीं है?

उत्तर - निम्नलिखित रागों में गुरु नानक देव जी की कोई भी रचना नहीं हैः- देवगंधारी, बिहागड़ा, जैतसरी, टोडी, बैराड़ी, गोंड, नट नाराइण, माली गउड़ा, केदारा, कानड़ा, कलिआन और जैजावंती।

५८. प्रश्न - गुरु नानक देव जी की बाणी की कुछ ऐसी पंक्तियां लिखें जो इन्सान को जीने का सही रास्ता बताती हैं?

उत्तर - गुरु जी की सारी बाणी धर्म का रास्ता बताती है। जीवन का उद्देश्य जो हमारी आत्मा को परम आत्मा से मेल करने में सहायक होता है, उनकी बाणी में उभर कर सामने आया है। मिसाल के तौर पर सेवा की महानता आप ऐसे बयान करते हैंः

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ॥ ता दरगह बैसणु पाईऐ॥ *(पन्ना २६)*

जो आदमी पढ़-लिख कर मोह, लोभ व अहंकार न त्यागे, उस के बारे में आप कहते हैंः-

पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहंकारा॥ (पन्ना १४०)

विद्या के मनोरथ बारे आप बताते हैं:

विदिआ वीचारी तां परउपकारी (पन्ना ३५६)

परिश्रम और नेक कमाई करने का सुनहरी नियम आप इस तरह प्रकट करते हैं:-

घालि खाइ किछु हथहु देइ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ॥ १॥ (पन्ना १२४५)

पराधिकार मारने के विरुद्ध आप दोनों हिन्दुओं और मुसलमानों को ऐसे प्रताड़ित करते हैं:

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ॥
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ॥ (पन्ना १४१)

इस तरह गुरु जी की सारी बाणी एक आध्यात्मिक जीवन जीने का संदेश देती है। उस का मन पर असर होता है और आत्मा को शांति प्राप्त होती है।

५९. प्रश्न - गुरु नानक देव जी की काव्य शैली बारे संक्षेप में बताओ?

उत्तर - गुरु जी की बाणी का विषय-वस्तु बहुत विशाल है। जहां आप ने आध्यात्मिक पक्ष को उभारा है वहां आप ने समकालीन राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक हालत को बयान किया है। स्वयं को शायर कहने वाले गुरु नानक देव जी (देखो पट्टी की अंतिम पंक्ति) निस्संदेह उन महान कवियों में से हैं जिन की कलम हर तरह के विचार बड़ी आसानी से प्रकट कर सकती थी। आप की तरफ से इस्तेमाल किए काव्य बिम्बों और अलंकारों की रचना इतनी सुंदर है कि गूढ़, रहस्यमयी और आध्यात्मिक विचार भी सहज ही समझ आ जाते हैं। मिसाल के तौर पर नीचे लिखी पंक्तियों में

जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे॥
दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे॥ ५॥ (पन्ना १५६)

समुद्र की, डूबते पत्थरों की और उनके तैर जाने की उदाहरणें देकर कितना गूढ़ विचार आसान बना दिया है। जीवन के अलग-अलग पक्षों में से, कुदरत और आम ज़िंदगी में से आप ने कई काव्य बिंब लिए हैं। इन्सान को स्त्री रूप और परमात्मा को पति रूप में पेश करके आप ने इन्सान को प्रभु के प्रति उसके फर्ज और प्रेम से जानकारी करवाई है। गुरु जी का अलग-अलग छंतों का इस्तेमाल और उनमें रिद्म की विलक्षणता उनकी काव्य शैली को बहुत प्रभावशाली बनाती है। शब्दों का सुंदर चुनाव और

अनुप्रास का गुण मन को मोह लेने वाली एक संगीतमय लहर पैदा करते हैं जैसे कि नीचे लिखीं सतरों में शब्दों और अक्षरों की पुनरावृत्ति :-

जा तूं वडा सभि वडिआईआ चंगै चंगा होई॥
जा तूं सचा ता सभु को सचा कूड़ा कोइि न कोई॥ (पन्ना १४५)

वैसे तो गुरु जी ने अपनी बाणी में फ़ारसी और सहसकृति भाषा भी इस्तेमाल की है, परन्तु पंजाबी भाषा का पहली बार इतना सुंदर इस्तेमाल करके आप ने इस भाषा को एक उच्च साहित्यिक दर्जा प्रदान किया है। जपु जी साहिब जैसी गहरी दार्शनिक बाणी को केंद्रीय पंजाबी में लिख कर आप ने इस भाषा को अमीर और समर्थ कर दिया। गुरु जी के बाद लिखे जाने वाले पंजाबी साहित्य पर आप की गहरी छाप है।

६०. प्रश्न - गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज कुछ ऐसी पंक्तियां बताओ जिन्होंने गुरु नानक देव जी की महानता को दर्शाया है?

उत्तर - गुरु नानक देव जी के बाद सभी गुरुओं द्वारा अपनी बाणी 'नानक' के नाम के नीचे लिखना उनकी गुरु जी के प्रति श्रद्धा, प्यार और सम्मान को प्रकट करता है। इस तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बहुत सारी बाणी आप की महानता का प्रतीक है। गुरु अर्जुन देव जी ने आप की इस महानता के बढ़ रहे प्रताप को इस तरह से बयान किया है:-

सुणी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बणि आई॥
प्रगट भई सगले जुग अंतरि गुर नानक की वडिआई॥ (पन्ना ६११)

भट्टों ने अपने स्वय्ये लिखते हुए गुरु जी को राज योग पाने की पदवी दी है। भट्ट कल्ह लिखते हैं:

कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ॥ (पन्ना १३८९)



गुरु अंगद देव जी-- (जीवन और रचना)

६१. प्रश्न - गुरु अंगद देव जी का जन्म कहां हुआ और उनके माता-पिता कौन थे?

उत्तर - गुरु अंगद देव जी का जन्म ३१ मार्च, १५०४ ई. को गांव मत्ते नांगे की सराय में हुआ। इस जगह का नाम अब नांगे की सराय है और यह स्थान मुक्तसर से १० मील पर कोट कपूरे की सड़क पर है। इस स्थान पर अब एक सुंदर गुरुद्वारा स्थित है। गुरु जी के पिता का नाम फेरूमल त्रेहन और माता का नाम दया कौर जी था।

६२. प्रश्न - गुरु अंगद देव जी के विवाह और संतान के बारे में कुछ जानकारी दो?

उत्तर - गुरु अंगद देव जी की शादी सम्वत् १५६७ में खडूर निवासी श्री देवी चंद खत्री की सुपुत्री बीबी खीवी जी से हुई। आप जी के दो सुपुत्र दातू जी व दासू जी तथा दो सुपुत्रियां बीबी अमरो जी व बीबी अनोखी जी थे।

६३. प्रश्न - गुरु अंगद देव जी का मिलाप गुरु नानक देव जी से कब और किस तरह से हुआ?

उत्तर - गुरु अंगद देव जी, जिनका पहला नाम भाई लहणा जी था, वैष्णो देवी के पुजारी थे और हर वर्ष संगत के साथ देवी के दर्शन करने हेतु जाया करते थे। एक बार देवी के दर्शनों को जाते हुए रास्ते में करतारपुर रुके तो गुरु नानक देव जी के दर्शन करके बहुत प्रभावित हुए। यह घटना सम्वत् १५८० की है और उस के बाद भाई लहणा जी गुरु घर से इस तरह जुड़ गए कि उन्होंने अपना सारा जीवन फिर गुरु घर की सेवा में ही बिता दिया, भाई लहणा जी की सेवा ने गुरु नानक देव जी को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने गुरुगद्दी भाई लहणा जी को योग्य मान कर दे दी।

६४. प्रश्न - गुरु अंगद देव जी की जांच करते हुए गुरुगद्दी मिलने का ज़िक्र गुरु ग्रंथ साहिब में कहां पर आता है?

उत्तर - सत्ते और बलवंड द्वारा लिखी हुई रामकली की वार में नीचे लिखी पंक्तियां इस बात की पुष्टि करती हैं :

सिखां पुत्रां घोखि कै सभ उमति वेखहु जि किउनु॥
जां सुधोसु तां लहणा टिकिओनु॥ ४॥ (पन्ना ९६७)

६५. प्रश्न - गुरु अंगद देव जी खडूर साहिब कब और किस तरह आए?

उत्तर - बाबर के हमले के समय गांव मत्ते नांगे की सराय उजड़ने के बाद गुरु अंगद देव जी अपने ससुराल घर खडूर साहिब आ गए। फिर जब गुरु अंगद देव जी का मेल गुरु नानक देव जी के साथ हुआ तब आप करतारपुर ही गुरु नानक देव जी की सेवा में लीन रहे। गुरु नानक देव जी ने ज्योति-ज्योत समा जाने से पहले गुरुगद्दी का तिलक लगा कर आप जी को फिर खडूर साहिब भेज दिया।

६६. प्रश्न - गुरुगद्दी की प्राप्ति के बाद गुरु अंगद देव जी के खडूर साहिब में निवास के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - गुरुगद्दी की प्राप्ति के बाद गुरु अंगद देव जी खडूर साहिब में अपनी बूआ जी माई भराई के घर आकर रहे। आप जी एकांत जगह पर बैठ कर सिमरन करते रहते थे। जब गुरु नानक देव जी ज्योति-ज्योत समाए तो भी आप कुछ समय वैराग में रहे। धीरे-धीरे संगतें खडूर साहिब आने लगीं और गुरु जी के दर्शनों की चाहवान होने लगीं। बाबा बुड्ढा जी ने गुरु जी को विनती की कि वह संगतों को दर्शन दे कर उनको निहाल करें। उस के बाद गुरु जी संगत में आने लगे और गुरु नानक देव जी के उपदेशों का प्रचार करने लगे। वैसे तो गुरु नानक देव जी ने पंक्ति और संगति की प्रथा करतारपुर में शुरू कर दी थी, परन्तु लंगर परम्परा को मज़बूत करने का सेहरा गुरु अंगद देव जी को ही जाता है। गुरु जी ने पंक्ति में बैठ कर आप प्रसाद खाना शुरू किया, जिस से सब लोगों में ऊंच-नीच का फर्क मिटा कर पंक्ति में बैठ कर लंगर खाने का रिवाज़ शुरू हुआ। बीबी खीवी जी लंगर के सारे इंतज़ाम को देखती थीं। खडूर साहिब में गुरु जी ने बच्चों और जवानों में खेलों और कुश्तियों की शुरूआत भी करवाई। जिस स्थान पर गुरु जी यह

खेल और कुश्तियां देखते थे और भाग लेने वालों को इनाम देते थे, वह स्थान आज भी मल्ल अखाड़े के नाम से प्रसिद्ध है।

६७. प्रश्न - गुरु अंगद देव जी को मिलने के लिए कौन-सा बादशाह आया था? इस मिलन के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - जब गुरु अंगद देव जी खडूर साहिब अपनी धार्मिक गतिविधियां चला रहे थे तो मुगल बादशाह हमायूं उनके दर्शनों के लिए खडूर साहिब आया था। हमायूं बादशाह जब शेरशाह सूरी से हार गया था तो वह काबुल को जाते समय गुरु अंगद देव जी को खडूर साहिब में मिलने आया। जब गुरु जी ने समाधि में लीन होने के कारण कुछ देर उस तरफ ध्यान न दिया तो उसने इसे अपना निरादर समझ कर म्यान से तलवार निकालने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। गुरु जी ने यह देखते हुए स्वाभाविक ही वचन किया कि यह कृपान शेरशाह से युद्ध के समय कहां गई थी और इस को फकीरों के विरुद्ध निकालने का क्या फायदा। गुरु जी के कोमल वचन सुन कर हमायूं शर्मसार हो गया और उसने माफी मांगी। कहा जाता है कि गुरु जी ने उसको आशीर्वाद दिया जिस की बदौलत उस को अपना खोया हुआ राज वापस मिल गया।

६८. प्रश्न - खडूर साहिब में रहते एक तपे की ईर्ष्या की प्रचलित कहानी पर रौशनी डालो। इस कहानी से गुरु अंगद देव जी के स्वभाव के बारे में क्या पता चलता है?

उत्तर - खडूर साहिब में एक तपा रहता था जो गुरु अंगद देव जी से ईर्ष्या रखता था। एक बार जब खडूर साहिब में वर्षा न हुई तो उस ने लोगों को कहना शुरू कर दिया कि जब तक गुरु जी खडूर साहिब में रहेंगे वर्षा नहीं होगी। उसने लोगों को गुरु जी को खडूर साहिब में से निकालने को कहा। जब गुरु जी को इस बात का पता चला तो वह आप ही कुछ दिनों के लिए गांव से बाहर चले गए। पर जल्दी ही लोगों को तपे की असलियत का पता चल गया तो वह संगत की शक्ल में जाकर भरोवाल से गुरु जी को वापस ले आए। इस घटना से गुरु जी के शांत स्वभाव का पता चलता है। आप अपने दुश्मन और मित्र को एक जैसा समझते थे और सदा आनंद अवस्था में रहते थे।

६९. प्रश्न - गुरु अंगद देव जी ने सिक्ख धर्म के विकास में क्या योगदान दिया?

उत्तर - गुरु अंगद देव जी ने गुरमुखी अक्षरों का विकास किया और लंगर की प्रथा को मज़बूत किया। दूसरी पातिशाही ने ६३ सलोक भी उचारे जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। यह भी कहा जाता है कि गुरु अंगद देव जी ने भाई पैड़े मोखे से सम्वत् १६०१ में श्री गुरु नानक देव जी की जन्म साखी तथा अन्य बाणी एकत्र करवा कर लिखवाई।

७०. प्रश्न - गुरु अंगद देव जी कब और कहां ज्योति-ज्योत समाए?

उत्तर - गुरु अंगद देव जी १३ वैसाख सम्वत् १६०९ को खडूर साहिब में ही ज्योति-ज्योत समाए। उस वक्त आप जी की आयु तकरीबन ४७ वर्ष की थीं।

७१. प्रश्न - गुरु अंगद देव जी की रची हुई बाणी, जो गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल है, का वर्णन करो?

उत्तर - गुरु अंगद देव जी ने सिर्फ सलोक ही लिखे जो कि गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज वारों में सुशोभित हैं, जैसे कि आसा की वार; इन सलोकों में जहां आप ने परमात्मा की महिमा गाकर इन्सान को उस के साथ जुड़े रहने की प्रेरणा दी है, वहीं कई ऐसी हिदायतें भी दी हैं जो ज़िंदगी को उचित ढंग से जीने के लिए मार्गदर्शन करती हैं जैसे कि :-

१. ***नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु॥
पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु॥ ४॥*** *(पन्ना ४७४)*

२. ***मंदा किस नो आखीऐ जां सभना साहिबु एकु॥*** *(पन्ना १२३८)*

३. ***बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु॥*** *(पन्ना ७८७)*

७२. प्रश्न - गुरु अंगद देव जी की बाणी पर गुरु नानक देव जी के प्रभाव का लेखा दो?

उत्तर - गुरु अंगद देव जी पर गुरु नानक देव जी के व्यक्तित्व और बाणी का बहुत प्रभाव था। यही कारण है कि उनके बहुत से सलोकों का आश्य गुरु नानक देव जी के सलोकों से मिलता है। कई सलोकों के तो शब्द भी लगभग वही हैं जो गुरु नानक पातिशाह के सलोकों के हैं जैसे:-

"पवणु गुरू पाणी पिता" का सारा शब्द जो गुरु नानक देव जी की तरफ

से लिखा गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ८ पर दर्ज है, को 'पउण गुरू' करके गुरु अंगद देव जी ने लिखा है और शब्द के अंत में '(होर) केती छुटी नालि' लिख कर शब्द को बढ़ाया है। (पन्ना १४६) "दिवसु राति दुइ दाई दाइआ" को "(दिनस) राति देइ दाई दाइआ" लिखा है।

७३. प्रश्न - बीबी खीवी जी ही एक औरत हैं जिन की सम्मानता गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। क्या आप बता सकते हैं कि वह कौन-सी रचना है और उसके रचयिता कौन हैं?

उत्तर -बीबी खीवी जी की सम्मानता सत्ते और बलवंड की रामकली वार में की गई है। बलवंड जी बताते हैं कि बीबी खीवी जी बहुत नेक थे और लंगर की सेवा लोगों को अमृत भरी खीर खिला कर किया करते थे। नीचे लिखी पंक्तियां इस सिलसिले में महत्त्वपूर्ण हैं:-

बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली॥
गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली॥ (पन्ना ९६७)

७४. प्रश्न - सत्ते बलवंड की वार में से गुरु अंगद देव जी का व्यक्तित्व किस तरह प्रकट होता है?

उत्तर - भाई बलवंड गुरु अंगद साहिब के व्यक्तित्व के प्रभाव का ज़िक्र करते हुए कहते हैं कि उनके दर्शन करने से ही जन्म जन्मांतरों की मैल उतर जाती है और मनुष्य निर्मल हो जाता है:

"होवै सिफति खसंम दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ॥
तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ॥" (पन्ना ९६७)

७५. प्रश्न - गुरु अंगद देव जी के बारे में ये पंक्तियां किस की लिखी हुई हैं और गुरु ग्रंथ साहिब में किस जगह पर दर्ज हैं?

सु कहु टल गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ॥
दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम मरण दुखु जाइ॥
(पन्ना १३९२)

उत्तर - ये पंक्तियां भट्ट टल की हैं। यह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना १३९३ पर स्वय्ये महले दूजे के अंतर्गत दर्ज हैं।



गुरु अमरदास जी—(जीवन और रचना)

७६. प्रश्न - गुरु अंगद देव जी के उत्तराधिकारी कौन थे? उनके जन्म और माता-पिता के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - गुरु अंगद देव जी के उत्तराधिकारी गुरु अमरदास जी थे जिन का जन्म गांव बासरके, ज़िला अमृतसर में १० ज्येष्ठ (वैसाख सुदी १४) सम्वत् १५३६ (मई सन् १४१९) को श्री तेज भान भल्ला खत्री के घर माता सुलखणी जी के गर्भ से हुआ।

७७. प्रश्न - गुरु अमरदास जी के विवाह और संतान के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - आप जी का विवाह बीबी मनसा देवी जी के साथ हुआ था। आप जी के दो सुपुत्र बाबा मोहन जी और बाबा मोहरी जी थे और दो सुपुत्रियां बीबी दानी जी और बीबी भानी जी थे।

७८. प्रश्न - गुरु अमरदास जी की किस संतान का ज़िक्र गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है?

उत्तर - श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में बाबा मोहरी जी की स्तुति रामकली सद में बाबा सुंदर जी द्वारा की गई है।

७९. प्रश्न - गुरु अमरदास जी किस तरह गुरु अंगद देव जी के संपर्क में आए और किस तरह उनका कड़ा संघर्ष सफल हुआ?

उत्तर - श्री गुरु अमरदास जी की सुपुत्री बीबी अमरो जी की बासरके में शादी हुई थी। उसी स्थान पर गुरु अमरदास जी रहते थे। गुरु अमरदास जी ने बीबी अमरो जी से कई बार गुरुबाणी का पाठ प्रभात के समय सुना था और उन्होंने इच्छा प्रकट की थी कि वह किसी समय उनको खडूर साहिब ले जाएं। जब ऐसी सुहानी घड़ी आई तो गुरु अमरदास जी की आयु ६२ वर्ष की थी। उस के बाद गुरु अमरदास जी गुरु अंगद देव जी की सेवा में जुट गए। प्रभात समय गुरु अंगद देव जी के स्नान के लिए गुरु अमरदास जी

जल की गागर कंधे पर उठा कर लाया करते थे। यही नहीं गुरु अमरदास जी गुरु जी के वस्त्र भी साफ करते थे। लंगर के लिए पानी लाते थे और लंगर में प्रसाद तैयार करके गुरु अंगद देव जी को खिलाते थे।

८०. प्रश्न - वह कौन-सी घटना हुई जिस से गुरु अंगद देव जी गुरु अमरदास जी से बहुत प्रभावित हुए?

उत्तर - एक दिन जब गुरु अंगद देव जी को स्नान कराने के लिए तीसरे पातिशाह गागर को कंधे पर उठा कर ला रहे थे तो वे अंधेरे में जुलाहे की खड्डी से ठोकर खाकर गिर पड़े। जब उनकी गागर नीचे गिरने की आवाज़ जुलाहे और जुलाही ने सुनी तो जुलाही ने अपने पति से कहा कि यह वही अमरू निथावा होगा जो इस वक्त पानी लेकर जा रहा होता है। गुरु अंगद देव जी को जुलाही के ये शब्द कुछ अच्छे न लगे और उन्होंने बड़े प्यार से ये वचन किए कि श्री अमरदास जी निमाणिआं के माण, निताणिआं के ताण, निथाविआं के थां, निआसरों के आसरे, निओटियां की ओट और पीरों के पीर समर्थ पुरुष हैं। इस के बाद गुरु अंगद देव जी ने गुरु अमरदास जी पर खुश होकर उनको गुरुगद्दी प्रदान की।

८१. प्रश्न - गुरु अमरदास जी खडूर साहिब छोड़ कर गोइंदवाल साहिब कब और किस तरह गए?

उत्तर - एक बार खडूर साहिब में गुरु अंगद देव जी के पास एक मरवाहा खत्री, जिस का नाम गोंदा था, दर्शनों के लिए आया। उस ने विनती की कि ब्यास नदी के किनारे पर जो उस का गांव है, वहां लोग भूत-प्रेतों के डर के कारण नहीं बसते। अगर गुरु जी का कोई सुपुत्र वहां निवास करे तो वह गांव बस जाएगा। यह विनती सुन कर गुरु अंगद देव जी ने अपने दोनों पुत्रों दासू जी और दातू जी को कहा कि उन दोनों में से एक या वे दोनों गोंदे के साथ उस के गांव चले जाएं, पर दोनों पुत्रों ने जाने में टाल-मटोल की। फिर गुरु अंगद देव जी ने श्री अमरदास जी को, जो कि गुरु जी के दोनों पुत्रों की ईर्ष्या के कारण बासरके रह रहे थे, को बुला भेजा। श्री अमरदास जी ने गुरु जी का हुक्म मान कर गोंदे के गांव में रहना स्वीकार कर लिया। यह गांव ही बाद में गोंदे के नाम पर गोइंदवाल करके मशहूर हुआ।

८२. प्रश्न - गोइंदवाल और खडूर साहिब के बीच एक प्रसिद्ध स्थान दमदमा साहिब सुभायमान है। इस स्थान की ऐतिहासिक महत्ता वर्णन करो?

उत्तर - गोइंदवाल निवास के समय भी श्री अमरदास जी ब्यास नदी से हर रोज़ पानी की गागर लाकर खडूर साहिब श्री गुरु अंगद देव जी को स्नान करवाया करते थे। गोइंदवाल से कोई डेढ मील दूर गांव हंसावाला की सीमा में, जहां बैठ कर गुरु जी पानी की गागर रख कर दम लिया करते थे, उस स्थान को ही अब दमदमा साहिब कहते हैं।

८३. प्रश्न - गुरु अमरदास जी अपनी नम्रता के कारण जाने जाते हैं, इसकी कोई उदाहरण दो?

उत्तर - गुरु अमरदास जी को गुरुगद्दी मिलने के बाद संगत उनके दर्शनों के लिए दूर-दूर से आने लग गई थी। एक दिन गुरु अंगद देव जी के छोटे सुपुत्र दातू जी वहां आए और संगत के बीच में बैठे श्री गुरु अमरदास जी की पीठ में गुस्से से टांग मारी। गुरु अमरदास जी ने बहुत ही नम्रता से उनका पांव पकड़ कर कहा कि मेरी सूखी हुई शरीर की हड्डियों से कहीं आप को चोट तो नहीं लगी। ऐसी ही घटनाएं आप की नम्रता का प्रमाण हैं।

८४. प्रश्न - बासरके में स्थित गुरुद्वारा सन्न साहिब की गुरु अमरदास जी के जीवन में क्या महानता है?

उत्तर - एक बार गुरु अमरदास जी गुरु अंगद देव जी के सुपुत्रों की ईर्ष्या के कारण गोइंदवाल से अपने गांव बासरके आ गए और एक सुनसान कमरे में अपने आप को बंद कर लिया। कमरे के दरवाज़े पर लिख दिया कि जो भी कोई दरवाज़े को खोलेगा 'न वो मेरा सिक्ख होगा और न ही मैं उसका गुरु'। जब संगतें गुरु जी के दर्शनों के लिए उत्सुक हो गईं तो बाबा बुड्ढा जी ने दरवाज़ा न खोल कर कमरे के पीछे से सन्न लगा कर संगतों को गुरु जी के पास पहुंचाया। गुरुद्वारा सन्न साहिब इस घटना की यादगार है। इस घटना के बाद संगत गुरु जी को फिर गोइंदवाल साहिब ले आई थी।

८५. प्रश्न - गुरु अमरदास जी ने सिक्ख धर्म के विकास के लिए क्या कदम उठाए?

उत्तर - गुरु अमरदास जी ने २२ मंजियां स्थापित करके धर्म प्रचार के

लिए प्रचारक नियुक्त किए। इस तरह सिक्खी प्रचार के २२ केंद्र अस्तित्व में आए। गुरु जी ने कई जगहों पर धर्मशालाएं बनवाई, जिस से प्रचार में तेज़ी आई। आप ने गोइंदवाल साहिब में एक बावली की रचना करके सिक्खों को एक तीर्थ स्थान दे दिया। इस बावली में ८४ सीढ़ियां बनवाई गईं जो कि आवागमन की चौरासी लाख योनियों को दर्शाती हैं। यह विश्वास किया जाता है कि गुरु जी के वरदान से जो प्राणी बावली में स्नान करके इन ८४ सीढ़ियों पर जपु जी साहिब के ८४ पाठ करेगा, वह ८४ के चक्र में से निकल जाएगा। गुरु जी ने कुछ इलाकों जैसे कि पिहोवा, कुरुक्षेत्र व हरिद्वार आदि की भी प्रचार हेतु यात्रा की। अमृतसर की नींव भी गुरु रामदास जी द्वारा आप जी के समय में ही रखवाई गई थी। आप ने गुरु नानक देव जी, गुरु अंगद देव जी और कुछ भक्तों की बाणी भी एकत्र करवाई तथा अपने पोत्रे बाबा मोहन जी के पुत्र बाबा संत राम जी से दो पोथियों में लिखवाई। बाद में श्री गुरु अर्जुन देव जी ने ये पोथियां बाबा मोहन जी से लेकर इन को गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ में दर्ज किया। गुरु जी ने आप भी काफी बाणी रची जो गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल है।

८६. प्रश्न - गोइंदवाल साहिब को सिक्खी का केंद्रबिन्दु क्यों कहा जाता है?

उत्तर - गोइंदवाल साहिब को सिक्खी का केंद्रबिन्दु इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह सिक्ख धर्म का पहला धार्मिक स्थल बना। इस से पहले लोग स्नान के लिए तीर्थों पर जाया करते थे, पर गोइंदवाल साहिब में बावली बनने के बाद इस स्थान पर ऐसा तीर्थ बन गया जहां आने वाले प्रभु प्रेमियों के लिए स्नान, लंगर और सत्संग की ज़रूरत पूरी होने लगी।

८७. प्रश्न - गुरु अमरदास जी के समय गोइंदवाल में कौन-सा मुगल बादशाह उनको मिलने के लिए आया? इस मिलन का क्या नतीजा निकला?

उत्तर - सम्वत् १६२४ में दिल्ली से लाहौर जाते हुए अकबर बादशाह आप के दर्शनों हेतु गोइंदवाल साहिब में आया। गुरु जी की एक पंक्ति में बैठ कर सब को लंगर छकाने की परम्परा को देख कर वह बहुत प्रभावित हुआ और उस ने लंगर के लिए बहुत सारी ज़मीन जागीर में दी।

८८. प्रश्न - गुरु अमरदास जी की बाणी के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - गुरु अमरदास जी की बाणी ९०७ शब्दों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। आप जी ने यह बाणी लिखने के लिए १८ रागों का इस्तेमाल किया। जहां गुरु जी की बाणी में प्रभु-प्रेम जैसे गहरे विषय और विचार हैं वहीं जीवन के कई पक्षों के बारे में बहुत ही अनमोल विचार भी देखने को मिलते हैं। गुरु जी की सबसे प्रसिद्ध बाणी अनंदु साहिब, जो कि ४० पउड़ियों में लिखी गई है, चढ़ती कला, असीम समृद्धि और शाश्वत शक्ति की अवस्था का बेनज़ीर वर्णन है। उनके अनुसारः

"गुरमुखि बुढे कदे नाही जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु ॥

......

ओइ सदा अनंदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि" ॥

(पन्ना १४१८)

८९. प्रश्न - गुरु अमरदास जी को समाज सुधारक भी कहा जाता है। उनकी बाणी के आधार पर यह कहां तक ठीक है?

उत्तर - गुरु अमरदास जी ने गुरुबाणी में कई सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध आवाज़ उठाई। आप जी ने सती की रस्म का कड़ा विरोध किया। विधवा विवाह का समर्थन किया और पर्दे जैसी प्रथा का खंडन किया। आप ने नशों के सेवन के विरुद्ध भी बहुत सख्त शब्दों में हिदायत की।

९०. प्रश्न - गुरु अमरदास जी ने सती प्रथा के विरुद्ध क्या आवाज़ उठाई और श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इस के अंतर्गत कौन-सी पंक्तियां हैं?

उत्तर - गुरु अमरदास जी ने सती प्रथा की विरोधता की। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इस के बारे आप जी के कथन नीचे लिखे हैंः

१. ***सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥***
२. ***नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥ १ ॥***
३. ***भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥***
सेवनि साई आपणा नित उठि संम्हालंन्हि ॥ *(पन्ना ७८७)*

अर्थात - ऐ सती प्रथा के पुजारियो!

१. सती वह नहीं कही जा सकती जो मुर्दा पति के साथ उसकी चिता में जल जाती है।

२. सती वो भी नहीं जो अपने पति के बिछुड़ने की चोट से मर जाए।

३. वास्तव में वही सती है जो नेक आचरण और सब्र संतोख से रहती है और अपने पति की सेवा सम्भाल में ही सदा तत्पर रहती है।

११. प्रश्न - गुरु अमरदास जी की बाणी में से कुछ ऐसी पंक्तियां बयान करो जो हमारे जीवन का मार्गदर्शन करती हों या जीवन के किसी रूप की सच्चाई को प्रकट करती हों?

उत्तर - १. हरि जीउ अहंकारु न भावई वेद कूकि सुणावहि॥

२. हउमै नावै नालि विरोधु है.........

३. जिस ही की सिरकार है तिस ही का सभु कोइ॥

४. पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइ॥

५. मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु॥

६. माइआधारी अति अंना बोला॥

सबदु न सुणई बहु रोल घचोला॥

७. गुरबाणी इसु जग महि चानणु..........

८. सचु पुराणा ना थीऐ नामु न मैला होइ॥

९. सभना का मा पिउ आपि है.........

१०. जाति का गरबु न करि मूरख गवारा॥

१२. प्रश्न - गुरु अमरदास जी के बारे में भट्टों के स्वय्ये में आए हुए कुछ सुंदर ख्यालों का उल्लेख करो?

उत्तर - भट्ट भल्ह जी ने गुरु अमरदास जी के बारे में इस तरह वचन किए हैं:

भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै॥

भट्ट कीरत जी अनुसार ***"गुरु अमरदासु जिन्ह सेविअउ तिन्ह दुखु दरिद्रु परहरि परै॥"*** और ***"गुर अमरदास कारण करण जिव तू रखहि तिव रहउ॥"***

१३. प्रश्न - गुरु अमरदास जी कब और कहां ज्योति-ज्योत समाए?

उत्तर - श्री गुरु अमरदास जी भाद्रों सुदी १५ सम्वत् १६३१ को गोइंदवाल साहिब में ज्योति-ज्योत समाए।

९४. प्रश्न - श्री गुरु अमरदास जी और श्री गुरु रामदास जी का सांसारिक सम्बन्ध क्या था?

उत्तर - श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी बेटी बीबी भानी जी का विवाह श्री गुरु रामदास जी से सन् १६१० में किया। गुरुगद्दी देने के समय गुरु अमरदास जी ने भाई जेठा जी को अपने पुत्रों से ज़्यादा योग्य पाया और उन्हें गुरुगद्दी प्रदान की।



गुरु रामदास जी — (जीवन और रचना)

९५. प्रश्न - श्री गुरु रामदास जी का जन्म कहां हुआ और उनके माता-पिता कौन थे?

उत्तर - श्री गुरु रामदास जी का जन्म १५९१ को चूना मण्डी लाहौर में श्री हरिदास मल सोढी खत्री के घर माता दया कौर जी के गर्भ से हुआ।

९६. प्रश्न - श्री गुरु रामदास जी का पहला नाम क्या था और आप गोइंदवाल साहिब कैसे आए?

उत्तर - श्री गुरु रामदास जी का पहला नाम जेठा था क्योंकि आप के माता-पिता छोटी आयु में स्वर्गवास हो गए थे। इस कारण आप अपने नानके गांव बासरके में अपनी नानी जी के पास आ गए। इस समय आप जी की आयु ७-८ वर्ष की थी। आप जी छाबड़ी लगा कर चनों के भंगूर बेचते थे। जब श्री गुरु अमरदास जी बासरके से गोइंदवाल साहिब आए तो जेठा जी भी उस परिवार के साथ गोइंदवाल साहिब आ गए। आप गोइंदवाल साहिब में भी भंगूर बेचने का ही काम करते रहे और अपना काफी समय लंगर और बावली साहिब की सेवा में बिताते रहे।

१७. प्रश्न - गुरु रामदास जी की संतान के बारे में बताओ?

उत्तर - गुरु जी के घर तीन पुत्र पैदा हुए, बाबा पृथीचंद जी (१६१७), बाबा महादेव जी (१६१८) और श्री गुरु अर्जुन देव जी (१६२०) में।

१८. प्रश्न - बीबी भानी जी का सम्बन्ध कितने सिक्ख गुरुओं के साथ था? इस का वर्णन करो?

उत्तर सिक्ख जगत में बीबी भानी जी का व्यक्तित्व बहुत महान है। आप गुरु जी की सुपुत्री, गुरु जी की पत्नी, गुरु जी की माता, गुरु जी की दादी और पड़दादी भी थे। तीसरे गुरु आप जी के पिता, चौथे गुरु आप जी के पति, पांचवें गुरु आप जी के सुपुत्र, छठे गुरु आप जी के पोत्रे और नौवें गुरु आप जी के पड़पोत्रे थे।

१९. प्रश्न - अमृतसर शहर का पहला नाम क्या था और इस को स्थापित करने में गुरु रामदास जी ने क्या महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?

उत्तर - अमृतसर शहर का पहला नाम चक्क गुरु था। इस की नींव भाई जेठा जी ने सम्वत् १६३१ में रखी थी जिस स्थान पर श्री गुरु रामदास जी ने निवास किया था, वह आजकल गुरुद्वारा गुरु के महल के नाम से प्रसिद्ध है। इस स्थान पर श्री गुरु अर्जुन देव जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का निवास स्थान भी रहा। गुरु रामदास जी ने इस स्थान पर एक सरोवर का भी निर्माण किया जो कि उस समय रामदास सरोवर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस सरोवर की महिमा गुरु अर्जुन देव जी ने रागु सोरठि के कुछ शब्दों में की है जैसे कि:

१. संतहु रामदास सरोवरु नीका॥
जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जी का॥ रहाउ॥

(पन्ना ६२३)

२. रामदासि सरोवर नाते॥ सभ लाथे पाप कमाते॥ २॥

(पन्ना ६२४)

३. रामदास सरोवरि नाते॥ सभि उतरे पाप कमाते॥

(पन्ना ६२५)

गुरु रामदास जी के समय चक्क गुरु का नाम बदल कर चक्क रामदास तथा रामदासपुर प्रचलित हो गया। धीरे-धीरे सरोवर का नाम अमृत का सरोवर होने के नाते अमृतसर हो गया और इस के साथ ही शहर का नाम

भी अमृतसर प्रचलित हो गया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अमृतसर सरोवर का कई बार ज़िक्र आता है।

१००. प्रश्न -गुरु रामदास जी ने सिक्ख पंथ को जहां अमृत सरोवर दिया और गुरुबाणी की रचना की, वहां उस के प्रचार के लिए भी उधम किए। इन उधमों की जानकारी दो?

उत्तर - गुरु रामदास जी ने गुरु सिक्खी के प्रचार के लिए भाई गुरदास जी तथा अन्य कई विद्वानों को बाहर दूर के इलाकों में भेजा। आप ने लाहौर में चूना मण्डी के स्थान पर एक धर्मशाला भी बनवाई, जहां सत्संग के प्रवाह से सिक्खी का प्रचार होने लगा। आप जी ने इस स्थान पर संगतों के लिए एक कुआं भी बनवाया। गुरु रामदास जी ने संतोखसर की खुदवाई भी अपने जीवन काल में शुरू करवा दी थी।

१०१. प्रश्न- गुरु जी की तरफ से शुरू की गई मसंद-दसवंद प्रथा के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - गुरु जी ने प्रचार के लिए कई सिक्खों को अलग-अलग जगह पर भेजा, ऐसे सेवक सिक्ख मसंद कहलाए। गुरु साहिब ने शुरू की गई खुदाई तथा अन्य कामों के लिए धन की ज़रूरत को महसूस करते हुए मसंदों को यह काम सौंपा कि वे लोगों से दसवंद इक्ट्ठा करके गुरु घर में जमा करवाएं। इस तरह ये मसंद अच्छे प्रचारक बन गए और गुरु घर के कामों के लिए पैसा इक्ट्ठा होने लगा। दसवंद से भाव था, अपनी आमदन का दसवां भाग धर्म के कामों के लिए देना।

१०२. प्रश्न - गुरु रामदास जी द्वारा रचित बाणी का वर्णन करो?

उत्तर - गुरु रामदास जी के ६७९ शब्द श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। आप जी की बाणी ३० रागों में उपलब्ध है। आप जी को रागों का इतना ज्ञान था कि कुछ राग आप ने खुद तैयार किए। आप जी द्वारा लिखी गई लावां अब सिक्खों में विवाह करते समय पढ़ी जाती हैं। इन लावों के पाठ से ही गृहस्थ जीवन शुरू करने को 'अनंद-कारज' कहा जाता है। आप जी की वारों में भी उच्च दर्जे की आध्यात्मिक और काव्य रचनाएं हैं। आप ने बड़ी सरल भाषा में गहरे ख्याल प्रकट किए हैं जैसे कि:

इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जा कै वसि है कामधेना॥

सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े ता सरब सुख पावहि मेरे मना॥

(पन्ना ६६९)

१०३. प्रश्न -गुरु रामदास जी ने अपनी बाणी में सिक्खों के लिए क्या आचार नीति नियत की है?

उत्तर - गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ३०५ पर अंकित शब्द में गुरसिखों को प्रातः काल उठ कर स्नान करके हरि नाम के ध्यान की हिदायत है। पूरा शब्द इस प्रकार है:-

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै॥
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै॥
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै॥
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै॥
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै॥
जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै॥
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै॥ २॥

(पन्ना ३०५)

१०४. प्रश्न - गुरु रामदास जी कब और कहां ज्योति-ज्योत समाए?

उत्तर - गुरु जी पहली सितंबर १५८१ ईः (आश्विन सम्वत् १६३८) को गोइंदवाल साहिब में ज्योति-ज्योत समाए।



गुरु अर्जुन देव जी—(जीवन और रचना)

१०५. प्रश्न - गुरु अर्जुन देव जी का जन्म कब और कहां हुआ? उनके विवाह और संतान के बारे में भी जानकारी दो?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी का जन्म सम्वत् १६२० को श्री गुरु रामदास जी और माता भानी जी के गृह गोइंदवाल साहिब में हुआ। आप जी का विवाह सम्वत् १६३६ में श्री कृष्ण चंद जी की पुत्री बीबी गंगा देई के साथ हुआ। गुरु हरिगोबिंद साहिब आप जी की इकलौती संतान थे।

१०६. प्रश्न - गुरु अर्जुन देव जी के बचपन के बारे में कुछ जानकारी दो?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी बचपन से ही बहुत शांत स्वभाव और भक्ति भाव वाले थे। आप अपने पिता और गुरु, गुरु रामदास जी का बहुत सत्कार करते थे। आप जी पहले गोइंदवाल में और फिर अमृतसर में रहे। आप जी ने धर्म, इतिहास, संगीत और भाषाओं की तालीम हासिल की। जब एक बार आप के दोनों बड़े भाइयों ने अपने ताऊ सिहारी मल के लड़के की शादी पर लाहौर जाने से इन्कार कर दिया तब आप अपने पिता के कहने पर वहां गए क्योंकि पिता का हुक्म था कि जब तक आप को कोई लेने के लिए न जाए, आप ने वापस नहीं आना है, इस कारण आप को काफी लम्बा समय लाहौर में ही रहना पड़ा।

१०७. प्रश्न - गुरु अर्जुन देव जी की बाणी 'शबद हज़ारे' उनकी अपने पिता को लाहौर से लिखी चिट्ठियां हैं। इस के बारे में वर्णन करो?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी अपने लाहौर निवास के समय दीवान सजाते थे और संगतों को वाहिगुरु के नाम के साथ जोड़ते थे, परन्तु आप अपने पिता जी को मिलने के लिए बहुत उत्सुक थे। अपने मन की तड़प और मिलने की तीव्र इच्छा को उन्होंने अपनी तीन चिट्ठियों में इस तरह से वर्णन किया है:

पहली चिट्ठी

मेरा मनु लोचै गुर दरशन ताई॥ बिलप करे चात्रिक की निआई॥

त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥ १ ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥ रहाउ ॥

दूसरी चिट्ठी

जब पहली चिट्ठी का कोई उत्तर न आया तो कुछ दिन इंतज़ार करके आप जी ने दूसरी चिट्ठी लिखीः-

तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥ चिरु होआ देखे सारिंग पाणी ॥
धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥ २ ॥
हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

तीसरी चिट्ठी

जब इस दूसरी चिट्ठी का भी कोई उत्तर न आया तो फिर कुछ और समय इन्तज़ार के बाद आप ने तीसरी चिट्ठी लिखी :-

इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥ हुणि कदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता ॥
मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥ ३ ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

गुरु अर्जुन देव जी का प्यार, श्रद्धा और हुक्म मानने के गुण को देखते हुए ही गुरु रामदास जी ने गुरुगद्दी उनको प्रदान की।

१०८ प्रश्न - जो पत्र गुरु अर्जुन देव जी ने अपने पिता गुरु रामदास जी को लिखे थे, उनका क्या हुआ। क्या वह गुरु रामदास जी को नहीं मिले?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी द्वारा लिखे पहले दो पत्र उनके भाई के हाथ लग गए थे। उनका भाई उन से ईर्ष्या करता था क्योंकि उसको यह डर था कि कहीं उसके पिता उसका अधिकार छीन कर उसके छोटे भाई अर्जुन देव को गुरुगद्दी न दे दें। इसलिए पहले दो पत्र गुरु रामदास जी को नहीं दिए गए। जब गुरु रामदास जी को तीसरा पत्र मिला तो पत्र पढ़ कर उन्हें पहले दो पत्रों के बारे में भी जानकारी मिल गई। गुरु रामदास जी को अपने पुत्र द्वारा विछोड़ा सहन न कर पाने का अहसास हुआ।

१०९. प्रश्न -जब गुरु रामदास जी को तीसरी चिट्ठी मिली तो उन्होंने क्या किया और उसका क्या असर हुआ?

उत्तर - तीसरी चिट्ठी मिलने पर श्री गुरु रामदास जी ने बाबा बुड्ढा जी

को लाहौर से गुरु अर्जुन देव जी को लाने के लिए भेजा। गुरु अर्जुन देव जी अपने पिता के दर्शन करके बहुत निहाल हुए तथा एक और पद्य उच्चारण किया जो इस प्रकार है:

भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥ प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥
सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ ॥ (पन्ना ९६)

११०. प्रश्न - बाबा बुड्ढा जी कौन थे? आप जी का जन्म कब और कहां हुआ? आप गुरु घर से किस तरह जुड़े और कितने गुरुओं के समय रहे?

उत्तर - बाबा बुड्ढा जी गुरु नानक देव जी के समय से गुरु घर के साथ जुड़े हुए थे। आप का जन्म २२ अक्तूबर १५०६ ई: को भाई सुघे रंधावे के घर, माता गौरां जी के गर्भ से गांव कत्थूनंगल (अमृतसर) में हुआ। आप जी का बचपन का नाम बूड़ा था। जब 'बूड़ा जी' गुरु नानक देव जी को मिले, उस समय उनकी आयु सिर्फ १२ वर्ष की थी। गुरु जी के चरणों में आ जाने के बाद आप जी का नाम बाबा बुड्ढा जी मशहूर हो गया। आप जी ने गुरु अंगद देव जी से लेकर गुरु हरिगोबिंद साहिब जी तक गुरुओं को तिलक लगा कर गुरयाई देने की रस्म निभाई। आप निस्संदेह गुरु घर के महान प्रेमी थे। आप जी की महानता का ज़िक्र और कई सवालों-जवाबों में आएगा।

१११. प्रश्न - गुरु रामदास जी ने गुरु अर्जुन देव जी को गद्दी क्यों और कब दी?

उत्तर - गुरु रामदास जी ने गुरु अर्जुन देव जी को प्यार और श्रद्धा की मूर्ति पाया। अपनी बाकी संतान से उनको गुरुगद्दी के ज़्यादा योग्य समझ कर आप ने गुरुगद्दी १५७८ ई: में गुरु अर्जुन देव जी को दी।

११२. प्रश्न - गुरु अर्जुन देव जी ने अपने पिता के कौन से अधुरे काम पूरे किए?

उत्तर - गुरु रामदास जी ने दुख भंजनी बेरी वाले सरोवर की खुदाई का काम आरम्भ किया था। गुरु अर्जुन देव जी ने इस को पूरा करके इस का नाम रामदास सरोवर रखा। आप ने संतोखसर सरोवर का काम भी पूरा किया।

११३. प्रश्न - गुरु अर्जुन देव जी ने हरिमंदिर साहिब की नींव कब और किस से रखवाई? हरिमंदिर साहिब के निर्माण का काम कब संपूर्ण हुआ?

उत्तर - हरिमंदिर साहिब की नींव १५८८ ई: में रखी गई। गुरु जी ने यह नींव रखने का सम्मान उस समय के प्रसिद्ध सूफी फकीर साईं मियां मीर जी को दिया। हरिमंदिर साहिब का निर्माण सन् १६०१ में पूरा हुआ था।

११४. प्रश्न - गुरु अर्जुन देव जी ने कौन से शहर बसाए? उनके द्वारा किए गए जन-कल्याण के कार्यों का वर्णन करो?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी ने तरनतारन और करतारपुर (जालंधर के निकट) शहरों को बसाया। तरनतारन गांव खारे के पास एक सरोवर बनवा कर स्थापित किया। बाद में जालंधर के पास गांव डल्ला के प्रेमी सिंघों की मांग पर गुरु जी ने अपना निवास करके तथा एक कुआं लगवा कर करतारपुर का स्थान बसाया। गुरु जी ने लाहौर के डब्बी बाज़ार में एक बड़ी बावली बनवाई और साथ ही एक धर्मशाला शुरू की ताकि प्रेमी सिक्ख स्नान और कीर्तन से अपने तन और मन को पवित्र कर सकें। जब गुरु जी के गृह में हरिगोबिंद जी का जन्म हुआ तो गुरु जी ने एक बहुत बड़ा कुआं लगवाया जिस पर खेती की सिंचाई के लिए छः रहटें एक बार चल सकती थीं। इस कारण कुएं का नाम छहर्टा पड़ गया। इस कुएं को वर है कि संतान प्राप्ति की इच्छुक स्त्रियां अगर यहां स्नान करेंगी तो उन की मनोकामना ज़रूर पूरी हो जाएगी। हर पंचमी को यहां स्नान करने वालों की बहुत गिनती होती है।

११५. प्रश्न - गुरु अर्जुन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रचना कब और कहां की? इस के बारे में पूर्ण जानकारी दो?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी ने अपने पूर्वजों की बाणी को सम्भालने और गुरु के सिक्खों को एक ग्रंथ देने के लिए एक बीड़ तैयार करवानी शुरू की। गुरु जी ने इस ग्रंथ को सारी मनुष्य जाति के कल्याण के लिए उस वक्त के देश भर में जो संतों-भक्तों की बाणी उपलब्ध थी इक्ट्ठी करवाई और जो बाणी गुरु नानक देव जी के आदर्शों के अनुकूल थी उसको आदि ग्रंथ में शामिल कर लिया। आदि ग्रंथ का संपादन करते समय आप ने गुरुओं, संतों, भक्तों और भट्टों की सारी बाणी को रागों के आधार पर क्रमवार किया। यह काम १६०१ से १६०४ तक बड़ी मेहनत और लगन के साथ सम्पूर्ण किया गया। गुरु जी ने सारी बाणी भाई गुरदास जी से लिखवाई। जिस एकांत जगह पर यह काम हुआ, वहां एक सरोवर बना कर उस का नाम रामसर रखा। इस ग्रंथ में उस वक्त के ५ गुरुओं, १५ संतों-भक्तों, ११ भट्टों और ४ गुरु

घर के प्रेमियों की बाणी शामिल की गई। भाई गुरदास जी ने नम्रता से अपनी बाणी आदि ग्रंथ में न शामिल होने योग्य बताई। गुरु जी ने उनकी बात मान कर यह बाणी आदि ग्रंथ में शामिल न की परन्तु इस को बाणी की कुंजी बताया। कई ईर्ष्यालुओं ने बादशाह अकबर को शिकायत कर दी कि गुरु जी ने अपने ग्रंथ में हिन्दू और मुसलमान अवतारों और पैगम्बरों की निंदा की है, परन्तु जब बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी ने बादशाह को इस बाणी में नीचे लिखी सतरें सुनाई तो बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ :

खाक नूर करदं आलम दुनीआइि॥
आसमान जिमी दरखत आब पैदाइसि खुदाइ॥ १॥
बंदे *चसम दीदं फनाइ॥*
दुनीआ मुरदार खुरदनी गाफल हवाइ॥ रहाउ॥

(पन्ना ७२३)

११६. प्रश्न - पोथी साहिब का पहला प्रकाश कब और कहां किया गया? पोथी साहिब का पाठ करने वाले पहले ग्रंथी कौन थे? सबसे पहला हुक्मनामा क्या निकला?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी ने आदि ग्रंथ की सृजना १५ अगस्त १६०४ को सम्पूर्ण की। उस के बाद भाई बंनो जी इस की जिल्दबंदी करवाने के लिए इस को लाहौर ले गए। ३० अगस्त १६०४ वाले दिन आदि ग्रंथ को एक शानदार नगर कीर्तन द्वारा रामसर से हरिमन्दिर साहिब लाया गया। हरिमन्दिर साहिब में उस दिन पहली बार इस आदि ग्रंथ का प्रकाश किया गया। भाई बुड्ढा जी ने पहले ग्रंथी के रूप में सम्मान हासिल किया और हुक्मनामा लिया। उस समय का पहला हुक्मनामा इस प्रकार था:-

संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम॥
धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंम्रित जलु छाइआ राम॥

(पन्ना ७८३)

११७. प्रश्न - श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पहली बीड़, जिसका पहला प्रकाश ३० अगस्त १६०४ को हुआ था, आज कल उसका प्रकाश कहां होता है?

उत्तर - यह बीड़ गुरु हरिगोबिंद जी के पास थी जब तक वह करतारपुर रहे। जब गुरु हरिगोबिंद जी करतारपुर से कीरतपुर गए तो यह बीड़ उनके पोते धीरमल के पास रह गई। धीरमल जी ने उस के बाद यह बीड़ कभी

भी किसी को नहीं दी और आज तक यह उनकी संतान के पास करतारपुर में ही स्थित है।

११८. प्रश्न -गुरु ग्रंथ साहिब की पहली बीड़, जो अब करतारपुर में है, के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - यह बीड़ जिल्द बंद है और इस में ९७५ पन्ने हैं। पन्ना ५४१ पर छठे पातिशाह के पवित्र हस्ताक्षर हैं। सारी बीड़ एक ही हाथ से और एक ही स्याही से लिखी हुई है और पहले चार गुरु साहिबान के ज्योति-ज्योत समाने की तारीखें भी उसी स्याही में उसी हाथ से लिखी हुई हैं। पांचवें पातिशाह के ज्योति-ज्योत समाने की तिथि अलग स्याही में है परन्तु हाथ वही है। इस से पता चलता है कि यह तिथि भाई गुरदास जी ने पंचम पातिशाह के ज्योति-ज्योत समाने के बाद लिखी होगी।

११९. प्रश्न -भाई बंनो की बीड़ के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - यह बीड़ गुरु ग्रंथ साहिब की पहली बीड़ की मुख्य नकल है। लगता है कि यह नकल उस वक्त की गई होगी जब भाई बंनो जी पहली बीड़ को जिल्द बनवाने के लिए लाहौर ले गए थे। इस बीड़ में भाई बंनो ने कुछ वृद्धि भी की जिस के कारण यह प्रामाणिक नहीं रही।

१२०. प्रश्न - गुरु जी की शहीदी के कारणों को बताते हुए, इसके प्रभाव की भी जानकारी दो?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी के समय गुरु घर की महिमा दूर-दूर तक फैल गई थी। आदि ग्रंथ की रचना और हरिमन्दिर का निर्माण ऐसी घटनाएं थीं जिस के कारण गुरु घर के प्रेमी दूर- दूर से गुरु जी के दर्शनों को आने लगे और दिव्य बाणी के पाठ व कीर्तन का आनंद मानने लगे। ईर्ष्यालुओं ने राज दरबार तक शिकायतें करनी शुरू कर दीं। बादशाह अकबर की मौत के बाद १६०५ में उसका पुत्र जहांगीर दिल्ली की गद्दी पर बैठा। वह कान का कच्चा था और गुरु जी के विरुद्ध बातें सुन कर विरोधी भावना रखने लगा था। उसकी पुस्तक तुजके जहांगीरी से यह बात स्पष्ट हो जाती है। ज़ब गुरु जी ने संगत के कहने पर गुरु हरिगोबिंद साहिब के लिए चंदू की लड़की का रिश्ता ठुकरा दिया तो चंदू भी उनका दुश्मन हो गया। चंदू लाहौर का दीवान था और बादशाह जहांगीर के करीब था। जब शहज़ादा खुसरो ने

जहांगीर के विरुद्ध बगावत की और शहज़ादा गुरु जी को मिलने आया तो गुरु जी के विरोधियों ने यह बात फैला दी कि गुरु जी ने शहज़ादा खुसरो की सहायता की थी। इस दोष के अंतर्गत गुरु जी को सज़ा दी गई और १ मई १६०६ को लाहौर में कष्ट देकर उन्हें शहीद कर दिया गया। असल में इस शहीदी का कारण वे सब लोग थे जो गुरु जी से ईर्ष्या करते थे जैसे कि बाबा पृथी चंद (गुरु जी के बड़े भाई, जिनको गुरुगद्दी नहीं मिली थी) और धर्म के वह सभी ठेकेदार, मौलवी, पंडित आदि, जिनको गुरु जी की बढ़ती प्रशन्सा पसंद नहीं थी। गुरु जी की शहीदी का सारे पंजाब पर बहुत गहरा असर हुआ। सिक्ख धर्म में भक्ति के साथ शक्ति का जोड़ हो गया और गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जुल्म के विरुद्ध लड़ने की नीति को अपनी धर्म-नीति का एक अंग बना लिया। गोकल चंद नारंग ने इस घटना को धर्म-नीति में आई तबदीली का मुख्य कारण बताया है। भक्ति के साथ शक्ति के सुमेल की नीति का शिखर दसवें गुरु गोबिंद सिंघ के वक्त खालसा पंथ की सृजना से हुआ।

१२१. प्रश्न -गुरु अर्जुन देव जी को किस गुरु साहिबान ने बाणी का बोहिथा कहा था? यह कथन कहां तक सच है?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी के बारे यह भविष्यवाणी उनके नाना गुरु अमरदास जी ने की थी। बाद में गुरु जी ने न सिर्फ स्वयं बाणी लिखी बल्कि सारे देश में उपलब्ध बाणी का अन्वेषण करके उसको आदि ग्रंथ में शामिल किया। गुरु अर्जुन देव जी का यह महान काम निस्संदेह उनको बाणी का बोहिथा साबित करता है।

१२२. प्रश्न - गुरु अर्जुन देव जी की बाणी के बारे विवरण दो?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी ने सबसे अधिक बाणी लिखी जो कि ३० रागों में २२१८ अनमोल शब्दों के रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल है। आप की बाणी गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल सम्पूर्ण बाणी की आधी बाणी से भी ज़्यादा है। आप की प्रमुख बाणियों में शबद हज़ारे, बारह माहा और सुखमनी साहिब है। सुखमनी सचमुच सुखों की मणि है और हृदय को ठंड पहुंचाती है। यह आत्मा और शरीर दोनों को निरोग बनाती है।

१२३.प्रश्न- गुरु अर्जुन देव जी की बाणी सुखमनी साहिब के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - सुखमनी साहिब में २४ असटपदियां हैं और हर असटपदी से पहले एक सलोक है। गुरु अर्जुन देव जी ने सुखमनी साहिब में इन्सान को प्रभु के नाम के साथ जुड़ कर सुखों को मानने की राह बताई है। उनके अनुसार प्रभु का नाम ही सब सुखों का खज़ाना है और यह नाम भक्त जनों के मन में रहता है। मन की शुद्धता पर जोर देते हुए, मन को टिकाव में लाने के लिए सबसे उत्तम साधन नाम सिमरन ही बताया गया है। सुखमनी साहिब की सम्पूर्ण विषय-वस्तु नाम सिमरन, नाम जपने वाले की महिमा और निरंकार की महिमा के इर्द-गिर्द ही घूमती है। गुरु साहिब ने पहली असटपदी में ही प्रभु सिमरन से हासिल होने वाले वरदानों का ज़िक्र किया है। दूसरी असटपदी में भी प्रभु नाम की महिमा को बयान किया गया है। तीसरी असटपदी में नाम सिमरन की तुलना दूसरी धार्मिक विधियों से करके नाम सिमरन को ही सबसे उत्तम बताया गया है। जहां चौथी असटपदी प्रभु के आगे उसकी कृपा के लिए अरदास है, वहां पांचवीं असटपदी में मनुष्य की अकृतघ्नता का ज़िक्र किया गया है।

"गोबिद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम" का निष्कर्ष निकालते हुए इन्सान को प्रभु की कृपालता का पात्र बनाने के लिए प्रेरित किया गया है। अगली कुछ असटपदियों में उन ढंगों को बयान किया गया है जिस से परमात्मा की कृपा पाई जा सकती है। जहां गुरु साहिब ने साधु और संगति की सम्मानता की है, वहीं ब्रह्म ज्ञानी की व्याख्या भी की है। महापुरुषों की निंदा और अपना सम्मान इन्सान के ऐसे अवगुण हैं जो उसको परमात्मा से दूर रखते हैं। मानवीय आश्रय को व्यर्थ बताते हुए गुरु साहिब ने मनुष्य को सभी ढंग छोड़ कर प्रभु की कृपा लेने के लिए उसके चरणों में विनती करने का ढंग सुझाया है। जहां २२वीं असटपदी परमात्मा की सर्व व्यापकता के पक्ष को उजागर करती है और मनुष्य को उस वाहिगुरु के गुण गाकर ***"इह लोक सुखीए परलोक सुहेले"*** का संदेश देती है, वहां २३वीं असटपदी मनुष्य के वाहिगुरु से मेल- मिलाप की ज्ञान रूपी रौशनी को भी प्रकट करती है। सुखमनी साहिब की आखिरी असटपदी में गुरु महाराज ने इन्सान को पूर्ण गुरु की शिक्षा पर अमल करते हुए और संतजनों के बताए मार्ग पर चलकर प्रभु को

प्राप्त करने की चेष्टा करने को फिर दोहराया है।

ऐसा मनुष्य, जिस पर वाहिगुरु की कृपा हो जाती है, सभी युगों में मुक्ति प्राप्त करते हुए सुखों की मणि प्राप्त करता है।

१२४. प्रश्न - गुरु अर्जुन देव जी बारे नीचे लिखी पंक्तियां किस की रचना हैं और गुरु ग्रंथ साहिब में कहां दर्ज हैं?

जप्यउ जिन्ह अरजुन देव गुरू फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ॥

(पन्ना १४०९)

उत्तर - ये पंक्तियां भट्ट मथुरा जी की हैं और गुरु ग्रंथ साहिब में भट्टों के पांचवें गुरु के स्वय्ये में पन्ना १४०९ पर अंकित हैं।

१२५. प्रश्न - गुरु अर्जुन देव जी ने १९-६-१५९५ को शहीद होते हुए अपने मुखारविंद से आखिरी शब्द क्या उच्चारण किए?

उत्तर - गुरु जी को तपती हुई गर्मी में तपती लोह पर बिठाया गया और ऊपर से तपती हुई रेत उनके शरीर पर डाली गई। ऐसे कष्ट देने के उपरांत शहीद करने के लिए जब दरिया रावी में बहाया जाने लगा तो गुरु जी के मुखारविंद पर नीचे लिखी पंक्ति थी—

सुणी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बणि आई॥
प्रगट भई सगले जुग अंतरि गुर नानक की वडिआई॥

(पन्ना ६११)

यह पंक्ति डेरा साहिब के निर्माण के समय वहां (सोरठि मः ५) उकेर दी गई थी।



गुरु हरिगोबिंद साहिब जी

भक्ति और शक्ति का संकल्प

१२६. प्रश्न - गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म कब और कहां हुआ?

उत्तर - श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म गुरु अर्जुन देव जी के गृह, माता गंगा जी के उदर से गांव वडाली ज़िला अमृतसर में २१ आषाढ़ सम्वत् १६५२ को हुआ।

१२७. प्रश्न - गुरु हरिगोबिंद साहिब के जन्म के लिए माता गंगा जी का बाबा बुड्ढा जी के पास वरदान के लिए जाने की गाथा बयान करो?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी के कोई संतान न होने के कारण माता गंगा जी उदास रहते थे। गुरु अर्जुन देव जी के भाई तथा अन्य शरीके के लोग जब उनको इस बात का ताना देते तो उनके मन को और भी दुख लगता। गुरु अर्जुन देव जी ने माता गंगा जी की ख्वाहिश को पूरा करने के लिए उनको कहा कि वह बाबा बुड्ढा जी के पास जाकर उनकी आशीष प्राप्त करें। कहा जाता है कि पहली बार माता जी बहुत सारे पकवान बनवा कर रथ पर सवार होकर बाबा बुड्ढा जी के पास झब्बाल गए, परन्तु बाबा बुड्ढा जी अंतर्ध्यान रहे और माता जी निराश होकर वापस आ गए। गुरु अर्जुन देव जी के समझाने पर माता जी दोबारा मिस्से प्रसादे और प्याज़ लेकर बड़ी श्रद्धा के साथ पैदल ही बाबा बुड्ढा जी के स्थान पर पहुंचे। इस बार बाबा बुड्ढा जी ने उनका लाया हुआ भोजन भी खाया और पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद भी दिया। उन्होंने प्याज़ तोड़ते हुए यह भी कहा कि उनका पुत्र बहुत बलवान होगा और जालिमों के ज़ुल्मों को नष्ट करेगा। इस तरह बाल हरिगोबिंद का जन्म हुआ।

१२८. प्रश्न-श्री हरिगोबिंद साहिब जी के विवाह और संतान के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - श्री हरिगोबिंद साहिब जी के तीन विवाह हुए थे। आप जी का

पहला विवाह गांव डल्ला के निवासी नारायण दास जी की सुपुत्री दमोदरी जी के साथ १२ भाद्रों सम्वत् १६६१ को डल्ले गांव में हुआ था। दमोदरी जी के उदर से बाबा गुरदित्ता जी और श्री अणी राय जी दो पुत्र पैदा हुए थे। बीबी वीरो जी माता दमोदरी जी की सुपुत्री थी।

गुरु जी का दूसरा विवाह बकाला के निवासी हरी चंद की सुपुत्री नानकी जी से हुआ था। बीबी नानकी जी के गर्भ से श्री गुरु तेग बहादुर जी पैदा हुए थे।

गुरु जी का तीसरा विवाह मंडियाली गांव के निवासी दया राम जी की सुपुत्री महांदेवी से हुआ था। बाबा अटल राय जी महांदेवी जी के गर्भ से पैदा हुए थे।

१२९. प्रश्न - गुरु अर्जुन देव जी ने शहीद होने से पहले अपने पुत्र को क्या संदेश भेजा?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी ने शहीदी से पहले अपने श्रद्धालु सिक्खों की तरफ से अपने पुत्र को यह संदेश भेजा कि उनको शस्त्रों से सुशोभित होकर गद्दी पर बैठना चाहिए और पूरी योग्यता से सेना भी रखनी चाहिए। गुरु हरिगोबिंद साहिब ने इस आदेश का पालन करते हुए अपनी नीति में तबदीली की।

१३०. प्रश्न - गुरु अर्जुन देव जी शहीद होने के लिए जाते वक्त अपने सुपुत्र को गुरयाई दे गए थे। यह गुरयाई कब दी गई? इस उपरांत गुरु हरिगोबिंद जी ने क्या किया?

उत्तर - गुरु हरिगोबिंद साहिब को गुरयाई २९ ज्येष्ठ (ज्येष्ठ वदि १४) सम्वत् १६६३ (२५ मई १६०६) को दी गई। आप ने मर्यादा में तबदीली करके मीरी और पीरी की दो तलवारें धारण करने की इच्छा प्रकट की। यह दिन अब मीरी-पीरी के नाम से मनाया जाता है।

१३१. प्रश्न - गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अकाल तख्त की रचना कब और क्यों करवाई?

उत्तर - गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अकाल तख्त की रचना १६६५ में करवाई। आप ने रहने के लिए एक बुंगा और बैठने के लिए तख्त बनवाया। यहां विराजमान होकर आप भक्ति के साथ-साथ शक्ति का उपदेश भी देते

थे। कई फैसले भी इसी तख़्त पर होने लगे।

१३२. प्रश्न -भाई गुरदास जी ने गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का ज़िक्र किन पंक्तियों में किया है?

उत्तर - क्योंकि गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने एक शस्त्रधारी पहरावा पहन कर पहले पांच गुरुओं से अलग पहचान बनाई और घुड़सवारी तथा शस्त्रों के अभ्यास को महानता दी, इस के प्रति भाई गुरदास जी ने लिखा है:

अरजन काइआ पलटि कै मूरति हरिगोबिंद सवारी॥

. . . .

दल भंजन गुर सूरमा वड जोधा बहु परउपकारी॥

१३३. प्रश्न - क्या यह कहा जा सकता है कि गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की नीति उन से पहले वाले गुरुओं की नीति के विरुद्ध थी?

उत्तर - गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने से पहले गुरुओं की नीति को पूरी तरह अपनाया और उस में कोई तबदीली नहीं की। उन्होंने जो भी तबदीली की वह समय की मांग अनुसार ठीक थी। उन्होंने भक्ति के साथ-साथ शक्ति का संकल्प जोड़ दिया क्योंकि ज़ुल्म करने वाली ताकतें धर्म और भक्ति के कामों में दखलंदाज़ी करने लग गई थीं। गुरु जी ने भक्ति वाला रास्ता नहीं छोड़ा बल्कि भक्ति के साथ-साथ उस मार्ग की सुरक्षा के लिए शक्ति का रास्ता भी अपना लिया।

१३४. प्रश्न - गुरु हरिगोबिंद साहिब को ग्वालियर के किले में क्यों कैद किया गया और बाद में क्यों और किस तरह छोड़ा गया?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी की शहीदी का एक कारण दीवान चंदू मल की नाराज़गी भी था। दीवान चंदू मल अपनी लड़की का नाता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से करना चाहता था परन्तु संगत के कहने पर गुरु अर्जुन देव जी ने यह रिश्ता स्वीकार नहीं किया। चंदू मल जहांगीर को गुरु जी के विरुद्ध भड़काने लग पड़ा। यह चंदू की सीख का ही नतीजा था कि जहांगीर ने अपने दो सेवादारों को गुरु जी के पास भेजा कि वह उनको दिल्ली ले कर आएं। गुरु हरिगोबिंद जी दिल्ली गए और मजनूं के टिल्ले के स्थान पर डेरा लगाया। जब गुरु जी बादशाह को मिले तो जहांगीर उनकी बातों से बहुत प्रभावित हुआ और उनको अपने साथ आगरे ले गया। आगरे जाकर कुछ

विरोधियों की बातें सुन कर जहांगीर ने गुरु जी को ग्वालियर के किले में बंद कर दिया। दाबिस्तान के अनुसार गुरु जी पर गुरु अर्जुन देव जी पर लगाए जुर्माने की रकम न देने का दोष लगाया गया।

जब जहांगीर को साईं मियां मीर ने इस बात का अहसास कराया कि गुरु हरिगोबिंद को कैद करना एक गलती है और चंदू की चालों से आगाह कराया तो बादशाह ने गुरु जी की रिहाई का हुक्म दे दिया।

१३५. प्रश्न - गुरु हरिगोबिंद साहिब को बंदीछोड़ गुरु क्यों कहा जाता है?

उत्तर - जब गुरु जी को ग्वालियर के किले से रिहा किया गया तो गुरु जी ने अन्य राजपूत राजाओं और राज घरानों के आदमी, जिन की गिनती ५२ थी और जो बेकसूर कैद में थे, उनको भी रिहा करने के लिए कहा। कहा जाता है कि बादशाह ने उनकी बात मान कर यह हुक्म किया कि जो भी गुरु जी की पौशाक का कोना पकड़ लेगा वह बाहर आ जाएगा। इस तरह ५२ और कैदी गुरु जी के साथ ग्वालियर के किले से छोड़े गए। इस कारण गुरु जी को बंदीछोड़ कहा जाता है। ग्वालियर के किले में एक चबूतरे पर अभी तक लगे बोर्ड पर बंदीछोड़ पीर लिखा होना इस बात का सबूत है।

१३६. प्रश्न - बंदीछोड़ दिवस किस दिन होता है?

उत्तर - क्योंकि गुरु जी और उनके अन्य साथी ग्वालियर के किले से रिहा होकर दीवाली के दिन अमृतसर आए थे, इस कारण दीवाली वाले दिन बंदीछोड़ दिवस मनाया जाता है।

१३७. प्रश्न - चंदू की मौत कैसे हुई?

उत्तर - जब गुरु हरिगोबिंद साहिब के सम्बन्ध जहांगीर से ठीक हो गए, तो गुरु जी के कहने पर बादशाह ने चंदू को गुरु हरिगोबिंद साहिब के हवाले कर दिया। गुरु जी ने चंदू को सिक्खों को सौंप दिया ताकि वह उस को सज़ा दे सकें। गुस्से में आए सिक्खों ने चंदू को लाहौर की गलियों में घसीटा, मारा और उसके किए की उसको यथायोग्य सज़ा दी।

१३८. प्रश्न - गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपनी लाहौर यात्रा के दौरान क्या काम किए?

उत्तर - गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जन्म स्थान श्री गुरु रामदास जी पर श्री गुरु अर्जुन देव जी द्वारा लगवाई हुई बावली साहिब के दर्शन किए और

मुरम्मत करवाई। पांचवें गुरु के शहीदी स्थान पर आप ने एक समाधि बनवाई और वहां सेवा के लिए भाई लंगाह को नियुक्त किया।

१३९. प्रश्न - कौलां कौन थी और उसने अपनी ज़िन्दगी किस तरह और कहां बताई?

उत्तर - कौलां एक मुसलमान काज़ी की बेटी थी। वह साईं मियां मीर की सत्संगी थी। उनके ज़रिए उस की गुरु घर से सांझ हो गई और वह गुरु जी की भक्त बन गई। उसके पिता को यह बात पसंद नहीं थी कि उसकी बेटी काफिरों की बाणी सुने। उसने कौलां को मरवा देने की धमकी दी। इस डर से कौलां अमृतसर आ गई और नाम सिमरन करने लगी। गुरु हरिगोबिंद जी ने उस के रहने का इन्तज़ाम कर दिया। गुरु जी ने कौलां की विनती पर १६८४ में वहां एक सरोवर भी बनवा दिया था जिस को कौलसर कहते हैं। आज कल वहां सरोवर के किनारे एक सुंदर गुरुद्वारा कौलां की याद में स्थित है।

१४०. प्रश्न - गुरु हरिगोबिंद साहिब ने नानक मत्ते की यात्रा करके क्या काम करवाए?

उत्तर - गुरु हरिगोबिंद साहिब नानक मत्ता के स्थान पर इस कारण गए ताकि गुरु नानक देव जी के इस स्थान पर उनकी यादगार को सम्भाल कर रखा जाए। उस समय भाई अलमस्त जी वहां सेवा कर रहे थे। जिस पीपल के नीचे गुरु नानक देव जी बैठे थे, उस को गोरखवादी योगियों ने ईर्ष्या करके जला दिया। इस पीपल को गुरु जी ने देखभाल करके फिर से हरा-भरा कर दिया। गुरु साहिब ने भाई अलमस्त को सहायता प्रदान की ताकि इस स्थान की देखभाल होती रहे। वापसी पर हरिद्वार और थानेसर से होते हुए आप वापस अपने परिवार में आ गए।

१४१. प्रश्न - गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की श्रीनगर की यात्रा के दौरान क्या घटना हुई?

उत्तर - गुरु हरिगोबिंद साहिब जब कशमीर की यात्रा पर गए तो आप ने वज़ीराबाद और मीरपुर की यात्रा करके श्रीनगर जाने का फैसला किया। वहां एक माई, जिसका नाम भागभरी था और बहुत बूढ़ी हो चुकी थी, गुरु जी के दर्शनों के लिए व्याकुल थी। उस ने गुरु जी के लिए एक चोला तैयार

किया हुआ था। उस की बहुत तमंना थी कि गुरु जी यहां आकर प्यार से काता हुआं खद्दर का चोला पहनें। जब गुरु जी वहां पहुंचे तो माई उनके दर्शन करके बहुत प्रसन्न हुई। आज इस घटना की याद में श्रीनगर शहर के बाहर एक गुरुद्वारा स्थित है, जिस को बनाने की सेवा चल रही है।

१४२. प्रश्न - गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की और यात्राएं और सिक्ख धर्म के लिए किए कामों का उल्लेख करो?

उत्तर - गुरु हरिगोबिंद साहिब ने कई स्थानों की यात्रा की, जिस में दिल्ली, लाहौर, कशमीर, डेरा बाबा नानक आदि शामिल थे। आप अपने पूर्वजों के स्थानों पर भी गए और उनकी देखभाल करके उनको ठीक-ठाक करवाया। इन स्थानों में नानक मत्ता, करतारपुर, ननकाना साहिब और डेरा बाबा नानक शामिल हैं। आप ने बिबेकसर और कौलसर के सरोवर बनवाए, अकाल तख्त की रचना की। गांव भाई रूपा और हरिगोबिंदपुर शहर बसाया और सबसे ज़्यादा आप ने सिक्ख पंथ में बीर-रस का जज़्बा पैदा करके ज़ुल्म के खिलाफ टक्कर लेने का रास्ता दिखाया। गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सभी पुरातन मर्यादाओं को कायम रखते हुए भक्ति के साथ शक्ति का संकल्प जोड़ दिया। आप जी ने चार युद्ध भी किए और जीत प्राप्त की। वैसे तो आप ने कोई बाणी नहीं रची, परन्तु कहा जाता है कि आप ने बाणी की सम्भाल करते हुए बाणी में शामिल वारों के लिए धुनें नियत कीं।

१४३. प्रश्न - गुरु हरिगोबिंद साहिब के सिक्खों का भगवान दास और कर्म चंद से हुआ झगड़ा क्या था? उस का क्या नतीजा निकला?

उत्तर - चंदू की मौत के बाद उसकी ज़मीन का कब्ज़ा भी सिक्खों को मिल गया था। गुरु जी ने वहां नया शहर बसाने के लिए कुछ निर्माण कार्य शुरू करवाया, परन्तु वहां के ज़मींदार भगवान दास ने इस को रुकवाने के लिए गुरु जी पर हमला कर दिया। लड़ाई में भगवान दास मारा गया। फिर उसके लड़के रत्न चंद और चंदू के लड़के कर्म चंद ने जालंधर के फौजदार को मदद के लिए कहा, जिस ने गुरु जी के विरुद्ध सेना भेज दी। ४ अक्तूबर १६२१ को रुहेला गांव के पास लड़ाई हुई, जिस में गुरु जी की जीत हुई। बाबा बुड्ढा जी ने इस जीत की खुशी में नए बसाए गए शहर का नाम हरिगोबिंदपुर रख दिया।

१४४. प्रश्न - अमृतसर की लड़ाई का वर्णन संक्षेप में करो?

उत्तर - अमृतसर की जंग गुरु हरिगोबिंद साहिब और मुगलों में १६२८ में लड़ी गई। लड़ाई के कारण शाहजहां का कट्टरवादी होना गुरु हरिगोबिंद जी की नीति और लाहौर के काज़ी की लड़की कौलां का मामला था। तत्कालीन मुगलों का एक सुंदर बाज़ शिकार का पीछा करते हुए दूर निकल गया, जिसको सिक्खों ने पकड़ लिया। शाहजहां ने मुख्लिस खां के अधीन ७ हज़ार सैनिकों की फौज भेजी। गुरु जी ने केवल ७०० सैनिकों सहित मुगलों का मुकाबला किया। बहुत भारी लड़ाई हुई। मुख्लिस खां इस युद्ध में मारा गया और मुगल फौजों की बुरी तरह हार हुई। यह सिक्खों और मुसलमानों का पहला युद्ध था। इस जीत से सिक्खों का हौसला काफी बढ़ गया।

१४५. प्रश्न - गुरु हरिगोबिंद साहिब के लिए दो घोड़े दिलबाग और गुलबाग सिक्खों द्वारा भेंट करने के लिए लाए गए थे परन्तु रास्ते में मुगल सिपाहियों ने छीन लिए थे। इस से सम्बन्धित घटना का वर्णन करो?

उत्तर - गुरु हरिगोबिंद साहिब भाई रूपा से अपने एक श्रद्धालु राए जोध के पास कांगड़ गांव गए। वहां उनको यह खबर मिली कि काबुल से एक सिक्ख उनके लिए दसवंद की इक्ट्ठी हुई रकम से दो घोड़े खरीद कर ला रहा था परन्तु रास्ते में सूबा लाहौर ने वे घोड़े छीन कर शाहजहां को भेंट कर दिए। गुरु जी ने अपने एक श्रद्धालु भाई बिधी चंद को थापी देकर लाहौर से घोड़े वापस लाने का हुक्म दे दिया। भाई बिधी चंद जी ने शाही अस्तबल में से घोड़े लाकर गुरु जी के पास पहुंचा दिए। जब शाहजहां को इस बात का पता चला तो उसने कुछ सेना काला बेग और कमर बेग के संरक्षण में गुरु जी से लड़ने के लिए भेजी। दोनों सेनाओं का मुकाबला लहिरा के स्थान पर हुआ। दोनों मुगल सेनापति इस में मारे गए और सिक्खों की जीत हुई।

१४६. प्रश्न -पैंदे खान कौन था और उसके गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ कैसे सम्बन्ध थे?

उत्तर - पैंदे खान एक पठान था, जिस का गुरु जी ने पालन-पोषण किया था। बाद में उसने गुरु जी के साथ नमक-हरामी करके बादशाह शाहजहां

को गुरु जी के खिलाफ भड़काया। करतारपुर के युद्ध के समय पैंदे खान शाही फौज़ से मिल कर गुरु जी के विरुद्ध लड़ा था।

१४७. प्रश्न - गुरु हरिगोबिंद साहिब जी द्वारा लड़ी करतारपुर की जंग का वर्णन करो?

उत्तर - इस लड़ाई का मुख्य कारण था पैंदे खां का गुरु जी के साथ दगा करना। बादशाह शाहजहां गुरु जी से नाराज़ था क्योंकि पिछली लड़ाई में मुगल सेना के काला बेग और नाहर बेग मारे गए थे। इस बार शाहजहां ने पैंदे खान और काले खान के अधीन विशाल सेना गुरु हरिगोबिंद साहिब के विरुद्ध भेजी। करतारपुर में भीषण लड़ाई हुई। इस युद्ध में गुरु साहिब और उनके सिक्खों ने बहुत बहादुरी और हिम्मत दिखाई। जती मल, बिधी चंद और राय जोध नाम के सिक्खों ने अपनी युद्ध कला का बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। उनके अलावा गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के दो पुत्रों बाबा गुरदित्ता जी और श्री गुरु तेग बहादुर जी ने भी अद्वितीय शूरवीरता दिखाई। पैंदे खान समेत तीन मुगल सेनापति मारे गए और सिक्खों का भी भारी नुक्सान हुआ परन्तु उनको जीत प्राप्त हो गई।

१४८. प्रश्न - डरौली भाई के स्थान की गुरु जी के जीवन में क्या महानता है?

उत्तर - डरौली भाई या भाई की डरौली एक गांव का नाम है जो मोगा से १४ किलोमीटर पश्चिम में फरीदकोट ज़िले में है। इस स्थान पर गुरु जी के सांढू भाई साईं दास जी (माता दमोदरी जी की बहन माई रामो के पति) रहते थे। वह गुरु जी के बहुत श्रद्धालु थे। गुरु जी इस स्थान पर कई बार आकर ठहरे। जब गुरु जी सन् १६१३ ई: में डरौली रहे तो उनके ज्येष्ठ पुत्र बाबा गुरदित्ता जी का जन्म १५ नवम्बर १६१३ को वहीं हुआ था। फिर जब अमृतसर और श्री हरिगोबिंदपुर वाली लड़ाइयों में मुगल सेना की हार हो गई और गुरु जी को पता लगा कि शाही फौज की तरफ से अमृतसर पर बड़ा हमला हो सकता है तो वह अपने परिवार को लेकर फिर डरौली आ गए परन्तु इस दौरान १६२१ में गुरु जी के परिवार में माता दमोदरी जी, माता रामो जी, भाई साईं दास जी और गुरु जी की सास और ससुर साहिब का एक-एक करके थोड़े दिनों में ही देहांत हो गया। सो गुरु जी ने अपने परिवार को बाबा गुरदित्ता जी के साथ कीरतपुर भेज दिया और स्वयं भाई रूपा गांव चले गए।

१४९. प्रश्न - भाई रूपा गांव के बारे में संक्षेप जानकारी दो?

उत्तर - भाई रूपा का गांव रामपुरा फूल से १८ किलोमीटर उत्तर में बठिंडा ज़िला में है। भाई रूपा गुरु जी का बहुत श्रद्धालु था। इस कारण गुरु जी उस के पास रहे। गुरु जी ने इस गांव का नाम भाई रूपा के नाम पर रख कर वहां संगत के लिए लंगर चलाने की सेवा भाई रूपा को बख्शी। अब वहां एक गुरुद्वारा है जिस को गुरुद्वारा साहिब पातिशाही छः कहा जाता है, जिस के साथ एक लंगर दीवान भी है। अभी भी इस गुरुद्वारे की देख-रेख भाई रूपे की संतान ही करती है।

१५०. प्रश्न - शब्द चौंकी की मर्यादा कब और कैसे शुरू हुई?

उत्तर - जब गुरु हरिगोबिंद साहिब अमृतसर से डरौली भाई गांव चले गए थे तो संगत पीछे से विरह में आ गई। गुरु जी के लम्बे समय का विछोड़ा वह सहन न कर सकी थी। उस वक्त बाबा बुड्ढा जी ने सोदरु रहरासि के पाठ के बाद चौंकी साहिब की रीति चलाई, जो आज तक चलती आ रही है। इस अनुसार संगत निशान साहिब पकड़ कर सरोवर की परिक्रमा करते हुए हरिमन्दिर साहिब में आकर अरदास करती है कि हे सतिगुर जी! संगतों को दर्शन देकर निहाल करो। चौंकियों का ज़िक्र अरदास में भी आता है।

१५१. प्रश्न - लल्ला बेग से हुए युद्ध का वर्णन?

उत्तर - शाहजहां ने घोड़ों की चोरी के बाद लल्ला बेग को ३५००० फौज देकर गुरु जी को पकड़ कर घोड़ों समेत लाहौर लाने के लिए भेजा। इस लड़ाई में लल्ला बेग, उस के सेनापति, पुत्र और बहुत सारी सेना मारी गई। इस युद्ध में गुरु जी का दिलबाग घोड़ा भी मारा गया। इस जंग के शहीदों के संस्कार वाली जगह पर गुः गुरुसर रामपुरा फूल रेलवे स्टेशन से ३ मील दूर गांव महराज के पास स्थित है।

१५२. प्रश्न - गुरु जी के करतारपुर निवास के समय की जानकारी दो?

उत्तर - गुरु जी ने अपने परिवार को भाई रूपा गांव से ही करतारपुर भेज दिया था। गुरु ग्रंथ साहिब की तैयार की हुई पहली बीड़ भी परिवार के साथ करतारपुर भेज दी गई। जब करतारपुर की लड़ाई हुई तो उसकी विजय के बाद गुरु जी करतारपुर से कीरतपुर चले गए। बाकी सारा परिवार भी कीरतपुर चला गया, परन्तु गुरु जी का पौत्रा धीरमल पीछे करतारपर ही रह गया।

१५३. प्रश्न - गुरु जी कब और कहां ज्योति-ज्योत समाए?

उत्तर - गुरु जी ने अपनी ज़िंदगी के अंतिम १० वर्ष कीरतपुर साहिब में बिताए। आप जी इस स्थान पर ही ७ चेत्र सम्वत् १७०१ को ज्योति-ज्योत समाए। जहां आप ज्योति-ज्योत समाए थे, वहां अब गु: पातालपुरी बना हुआ है। इस गुरुद्वारे की महानता यह है कि सिक्ख अपने मृतकों की अस्थियां इस स्थान पर दरिया सतलुज में प्रवाह करने के लिए आते हैं।



सातवें नानक — गुरु हरि राय साहिब जी

१५४. प्रश्न - श्री गुरु हरि राय साहिब जी का जन्म कब और कहां हुआ? आप जी के माता-पिता कौन थे?

उत्तर - श्री गुरु हरि राय साहिब जी गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के पौत्रे और बाबा गुरदित्ता जी के सुपुत्र थे। आप जी ने माता निहाल कौर के गर्भ से १६ फरवरी १६२९ को कीरतपुर के स्थान पर अवतार लिया।

१५५. प्रश्न - गुरु हरि राय साहिब जी के विवाह और संतान के बारे में बताओ?

उत्तर - गुरु हरि राय साहिब जी का विवाह भाई दया राम जी की सुपुत्री बीबी कृष्ण कौर से हुआ। माता कृष्ण कौर जी के गर्भ से बाबा राम राय, बीबी रूप कौर और श्री हरि कृष्ण साहिब जी ने जन्म लिया जो बाद में ८वें गुरु बने।

१५६. प्रश्न - गुरु हरि राय जी को गद्दी कब और किस तरह मिली?

उत्तर - बाबा गुरदित्ता जी के सम्वत् १६८७ में ज्योति-ज्योत समाने के बाद उनके बड़े भाई धीरमल जी क़ो गद्दी इस लिए नहीं दी गई क्योंकि करतारपुर के युद्ध के समय धीरमल ने तुर्कों का साथ दिया था।

श्री हरि राय साहिब जी को गुरुगद्दी के योग्य समझ कर ५ सुदी चेत्र के सातवें दिन सम्वत् १७०१ को (८-३-१६४४) को कीरतपुर के स्थान पर तिलक लगाया गया।

१५७. प्रश्न - भाई भगतू जी कौन थे और उनका गुरु हरि राय जी के जीवन से क्या सम्बन्ध था?

उत्तर - भाई भगतू गुरु अर्जुन देव जी के समय से गुरु घर के प्रेमी थे। वह मालवा के इलाके में रहते थे परन्तु समय-समय पर गुरु जी को मिलने आते रहते थे। उन्होंने गुरु हरि राय साहिब के समय ही अपनी जीवन यात्रा समाप्त की। सातवें गुरु ने अपने हाथों से भाई भगतू की चिता को अग्नि भेंट किया। उस समय मालवे से आई हुई संगत ने गुरु हरि राय साहिब को मालवा आने का निमंत्रण दिया। भाई भगतू के पुत्र जीवन ने भी इस सम्बन्ध में विनती की। इस के बाद गुरु जी मालवा गए।

१५८. प्रश्न - चौधरी काला कौन था और उस की गुरु हरि राय साहिब से हुई मुलाकात का उल्लेख करो?

उत्तर - जब गुरु हरि राय साहिब महराज गांव में गए तो वहां का एक वासी चौधरी काला अपने भतीजों फूल और संदवी को साथ लेकर गुरु साहिब के दर्शनों के लिए आया। इस गांव के लोगों ने गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की तीसरे युद्ध में बहुत मदद की थी। जब फूल और संदवी ने गुरु साहिब के सामने खड़े होकर अपने पेट बजाए तो चौधरी काला ने बताया कि अपने पिता रूप चंद की मौत के बाद ये बच्चे अनाथ और बेआसरा हो गए हैं। ये पेट से भूखे हैं और रोटी का कोई साधन नहीं। गुरु महाराज ने बच्चों पर कृपादृष्टि की और उनको वरदान दिया कि उनकी संतान इस इलाके पर राज करेगी। बाद में बाबे फूल के नाम पर तीन फुलकियां रियास्तें सामने आईं। फूल का बड़ा पुत्र त्रिलोक सिंघ नाभा और जींद का व दूसरा बड़ा पुत्र राम सिंघ पटियाला का राजा बना।

१५९. प्रश्न - दारा शिकोअ कौन था और वह गुरु जी को किस सिलसिले में मिला था?

उत्तर - दारा शिकोअ बादशाह शाहजहां का बड़ा पुत्र और औरंगज़ेब का भाई था। वह औरंगज़ेब की ताकत से डरता हुआ लाहौर जा रहा था, रास्ते

में वह गुरु हरि राय साहिब से मिला था।

१६०. प्रश्न - जब औरंगज़ेब ने गुरु हरि राय साहिब जी को दिल्ली बुलाया तो क्या घटना हुई?

उत्तर - औरंगज़ेब जो कि हिन्दू धर्म का नाश करने पर तुला हुआ था, गुरु घर की प्रसिद्धी से खुश नहीं था। जब गुरु घर के साथ विरोध और ईर्ष्या रखने वाले दोषियों ने बादशाह के कान भरे और उस को यह बताया कि दारा शिकोअ की गुरु जी ने सहायता की है तो उन्होंने श्री हरि राय जी को दिल्ली बुला भेजा। गुरु जी स्वयं दिल्ली नहीं गए, इसलिए अपने ज्येष्ठ पुत्र श्री राम राय को दिल्ली भेज दिया।

१६१. प्रश्न - श्री राम राय जी ने दिल्ली जाकर क्या किया?

उत्तर - श्री राम राय जी को जिस उद्देश्य के लिए भेजा गया था उन्होंने उसके विपरीत औरंगज़ेब को खुश करने के लिए कई करामातें दिखाईं और गुरु नानक देव जी की बाणी की एक पंक्ति मिट्टी मुसलमान की जगह पर मिट्टी बेईमान की कह कर बदल दी। श्री राम राय जी के इस व्यवहार से गुरु हरि राय साहिब जी को बहुत दुख हुआ। औरंगज़ेब ने खुश होकर श्री राम राय को यमुना के किनारे पहाड़ों में रहने की सहूलियत दे दी।

१६२. प्रश्न - देहरादून का शहर किस ने बसाया?

उत्तर - जब औरंगज़ेब ने श्री राम राय को यमुना के किनारे पहाड़ों में रहने की इज़ाजत दी तो श्री राम राय जी ने अपने निवास स्थान के आस-पास एक शहर बसाया जिस को अब देहरादून कहते हैं।

१६३. प्रश्न - कुछ महत्त्वपूर्ण स्थानों के नाम बताएं जो कि श्री हरि राय साहिब जी के जीवन से जुड़े हुए हैं?

उत्तर - गुरु जी के जीवन से सम्बन्धित स्थान खडूर साहिब, गोइंदवाल, कीरतपुर, करतारपुर, फिरोज़पुर ज़िले में गांव महराज और भाई रूपा आदि हैं।



बाल गुरु– गुरु हरि कृष्ण साहिब जी

१६४. प्रश्न - श्री गुरु हरि कृष्ण साहिब जी का जन्म कब और कहां हुआ। आप जी के माता-पिता कौन थे?

उत्तर - श्री हरि कृष्ण साहिब जी श्री गुरु हरि राय साहिब जी के छोटे साहिबज़ादे थे। आप जी का जन्म सम्वत १७१३ सावण वदि १० (७-७-१६५६) को कीरतपुर में माता कृष्ण कौर जी के उदर से हुआ।

१६५. प्रश्न - गुरु हरि राय साहिब जी ने गद्दी अपने ज्येष्ठ पुत्र राम राय को न देकर श्री हरि कृष्ण जी को क्यों दी?

उत्तर - श्री राम राय जी जब औरंगज़ेब के दरबार में गए थे और उन्होंने गुरु नानक देव जी की बाणी मिट्टी मुसलमान की बजाए मिट्टी बेईमान की कह दिया था। इस के अलावा औरंगज़ेब को खुश करने के लिए कई करामातें भी दिखाईं जो सिक्ख धर्म के उसूलों के विरुद्ध थीं। सातवें गुरु साहिब ने श्री हरि कृष्ण जी को गुरुगद्दी के योग्य समझ कर उन्हें आठवें गुरु की पदवी प्रदान की। गुरु हरि कृष्ण साहिब को गुरयाई ७ अक्तूबर १६६७ को दी गई।

१६६. प्रश्न - श्री गुरु हरि कृष्ण जी दिल्ली क्यों गए और वहां क्या घटनाएं हुईं?

उत्तर - श्री गुरु हरि कृष्ण जी के गुरुगद्दी पर बैठने के बाद श्री राम राय जी ने अपने अधिकार के लिए बादशाह औरंगज़ेब के पास शिकायत की। औरंगज़ेब ने राजा जय सिंघ सवाई को कहा कि वह बालक गुरु को दिल्ली बुलाए। राजा जय सिंघ ने अपना एक वज़ीर पारस राम भेज कर गुरु जी को आदर सहित दिल्ली बुलाया। गुरु जी के साथ उनकी माता जी और कुछ सिक्ख सेवक भी आए। राजा जय सिंघ ने अपनी कोठी के बाग में, जो कि बंगला साहिब करके प्रसिद्ध थी, गुरु जी के रहने का प्रबंध किया। इस स्थान पर ही आज कल गुरुद्वारा बंगला साहिब दिल्ली में बना हुआ है।

१६७. प्रश्न - गुरु जी ने दिल्ली शहर में चेचक रोग से पीड़ित लोगों को कैसे राहत पहुंचाई?

उत्तर - जब गुरु जी दिल्ली पहुंचे तो वहां चेचक की बीमारी फैली हुई थी। गुरु जी ने एक ताल बनवाया जिस का पानी पीने के लिए लोगों को दिया। यह पानी गुरु जी के स्पर्श से अमृत बन गया। उस अमृत से कई लोगों के रोग दूर हो गए। यह ताल आज भी बंगला साहिब के स्थान पर है और लाखों श्रद्धालु इस में से चुला लेकर मन की शांति प्राप्त करते हैं। गुरु हरि कृष्ण जी द्वारा किए गए इस उपकार के कारण ही हम नित्य-प्रति अरदास में उनका ध्यान करते कहते हैः

गुरू हरिक्रिशन धिआईऐ जिस डिठे सभ दुख जाए।

१६८. प्रश्न - दिल्ली जाते हुए गुरु जी द्वारा पंजोखड़े के स्थान पर एक झीवर से गीता के अर्थ कराने वाली घटना का वर्णन करो?

उत्तर - कीरतपुर से दिल्ली जाते हुए अम्बाले के पास एक गांव पंजोखड़े में जब गुरु जी आराम करने के लिए ठहरे तो एक पंडित ने कहा कि यह छोटा-सा बाल कोई सामर्थ्या नहीं रखता। उस ने गुरु जी को गीता के अर्थ करके सुनाने को कहा। पंडित की यह बात सुन कर गुरु जी ने वहां रहते एक अनपढ़ छज्जू झीवर से गीता के अर्थ करवा कर पंडित को शर्मसार कर दिया। इस याद में वहां एक गुरुद्वारा पंजोखड़ा साहिब है।

१६९. प्रश्न - श्री गुरु हरि कृष्ण जी ने शरीर त्यागने से पहले गुरुगद्दी का प्रबन्ध कैसे किया?

उत्तर - जब गुरु हरि कृष्ण साहिब दिल्ली में थे तो आप को छूत रोग चेचक ने बीमार कर दिया। इस बीमारी के कारण ही आप को यह शरीर त्यागना पड़ा। गुः बाला साहिब दिल्ली में आप के ज्योति-ज्योत समाने का स्थान है। जब सेवादारों ने आप को गुरुगद्दी के बारे में पूछा तो गुरु जी ने पांच पैसे और नारियल मंगवा कर परमात्मा का ध्यान करके उस को शीश झुका कर फुरमाया कि बाबा बकाले है। गुरु जी का इशारा बकाले में तप कर रहे तेग बहादुर जी की तरफ था जो कि गुरु हरि कृष्ण जी के दादा बाबा गुरदित्ता जी के छोटे भाई होने के नाते से उनके दादा लगते थे।



हिन्द की चादर—गुरु तेग बहादुर जी

१७०. प्रश्न - गुरु तेग बहादुर जी के जन्म, विवाह और संतान के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - जैसे कि ऊपर बताया जा चुका है कि श्री गुरु तेग बहादुर जी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के सुपुत्र थे। आप जी का जन्म वैसाख वदि पंचमी सम्वत् १६७८ (१-४-१६२१) को अमृतसर में हुआ था। आप जी का विवाह भाई लाल चंद की सुपुत्री गुजरी जी के साथ सम्वत् १६८९ को करतारपुर में हुआ। आप जी की एक ही संतान गोबिंद राय जी, जो बाद में दसम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बने।

१७१. प्रश्न - गुरु हरि कृष्ण जी के बाबा बकाले की तरफ इशारा करने के बाद बकाले में क्या स्थिति बनी?

उत्तर - बकाले का स्थान ब्यास-बटाला रोड पर है। श्री तेग बहादुर जी इस स्थान पर भूमिगत होकर प्रभु का नाम जपा करते थे। जिस वक्त संगत को पता चला कि नौवें गुरु बाबा बकाले हैं तो आस-पास से गुरु जी के दर्शन करने के लिए संगतें बकाले पहुंचीं, परन्तु बकाले में २२ गद्दियां लगा कर झूठे गुरु बने बैठे लोग संगतों को भ्रम में डालने लगे। इन बनावटी गुरुओं के मसंद संगतों को घेर-घेर कर उन के पास ले जाते और भेंट ले लेते थे। हर किसी के बारे में यह कहा जाता था कि बकाले वाले बाबा जी यही हैं। कई महीने संगतें असली गुरु की तलाश में परेशान रहीं।

१७२. प्रश्न -बकाला गांव में २२ गद्दियां लगाने वाले झूठे गुरुओं में प्रमुख कौन थे?

उत्तर - इन में से प्रमुख श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के पुत्र बाबा गुरदित्ता जी के पुत्र श्री धीरमल जी थे। धीरमल ने करतारपुर पर कब्ज़ा किया हुआ था और गुरु ग्रंथ साहिब जी की बीड़ भी अपने पास रखी हुई थी। अपने पिता बाबा गुरदित्ता जी के ज्योति-ज्योत समाने के बाद वह अपने आप को

गुरुगद्दी का उत्तराधिकारी समझते थे। धीरमल जी के पास गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ होने के कारण संगतें बीड़ साहिब के दर्शन करने के लिए आती थीं।

१७३. प्रश्न - गांव बकाला में श्री गुरु तेग बहादुर जी को असली गुरु के रूप में किस ने और कैसे ढूंढा?

उत्तर - गुरु जी की खोज करने वाला सिक्ख मक्खण शाह लुभाना एक सौदागर था। जब उस का जहाज़ डूबने लगा तो उस ने गुरु महाराज जी के पास विनती की थी कि अगर वह बच जाए तो ५०० मोहरें गुरु जी को भेंट करेगा। उसकी विनती प्रवान हुई, परन्तु जब वह अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर ५०० मोहरें लेकर बकाला पहुंचा तो उस ने देखा कि वहां कई गुरु बैठे थे। उस ने हर गुरु के आगे २-२ मोहरें भेंट कीं तो श्री तेग बहादुर जी ने उस को वायदे अनुसार ५०० मोहरें याद करवाईं। आप ने यह भी बताया कि किस तरह परमात्मा ने उस के डूबते जहाज़ को किनारे लगाया था। यह सारी बात सुन कर मक्खण शाह लुभाने को निश्चय हो गया कि असली गुरु यही हैं। उस ने कोठे पर चढ़ कर "गुरु लाधो रे-गुरु लाधो रे" की घोषणा करके संगतों को असली गुरु की तरफ मोड़ा।

१७४. प्रश्न - श्री तेग बहादुर जी ने गुरु बनने के बाद किस स्थान की यात्रा की?

उत्तर - गुरु जी मक्खण शाह की विनती पर अमृतसर दर्शन स्नान के लिए गए, परन्तु उस वक्त श्री हरिमन्दिर साहिब पर भी स्वयंभू गुरु का कब्ज़ा होने के कारण उनको हरिमन्दिर साहिब के अंदर नहीं जाने दिया गया। गुरु तेग बहादुर जी परिक्रमा के बाहर एक चबूतरे पर बैठ गए। जहां गुरुद्वारा थड़ा साहिब सुभायमान है। इस के बाद आप ने शहर से बाहर एक स्थान पर दम लिया और इस स्थान पर गुः दमदमा साहिब इस बात की पुष्टि करता है। एक और स्थान गांव वल्ले से बाहर जहां गुरु जी को एक श्रद्धालु माई ने विश्राम करवाया था और खाने-पीने की सेवा की थी, वहां आज कल गुः कोठा साहिब नाम से प्रसिद्ध है।

१७५. प्रश्न - श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के अमृतसर आगमन समय श्री हरिमन्दिर साहिब के दरवाज़े बंद करने वाले लोग कौन थे?

उत्तर - उस समय दरबार साहिब पर श्री हरि जी का कब्ज़ा था। श्री हरि जी पृथी चंद जी के पौत्रे थे और श्री पृथी चंद गुरु अर्जुन देव जी के

बड़े भाई थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के अमृतसर से कीरतपुर साहिब जाने के बाद पृथी चन्द के परिवार का अमृतसर पर कब्ज़ा हो गया था क्योंकि श्री हरि राय और गुरु हरि कृष्ण जी अमृतसर कभी नहीं आए थे। इस करके मेहरबान और हरि जी गद्दीदार प्रबंधक बन गए थे। वह गुरु जी के प्रवेश के खिलाफ थे ताकि संगतें गुरु जी की तरफ न हो जाएं।

१७६. प्रश्न - अमृतसर के बाद गुरु तेग बहादुर जी कहां गए?

उत्तर - अमृतसर के बाद गांव बकाला वापस आकर श्री गुरु तेग बहादुर जी कीरतपुर साहिब गए, परन्तु वहां भी गुरु जी के बड़े भाई सूरज मल के पौत्रे गुलाब राय और श्याम चंद ने आप के साथ ईर्ष्यालु व्यवहार किया। गुरु साहिब ने एक बड़ी ही शांत जगह गांव माखोवाल में अपने लिए ढूंढ ली और वहां रहने लगे।

१७७. प्रश्न - गांव माखोवाल के बारे में आवश्यक जानकारी दो?

उत्तर - गांव माखोवाल कीरतपुर से कुछ ही दूरी पर है। यह एक उजड़ा हुआ गांव था जिस पर गुरु जी ने सम्वत् १७२२ को (सन् १६६५) आनंदपुर साहिब की नींव रखी। आनंदपुर साहिब का पहला नाम चक्क नानकी गुरु तेग बहादुर जी की माता जी के नाम पर था।

१७८. प्रश्न - गुरु तेग बहादुर साहिब ने और किन जगहों की यात्रा की और उन यात्राओं का क्या उद्देश्य था?

उत्तर - गुरु जी आगरा, इटावा के रास्ते होते हुए इलाहाबाद पहुंच गए। इस स्थान पर, जिस को उस समय प्रयागराज कहा जाता था, गुरु जी ने ६ महीने निवास किया। उसी याद में इस शहर में मुहल्ला अहियापुर में 'पक्की संगत' के नाम से एक गुरुद्वारा सुशोभित है। इस के बाद गुरु जी काशी गए और बाद में गया और पटना में निवास किया। गुरु जी माता नानकी को अपने महल पटना में ठहरा गए और स्वयं ढाका चले गये। ढाका से फिर धूबड़ी गए; धूबड़ी के स्थान पर उनको एक आसामी राजा मिलने के लिए आया, जिस के घर कोई संतान नहीं थी। जब गुरु जी के वरदान से उस के घर पुत्र हुआ तो वह आनंदपुर साहिब गुरु जी को मिलने के लिए गया था।

१७९. प्रश्न - *बाबा सूरज मल कौन थे और वह गुरु तेग बहादुर जी से क्यों ईर्ष्या करते थे?*

उत्तर - बाबा सूरज मल गुरु तेग बहादुर जी के बड़े भाई थे और जब गुरु जी को गुरयाई मिली तो बाबा सूरज मल जी के पौत्रे गुलाब राय और श्याम चंद गुरु जी से ईर्ष्या करने लगे। इस ईर्ष्या के कारण ही गुरु जी ने कीरतपुर छोड़ दिया और गांव माख़ोवाल जाकर डेरा लगा लिया। गांव माखोवाल एक उजड़ा हुआ गांव था और इस स्थान पर गुरु जी ने एक नगर बसाया जो आनंदपुर साहिब के नाम पर प्रसिद्ध हो गया।

१८०. प्रश्न - *क्या ईर्ष्या करने वालों ने गुरु जी को आनंदपुर साहिब में शांति से रहने दिया?*

उत्तर - गुरु जी केवल छः महीने ही आनंदपुर साहिब में रहे और उस के बाद ईर्ष्यालुओं से दूर अपनी माता नानकी जी, पत्नी गुजरी जी, उनके भाई कृपाल चंद जी अन्य श्रद्धालुओं के साथ प्रचार करने के लिए यात्रा पर निकल गए।

१८१. प्रश्न - *राजा राम सिंघ कौन थे? उन की आसाम के कामरूप परगने के राजे से क्या दुश्मनी थी?*

उत्तर - कामरूप परगने का राजा औरंगज़ेब की दिल्ली सरकार को मामला नहीं भेजता था, इसलिए औरंगज़ेब ने राजा राम सिंघ जयपुरिए को उस पर हमला करने के लिए भेजा। गुरु जी उस समय वहां विराजमान थे और उन्होंने दोनों राजाओं की संधि करवा दी। इस के बाद गुरु जी धूबड़ी के बाद ढाका, चिट्टाकांग आदि शहरों और नगरों की संगतों को नाम का उपदेश देकर कलकत्ता और जगन्नाथपुरी होते हुए पटना वापस आ गए। पटना से बनारस, अयोध्या, लखनऊ, मथरा और लखनौर होते हुए आनंदपुर साहिब वापस पहुंच गए।

१८२. प्रश्न - *आनंदपुर साहिब में गुरु जी के दरबार में आए कशमीरी पंडितों की व्यथा बयान करो?*

उत्तर - जब औरंगज़ेब ने हिन्दुओं पर ज़ुल्म करके उनको ज़ब्री मुसलमान बनाना शुरू कर दिया तो हर इलाके में उस के हाकमों ने हिन्दुओं का जीना दुश्वार कर दिया। कशमीर में औरंगज़ेब के हाकम शेर अफगान

खान ने लोगों को इतना सताया कि कशमीरी पंडित अपनी फरियाद लेकर गुरु तेग बहादुर साहिब के पास आए। पंडितों के इस समूह का नेता पंडित किरपा राम था। जब गुरु तेग बहादुर जी उनकी फरियाद सुन कर इस नतीजे पर पहुंचे कि किसी महापुरुष की कुर्बानी ही इस ज़ुल्म को रोक सकती है तो उनके पुत्र गोबिंद राय ने यह कहा कि गुरु जी से बड़ा और कौन-सा महापुरुष है; और कशमीरी पंडितों का मामला हल कर दिया। उन्होंने पंडितों को कहा कि वह औरंगज़ेब को कह दें कि अगर वह गुरु जी को मुसलमान बना ले तो वह भी मुसलमान हो जाएंगे।

१८३. प्रश्न - औरंगज़ेब ने गुरु जी को क्या कहा, जिस कारण आपको कुर्बानी देनी पड़ी?

उत्तर - औरंगज़ेब ने गुरु जी को मुसलमान बनने के लिए कहा और यह भी कहा कि वह कोई करामात करके दिखाएं। गुरु जी ने उस की कोई भी बात मानने से इन्कार कर दिया। इस उपरांत गुरु जी का शीश देह से अलग करके उनको शहीद कर दिया गया।

१८४. प्रश्न - गुरु तेग बहादुर जी की शहीदी कब और कहां हुई? क्या उनके साथ किन्हीं और सिक्खों को भी शहीद किया गया?

उत्तर - गुरु जी को दिल्ली के चांदनी चौक में ११ नवंबर १६७५ को शहीद कर दिया गया। आज कल इस स्थान पर गुः शीश गंज बना हुआ है। उस समय गुरु जी के साथ गए तीन सिक्खों को भी शहीद कर दिया गया। उनके नाम थेः भाई मती दास, भाई सती दास और भाई दयाला जी। इन तीनों सिक्खों को गुरु जी से एक दिन पहले १० नवम्बर १६७५ को शहीद किया गया था। भाई मती दास जी को आरे से चिरवा दिया गया परन्तु वह बहुत ही शांति से जपु जी साहिब पढ़ते हुए शहीद हुए। भाई सती दास जी भाई मती दास जी के छोटे भाई थे। इन को रुई में लपेट कर आग लगा कर शहीद कर दिया गया। भाई दयाला जी को कड़ाहे में उबाल कर शहीद कर दिया गया।

१८५. प्रश्न - गुरु जी के शीश और देह का किस तरह संस्कार किया गया?

उत्तर - गुरु तेग बहादुर जी का शीश भाई जैता जी मुगल पहरेदारों की नज़र से बचा कर उठा ले गए थे। गुरु जी के शीश का संस्कार आनंदपुर

साहिब में किया गया। इस स्थल पर स्थित गुरुद्वारे का नाम भी शीश गंज प्रसिद्ध है। भाई जैता जी बाद में अमृत पीकर जीवन सिंघ जी कहलाए और गुरु जी के साथ ही रहे। देह उठाने की सेवा मक्खण शाह लुभाने के भाई बन्दू परिवार ने की। जब ज़ोर की आंधी आई तो पहरेदारों की नज़र से बचा कर देह को अपने गड्डे पर रख कर यह परिवार पुरानी दिल्ली की दक्षिण दिशा, जहां उनकी झौंपड़ियां थीं, में ले गया। वहां जाकर उन्होंने अपनी झौंपड़ियों को जला कर शरीर का संस्कार भी कर दिया। अब यहां स्थित गुः रकाब गंज उस सिक्ख परिवार की याद करवाता है।

१८६. प्रश्न - गुरु तेग बहादुर जी की रची हुई बाणी का उल्लेख करो?

उत्तर - गुरु तेग बहादुर जी की रची हुई बाणी बाद में गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरु ग्रंथ साहिब जी की बीड़ के अंत में शामिल कर ली थी। उस में ११६ शब्द और सलोक हैं। गुरु तेग बहादुर साहिब जी ने रागु जैजावंती में भी बाणी रची और इस रागु में सिर्फ उनकी ही बाणी गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित है। आप जी की बाणी वैरागमई है और ज़िन्दगी की असलियत को समझने और मौत को मन में बसाने का संदेश देती है। आप जी के सलोक यह संदेश देते हैं कि इन्सान को न किसी को डराने की और न किसी से डरने की ज़रूरत है। आप जी कहते हैं:

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आनि॥

१८७. प्रश्न - गुरु तेग बहादुर साहिब जी की शहीदी के बारे नीचे लिखी पंक्तियां किस की हैं?

धरम हेत साका जिनि कीआ॥ सीसु दीआ पर सिररु न दीआ॥
नाटक चेटक कीए कुकाजा॥ प्रभु लोगन कह आवत लाजा॥ १४॥

. . . .

तेग बहादुर के चलत भयो जगत को सोक॥
है है है सब जग भयो जै जै जै सुरलोक॥ १६॥

उत्तर - ये पंक्तियां उनके सुपुत्र गुरु गोबिंद सिंघ जी की हैं जो उन्होंने अपने पिता जी की कुर्बानी बयान करते हुए अपनी आत्म-कथा बचित्र नाटक में कही हैं।



खालसा पंथ के संस्थापक —गुरु गोबिंद सिंघ जी

१८८. प्रश्न - गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म कब और कहां हुआ? आप जी का शुरू में क्या नाम था?

उत्तर - गुरु गोबिंद सिंघ, जिन का पहला नाम गोबिंद राय था, का जन्म पौष सुदी सप्तमी सम्वत् १७२३ (२२ दिसंबर १६६६) को श्री गुरु तेग बहादुर जी के गृह माता गुजरी जी के उदर से पटना साहिब शहर बिहार में हुआ।

१८९. प्रश्न - गुरु तेग बहादुर साहिब आनंदपुर से पटना किस लिए गए थे?

उत्तर - गुरु तेग बहादुर धर्म प्रचार के दौरे पर थे। माता गुजरी जी भी उन के साथ थे। पटना के निवास स्थान पर परिवार और कुछ सेवकों को छोड़ कर गुरु तेग बहादुर ढाका गए हुए थे, जब बालक गोबिंद राय का जन्म हुआ।

१९०. प्रश्न - गुरु तेग बहादुर साहिब ने गुरु गोबिंद सिंघ को पहली बार कब और किस स्थान पर देखा?

उत्तर - गुरु गोबिंद सिंघ के जन्म पर उनके पिता गुरु तेग बहादुर साहिब ढ़ाका की यात्रा पर थे। वैसे तो विद्वानों में इस बात पर मतभेद हैं कि गुरु जी ने बाल गोबिंद राय को पहले कहां देखा, परन्तु ज़्यादातर मत यह हैं कि गुरु तेग बहादुर साहिब अपने पुत्र गोबिंद राय को पटना साहिब ही मिले थे। पटना साहिब स्थित गुः गुरु का बाग इस बात का सबूत है। कहा जाता है कि जब गुरु गोबिंद सिंघ करीब ४ वर्ष के थे, तब गुरु तेग बहादुर साहिब जी रहीम बख़्श और करीम बख़्श के बाग में आए और वहां पर पहली बार पिता और पुत्र (गुरु साहिबान) का मेल हुआ।

१९१. प्रश्न - गुरु गोबिंद सिंघ द्वारा पटना में अपने बालपन के बिताए हुए समय की जानकारी दो?

उत्तर - गुरु गोबिंद सिंघ ने अपने जीवन के कम से कम पहले ६ वर्ष पटना

साहिब में बिताए। आप के बचपन के बारे में सिक्ख साहित्य में कई तरह की कहानियां प्रचलित हैं। एक कहानी मुसलमान फकीर सय्यद भीखण शाह से जुड़ी हुई है, जिनको एक दिव्य बालक के संसार में अवतार धारण करने के बारे में भविष्यवाणी हुई और वह दूर से पटना साहिब में उनके दर्शनों के लिए आए। एक और कहानी उस पंडित की है जिस के पूजा के लड्डू थाल में से उठा कर गुरु जी बचपन में खा जाया करते थे और एक दिन उसकी इच्छा अनुसार उसको भगवान राम बन कर दर्शन दिए। गुरुद्वारा बाल लीला मैणी संगत जो कि जन्म स्थान के पास गली में है, गुरु जी के बचपन की एक और गाथा बताता है जिस के अनुसार इस स्थान पर राजा फतह चंद मैणी और उसकी पत्नी निःसंतान रहते थे। आप गुरु घर के प्रेमी थे। एक दिन गुरु जी फतह चंद की पत्नी की गोद में आकर बैठ गए और कुछ खाने को मांगा। फतह चंद की पत्नी को बहुत अच्छा लगा और उसने उबले हुए चने बालक गोबिंद राय को दिए। अब भी इस गुरुद्वारे में चनों का प्रसाद ही दिया जाता है। एक और कहानी कंगन खो जाने की है, जिस के अंतर्गत गुरु जी ने दूसरा कंगन दरिया में फैंक कर बताया था कि कंगन यहां पर खोया हुआ है। इस तरह की बहुत-सी कहानियों से पता चलता है कि गुरु जी ने बचपन में ही अपने प्यार भरे स्वभाव से सब का मन मोह लिया था।

१९२. प्रश्न - गुरु गोबिंद सिंघ के विवाह के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - गुरु गोबिंद सिंघ जी के तीन विवाह हुए। आप का पहला विवाह माता जीतो जी से २१ जून १६७७ को हुआ। माता जीतो जी लाहौर निवासी भाई हरजस जी की सुपुत्री थीं। भाई हरजस जी चाहते थे कि बारात लाहौर आए, परन्तु गुरु तेग बहादुर जी की शहादत के कारण विवाह गांव बसंतगर में (आनंदपुर साहिब के पास) करना पड़ा। विवाह वाला स्थान बाद में गुरु का लाहौर कहलाया। माता जीतो जी ने खालसा पंथ की सृजना के समय अमृत में पतासे घोले थे।

गुरु जी का दूसरा विवाह लाहौर निवासी राम शरण कुमार खत्री की सुपुत्री सुंदरी जी के साथ सम्वत् १७४१ में आनंदपुर साहिब में हुआ।

गुरु जी का तीसरा विवाह रोहतास निवासी रामू बंसी की सुपुत्री माता साहिब देवां जी से सम्वत् १५५४ में आनंदपुर साहिब में हुआ।

१९३. प्रश्न - जब कशमीर के फरियादी गुरु तेग बहादुर साहिब के पास फरियाद लेकर आए तो बाल गोबिंद राय ने क्या कहा?

उत्तर - अपने पिता को चिंतायुक्त देख कर जब बाल गोबिंद ने कारण पूछा तो गुरु जी ने बताया कि कशमीर में औरंगज़ेब के हाकिम शेर अफगान खान द्वारा उत्पीड़ित हुए इन लोगों की कहानी बड़ी दर्दनाक है। इनकी समस्या तभी हल हो सकती है अगर कोई महापुरुष कुर्बानी दे। बाल गोबिंद राय तुरन्त बोले कि ऐसे महापुरुष तो केवल गुरु तेग बहादुर जी ही हैं। गुरु तेग बहादुर जी ने यह उत्तर सुन कर कशमीरी पंडितों की मदद करने का फैसला कर लिया।

१९४. प्रश्न - जब भाई जैता जी गुरु तेग बहादुर जी का शीश लेकर आनंदपुर साहिब आए तो गुरु गोबिंद सिंघ जी का क्या आशीर्वाद था?

उत्तर - भाई जैता जी से गुरु जी की शहीदी की सारी व्यथा सुनने के बाद गुरु जी ने भाई साहिब को अपने अंग लगाया और गुरु के बेटे की उपाधि से सम्मानित किया। गुरु जी वैसे तो ऊपर से शांत रहे परन्तु मन में ज़ालिम मुगल हकूमत को खत्म करने का निश्चय कर लिया।

१९५. प्रश्न - गुरु गोबिंद सिंघ जी को गद्दी का तिलक कब और किस ने लगाया?

उत्तर - गुरु गोबिंद सिंघ जी को गद्दी का तिलक नवंबर १६७५ में भाई राम कुइर जी ने लगाया। भाई राम कुइर जी बाबा बुड्ढा जी के पड़पौत्रे थे।

१९६. प्रश्न - गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मुगल राज्य के ज़ुल्म के खिलाफ टक्कर लेने के लिए क्या कदम उठाए?

उत्तर - गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों को अपनी रक्षा के लिए शस्त्रयुक्त होने के आदेश दिए। उन्होंने स्वयं भी अलग-अलग युद्ध कौशल— तीर अंदाज़ी, तलवारबाज़ी, घुड़सवारी, तैराकी आदि में निपुणता हासिल की। आप शिकार खेलने भी जाते थे। सारे सिंघों के लिए व्यायाम नित्य कर्म रखा गया। किले बनाने शुरू कर दिए। एक नगारा, जिस को 'रणजीत नगारा' कहते थे, बनाया गया जो कि शिकार पर जाने के समय बजाया जाता था। थोड़े से समय में ही एक छोटी-सी फौज तैयार हो गई। इस फौज में साढौरे के पीर बुद्धू शाह के कहने पर गुरु जी ने वह ५०० पठान भी शामिल कर

लिए जिनको औरंगज़ेब ने अपनी फौज में से निकाल दिया था।

१९७. प्रश्न - गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गद्दी पर बैठने के बाद धार्मिक कामों का संचालन किस तरह किया?

उत्तर - गुरु गोबिंद सिंघ जी ने वैसे तो ज़ुल्म के खिलाफ लड़ाई के लिए तैयारी शुरू कर दी थी, परन्तु उन्होंने धर्म के काम में किसी तरह की कोताही नहीं आने दी। दोनों समय सजाए गए दीवान में संगतों को गुरु साहिबान की तरफ से बताए गए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी जाती थी। गुरु का लंगर भी अटूट चलता था। धीरे-धीरे संगत गुरु जी के दर्शनों को आने लगी तथा आनंदपुर साहिब में और बाहर गुरु जी की कीर्ति फैल गई।

१९८. प्रश्न - गुरुगद्दी पर बैठते समय गुरु जी की आयु सिर्फ ९ वर्ष की थी, इस छोटी आयु में आप का मार्गदर्शन किस ने किया?

उत्तर - इस आयु में गुरु जी का मार्गदर्शन उनके मामा कृपाल चंद ने किया।

१९९. प्रश्न -गुरु गोबिंद सिंघ जी की उस समय कितनी आयु थी जब वह पहली बार आनंदपुर साहिब आए? उस के बाद गुरु गोबिंद सिंघ जी कितना समय आनंदपुर में रहे?

उत्तर - उस समय गुरु जी केवल ७ वर्ष के थे जब वह अपने परिवार के साथ आनंदपुर साहिब आ गए। गुरु जी आनंदपुर साहिब में सन् १६७२ से १६८५ तक रहे। जब पहाड़ी राजाओं से टकराव के लक्षण नज़र आए तो गुरु गोबिंद सिंघ जी नाहन के राजा मेदनी प्रकाश के बुलावे पर नाहन राज्य में चले गए और वहां यमुना किनारे एक रमणीक स्थान चयन कर अपना डेरा स्थापित कर लिया। इस स्थान को बाद में पाऊंटा साहिब का नाम दिया गया। इस अनुपम दृश्यों से भरपूर एकांत स्थान पर गुरु जी ने बहुत समय साहित्य अध्ययन, भाषाओं का अध्ययन और प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन में बिताया। गुरु जी ने अपनी कई रचनाएं भी इसी स्थान पर ही रचीं।

२००. प्रश्न -पहाड़ी राजे कौन थे और उनकी गुरु जी के साथ क्या दुश्मनी थी?

उत्तर - गुरु तेग बहादुर जी ने शिवालिक की पहाड़ियों में आनंदपुर साहिब का इलाका वहां के राजे से ज़मीन खरीद कर बसाया था। सारे

शिवालिक इलाके में तकरीबन २२ रियास्तें थीं और इन रियास्तों के राजे, जो कि २२ धार के राजे कहलाते थे, आपस में एक-दूसरे से लड़ते रहते थे। इनमें से प्रमुख कहलूर का भीमचंद, श्रीनगर का फतह चंद और नाहन का मेदनी प्रकाश था। गुरु जी की गतिविधियां उनके पुराने विश्वासों से मेल नहीं खाती थीं। जब गुरु जी ने सिक्खों को शस्त्रयुक्त रहने के लिए कहा और अपने आप को व उनकी तंदरुस्ती के लिए व्यायाम करने को कहा तब पहाड़ी राजे उनसे ईर्ष्या करने लगे। भीम चंद इन सभी राजाओं का नेतृत्व कर रहा था। उसने गुरु जी के विरुद्ध दूसरे राजाओं को अपने साथ मिलाना शुरू कर दिया और बड़ा लश्कर लेकर गुरु जी पर चढ़ाई कर दी। उस समय गुरु जी पाऊंटे से अपने साथियों के साथ आगे बढ़े और भंगाणी नामक स्थान पर दोनों पक्षों में टक्कर हुई।

२०१. प्रश्न - भंगाणी के युद्ध के बारे में जानकारी दो। इस का नतीजा क्या निकला?

उत्तर - जब पहाड़ी राजाओं ने गुरु जी पर हमला किया तो गुरु जी पाऊंटा से १० किलोमीटर आगे आकर भंगाणी के स्थान पर उनके साथ लड़े। वैसे तो इस युद्ध में कुछ पठान और साधु गुरु जी का साथ छोड़ गए परन्तु गुरु जी के साथियों ने बड़ी बहादुरी से युद्ध किया और पहाड़ी राजाओं को हराया। गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बचित्र नाटक में इस युद्ध का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। गुरु जी की तरफ से लड़ने वालों में शहीद हुए लोगों में पीर बुद्धू शाह के दो पुत्र और गुरु जी के बुआ के पुत्र संघोशाह भी शामिल थे।

२०२. प्रश्न - पीर बुद्धू शाह जी कौन थे? उनके गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ क्या सम्बन्ध थे?

उत्तर - पीर बुद्धू शाह साढौरे के एक बहुत ही हरमन प्यारे पीर थे। आप जी का गुरु घर से बहुत प्यार था। जब गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सेना इक्ट्ठी करनी शुरू कर दी तो पीर बुद्धू शाह जी ने ५०० पठान उनकी सेना में भर्ती करवाए। भंगाणी के युद्ध के समय जब पठान गुरु गोबिंद सिंघ जी को धोखा दे गए तो पीर बुद्धू शाह जी स्वयं अपने दो पुत्रों और मुरीदों समेत गुरु जी की तरफ से लड़ने के लिए आए। इस युद्ध में पीर बुद्धू शाह के दो पुत्र शहीद हो गए। इस के बावजूद भी पीर बुद्धू शाह ने कुछ गिला नहीं किया। जब गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पीर बुद्धू शाह को कोई उपहार लेने को कहा तो पीर

जी ने बड़ी नम्रता से जवाब दिया कि गुरु जी मुझे सिर्फ अपने कंघे के साथ लगे पवित्र केस दे दें। पीर बुद्धू शाह सचमुच में गुरु गोबिंद सिंघ जी को सिदक और श्रद्धा से पूजते थे।

२०३. प्रश्न - गुरु गोबिंद सिंघ जी ने और कितनी लड़ाईयां लड़ीं जिनका ज़िक्र बचित्र नाटक में आता है?

उत्तर - ऐसे दो और युद्ध नादौन और हुसैनी के हैं जिनका ज़िक्र गुरु जी ने अपनी आत्म-कथा में किया है। भंगाणी के युद्ध के बाद जब गुरु जी वापस आनंदपुर साहिब आए तो उन्होंने पहाड़ी राजाओं के खतरों को देखते हुए किले बनवाए। इस दौरान मुगल राज्य को निश्चत थी हुई रकम न देने के कारण मुगल हकूमत ने पहाड़ी राजाओं पर हमला कर दिया। पहाड़ी राजाओं ने गुरु जी से मदद मांगी, जिस के लिए गुरु जी मान गए। पहाड़ी राजाओं और मुगल सेना के बीच नादौन के स्थान पर युद्ध हुआ, जिस में मुगल सेनापति अलफ खान की हार हुई और वह भाग गया। गुरु जी ने इस युद्ध के अंतिम समय का वर्णन इस तरह किया है:

भज्जयो अलफ खानं न खाना संभारियो॥ भजे और बीरं न धीरं बिचारियो।
नदी पै दिनं असट कीने मुकामं॥ भली भाति देखे सबै राज धामं॥ २२॥

हुसैनी का युद्ध २० फरवरी १६९६ को मुगल सेना और सिक्खों में हुआ। इस में मुगल जरनैल हुसैन खान की हार हुई। इस लड़ाई में हुई जीत को देखते हुए गुरु जी ने परमात्मा का धन्यवाद नीचे लिखे शब्दों में किया जो बचित्र नाटक में दर्ज है :-

चौपई - ***जीत भई रन भयो उझारा॥ सिम्रित करि सभ घरों सिधारा॥***
राखि लीयो हम को जगराई॥ लोह घटा अन ते बरसाई॥ ६९॥

२०४. प्रश्न - गुरु गोबिंद सिंघ द्वारा आनंदपुर में बनाए गए किलों के नाम बताओ?

उत्तर - आनंदगढ़, केसगढ़, लोहगढ़ और फतहगढ़।

२०५. प्रश्न - इन लड़ाइयों के बाद मुगल शासन से टक्कर लेने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए गुरु जी का अगला कदम कौन-सा था?

उत्तर - गुरु जी ने महसूस किया कि हिन्दू कौम बहुत कमज़ोर हो चुकी थी। ब्राह्मण पंडित उनको भ्रम और आशंका में डाले रखते थे। गुरु जी कुछ

ऐसा कौतुक रचना चाहते थे, जिस से मरी हुई कौम में फिर से जान डाली जा सके। उनके इस विचार का ही नतीजा था कि उन्होंने ३० मार्च १६९९ को वैसाखी वाले दिन खालसा पंथ का सृजन किया। इस संबंध में गुरु जी ने एक विशाल दीवान में नंगी तलवार पकड़ कर संगत में से एक सिर की मांग की। बहुत सारे लोग डर गए और कुछ लोगों को गुरु जी के इस व्यवहार पर हैरानी भी हुई परन्तु जब गुरु जी ने दो-तीन बार अपनी मांग दोहराई तो लाहौर का एक खत्री दया राम उठा और उसने अपने आप को कुर्बानी के लिए पेश किया। गुरु जी उस को स्टेज़ के साथ लगे तम्बू में ले गए। तम्बू में से तलवार चलने की आवाज़ आई और कुछ समय बाद गुरु जी खून से भीगी हुई तलवार लेकर बाहर आए तथा एक और सिर की मांग करने लगे। इस बार दिल्ली के एक जाट धर्म चंद ने अपने आप को कुर्बानी के लिए पेश किया। गुरु जी पहले की भांति ही उस को भी तम्बू में ले गए और फिर सिर कटने की आवाज़ आई। गुरु जी दोबारा ताज़ा खून से भरी तलवार लेकर स्टेज़ पर प्रकट हुए। इस तरह से तीन और सिर मांगे गए और क्रमवार द्वारका के एक धोबी मोहकम चंद, जगन्नाथ के रसोईए हिम्मत राम और बिदर के नाई साहिब चंद ने अपने आप को कुर्बानी के लिए पेश किया। ऐसा करने के बाद गुरु जी पांचों सिंघों को सुंदर पौशाकें पहना कर स्टेज़ पर लाए। उनको पांच प्यारों की उपाधि प्रदान की गई और खण्डे-बाटे का अमृत तैयार करके पिलाया गया। पांच प्यारों को अमृत पिलाने के बाद गुरु जी ने स्वयं उनसे अमृत ग्रहण किया और अपने आप को गोबिंद राय से गोबिंद सिंघ बना लिया। गुरु जी के इस अमृत पिलाने और फिर स्वयं अमृत पीने के कौतुक की दुनिया में कोई मिसाल नहीं मिलती। भाई गुरदास दूजे ने तब ही कहा:

वह प्रगटिओ मरद अगंमड़ा वरीआम इकेला॥
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला॥

२०६. प्रश्न - जिस समय गुरु जी ने खालसा पंथ का सृजन किया और पांच प्यारे सजाए उस समय कितना इक्ट्ठ था? क्या बाद में और लोगों ने भी अमृत-पान किया?

उत्तर - कहा जाता है कि उस समय करीब ८०,००० लोग दीवान में उपस्थित थे। गुरु जी द्वारा संगत के सामने पांच प्यारे पेश करने के बाद कई

हज़ार लोगों ने अमृत-पान किया और इस तरह गुरु जी ने एक धार्मिक फौज़ तैयार कर ली।

२०७. प्रश्न - गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने प्यारों को क्या हिदायतें दीं?

उत्तर - गुरु जी ने उनको अपने नाम के साथ 'सिंघ' शब्द लगाने को कहा और पांच ककारों से सुशोभित कर दिया। ये पांच ककार थेः केस - जिसको गुरु जी ने गुरु की मोहर कहा; केसों को साफ रखने के लिए कंघा; अपनी पवित्रता, जत-सत बरकरार रखने के लिए कछहरा; शुभ कर्म करने के लिए अपने आप को याद करवाने वाला कड़ा और ज़रूरत के समय अपनी और अपने से कमज़ोर लोगों की रक्षा करने के लिए कृपाण। आप जी ने उनके लिए चार निषिद्ध मर्यादाएं भी तय कीं। गुरु जी ने हुक्म जारी किया कि कोई भी गुरु का सिक्ख इनमें से कोई भी मर्यादा न करे। ये चार निषिद्ध मर्यादाएं थीं; केसों का अपमान करना, हलाल मांस खाना, तंबाकू का इस्तेमाल करना और पराए मर्द या स्त्री के साथ संबंध रखना।

२०८. प्रश्न - क्या खालसा की सृजना से पहले अमृत की कोई रस्म थी?

उत्तर - खालसा पंथ की सृजना करके गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खण्डे-बाटे से तैयार किए गए अमृत की प्रथा शुरू की। पहले गुरुओं के समय चरणामृत का रिवाज़ था।

२०९. प्रश्न - रहत मर्यादा से क्या भाव है? रहतनामों की जानकारी दो?

उत्तर - रहत मर्यादा से भाव है सिक्ख धर्म के वे नियम और उसूल जिनके अनुसार एक सिक्ख ने अपना जीवन व्यतीत करना होता है। गुरु जी ने अपनी बाणी और हुक्मनामे से यह रहत मर्यादा तय की थी। गुरु जी के बाद कई सिक्खों ने गुरु जी की हिदायतों को रहतनामों के रूप में लिखा। कुछ प्रसिद्ध रहतनामे लिखने वाले लेखक थे—भाई नंद लाल जी, भाई प्रह्लाद सिंघ, भाई चौपा सिंघ, भाई देसा सिंघ आदि। रहतनामों का एक संग्रह प्यारा सिंघ 'पदम' ने तैयार किया था और भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ अमृतसर द्वारा १९७४ में पहली बार छापा गया था। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने रहतनामों की बड़ी गिनती देखकर सारे रहतनामों पर विचार करके सिक्ख कौम के लिए एक रहत मर्यादा १९४५ में जारी की थी। फरवरी १९९८ में इस का नया संस्करण छापा गया था। यह एस.जी.पी.सी के दफ़्तर से निशुल्क उपलब्ध है।

२१०. प्रश्न - गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मसंदों के बारे में क्या निर्देश दिए?

उत्तर - गुरु गोबिंद सिंघ के समय तक मसंद प्रथा में गिरावट आ चुकी थी। मसंद दसवंद की इक्ट्ठी की हुई माया अपने निजी कामों में इस्तेमाल कर लेते थे। गुरु घर तक बहुत कम माया पहुंचती थी। मसंदों के चरित्र में भी गिरावट की शिकायतें मिलने लगी थीं। कई मसंद माया एकत्र करने के कारण अपने आप को कर्त्ता-धर्त्ता समझने लगे थे और अहंकारी भी हो गए थे। गुरु जी ने सारे मसंदों का लेखा-जोखा देख कर संगत के सामने उनको योग्य सज़ाएं दीं और आगे से मसंद प्रथा को समाप्त करके सिक्खों से सीधे सम्पर्क करने और पैसे भेजने का आदेश दिया।

२११. प्रश्न - क्या खालसा पंथ की सृजना के बाद गुरु जी के पहाड़ी राजाओं के साथ सम्बन्ध अच्छे रहे?

उत्तर - खालसा पंथ की सृजना को देखते हुए सारे पहाड़ी राजा गुरु जी से ईर्ष्या करने लगे। उन सभी राजाओं ने इक्ट्ठे होकर गुरु जी के विरुद्ध सरहिंद के नवाब और औरंगज़ेब से सहायता मांगी। औरंगज़ेब ने सरहिंद के नवाब को उनकी पूरी तरह से मदद के लिए लिख दिया। १७०० ईः में दीना बेग और पैंदे खान नामक दो जरनैलों की अगुवाई में एक मुगल सेना आनंदपुर पर टूट पड़ी। आनंदपुर के खुले मैदान में लड़ाई हुई। बाबा अजीत सिंघ ने इस लड़ाई में भाग लिया और बहादुरी दिखाई। पैंदे खान ने गुरु जी को सीधे मुकाबले के लिए चुनौती दी। गुरु जी ने अपने एक ही तीर के निशाने से उसको वहीं ढेर कर दिया। दीना बेग सख्त ज़ख्मी हुआ और मुगल फौजें भाग गईं।

दीना बेग और पैंदे खान की हार के बाद पहाड़ी राजे मिल कर आनंदपुर साहिब पर सयुंक्त रूप से हमला करने का निश्चय करने लगे। उन्होंने गुरु जी को आनंदपुर छोड़ने अथवा उनकी अधीनता स्वीकार करने और कर देने की चेतावनी दी। गुरु जी ने ये दोनों शर्तें ठुकरा दीं। अब तक पहाड़ी राजे यह जान चुके थे कि सीधी जंग में वह गुरु जी को नहीं हरा सकते, इसलिए अब पहाड़ियों के एक बड़े लश्कर ने आनंदपुर को घेर लिया परन्तु वह सिक्खों के आवागमन को न रोक सके। सिक्ख टोलियों के रूप में किले से बाहर आते, लूट-मार करते और ज़रूरी खाने का सामान लेकर फिर किले के अंदर चले जाते। अन्त में पहाड़ियों ने एक मस्त हाथी द्वारा किले का दरवाज़ा

तोड़ने का फैसला किया। एक हाथी को शराब पिला कर किले के दरवाज़े पर हमला करने के लिए भेजा, परन्तु एक बहादुर सिक्ख बचित्र सिंघ ने हाथी के माथे पर अपनी नागणी का ऐसा वार किया कि वह चिंघाड़ता हुआ वापस भाग उठा और उस ने अपनी ही फौज को कुचल दिया।

२१२. प्रश्न - लड़ाइयों में हारने के बाद पहाड़ी राजाओं ने क्या कुटिल नीति अपनाई?

उत्तर - ऊपर लिखी लड़ाइयों में हारने क बाद पहाड़ी राजाओं ने गुरु जी को लिख भेजा कि वह थोड़े दिनों के लिए आनंदपुर साहिब को छोड़ कर चले जाएं तो इस से पहाड़ी राजे संतुष्ट हो जाएंगे और आगे से कोई लड़ाई नहीं होगी। गुरु जी ने कोई लड़ाई न लड़ने के उद्देश्य से आनंदपुर का स्थान छोड़ दिया और वहां से २ मील की दूरी पर निरमोही के स्थान पर जा ठहरे। परन्तु पहाड़ी राजाओं की नियत ठीक नहीं थी और वह अपने वायदे से मुकर गए। उन्होंने अचानक ही गुरु जी पर एक बड़ा हमला कर दिया, फिर भी गुरु जी ने अपने तीरों और सिंघों के साथ जीत प्राप्त की।

२१३. प्रश्न - निरमोही के स्थान पर हुए दूसरे मुकाबले के बारे में उल्लेख करो?

उत्तर - पहाड़ी राजाओं ने एक बार फिर सरहिंद के नवाब की अगुवाई में गुरु जी पर हमला किया परन्तु मुंह की खाई। गुरु जी को फिर पेशकश की गई कि अगर वह कुछ समय के लिए बसाली चले जाएं तो पहाड़ी राजे समझौता करने के लिए तैयार हैं। गुरु जी ने एक बार फिर उनकी बात मान ली और शांति रखने के लिए बसाली की तरफ चल पड़े। अभी गुरु जी बसाली पहुंचे ही थे कि धोखेबाज़ मुगल पहाड़ी राजे अजमेर चन्द (भीम चन्द का पुत्र) की फौजों ने गुरु जी पर फिर हमला बोल दिया। गुरु जी ने एक बार फिर उनको करारी हार दी और आनंदपुर साहिब आ गए।

२१४. प्रश्न - जब गुरु जी दोबारा आनंदपुर साहिब आए तो उनके वहां रहने के दौरान क्या महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटीं?

उत्तर - गुरु साहिब के आनंदपुर छोड़ कर चले जाने के बाद पहाड़ी राजाओं की फौजों ने शहर की हालत खराब कर दी थी। गुरु जी ने वापस आकर घरों और किलों की ज़रूरी मुरम्मत करवाई, बाग-बगीचे ठीक करवाए और शहर को फिर से बसने योग्य हालत में कर दिया क्योंकि अब पहाड़ी

राजाओं की हिम्मत टूट गई थी। उन्होंने गुरु जी के पास अपने दूतों द्वारा शांति और दोस्ती के संदेश भेजे। वैसे तो शांति का समय थोड़ा ही रहा परन्तु गुरु जी ने इस समय के दौरान दोनों समय दीवान सजा कर लोगों को नाम सिमरन का उपदेश दिया। राजा अजमेर चंद ने अपना दूत भेज कर गुरु जी को रिवाल्सर आने का निमंत्रण दिया। रिवाल्सर में एक मेला लगता था जिस के उपलक्ष्य में गुरु जी अपने कुछ सैनिकों को लेकर रिवाल्सर गए। वहां और भी पहाड़ी राजा आए हुए थे जो कि गुरु जी को मिल कर बहुत प्रसन्न हुए। रिवाल्सर के स्थान पर आज कल एक बहुत सुंदर गुरुद्वारा स्थित है जो कि गुरु जी की पहाड़ी राजाओं के साथ मुलाकात का साक्षी है।

रिवाल्सर के मेले के बाद गुरु जी मण्डी के राजा सिद्ध सैन के बुलावे पर मण्डी गए और वहां कुछ समय रहे। मण्डी बिलासपुर ज़िले में हिमाचल प्रदेश में है और यहां गुरु जी की कई यादगारें देखने को मिलती हैं। गुरुद्वारे में गुरु जी के समय का एक पलंग और एक रबाब भी मौज़ूद है। इस शांति के समय दौरान ही गुरु जी कुरुक्षेत्र से वापस होते हुए अपने साथ कुछ खरीदे हुए घोड़े ला रहे थे तब पहाड़ी राजाओं ने एक बार फिर उनसे उनके उपहार छीनने का मौका ढूंढ लिया। उस वक्त मुगल सेना के दो जरनैल सैद बेग और आलफ खान भी इस इलाके में आए हुए थे। उनकी फौजों के साथ मिल कर पहाड़ी राजाओं ने गुरु जी पर एक बार फिर हमला कर दिया। सैद बेग सिक्खों की वीरता से इतना प्रभावित हुआ कि वह गुरु जी का श्रद्धालु बन कर झुक गया। अलफ खान भी सिक्खों की बहादुरी के आगे टिक न सका और अपनी फौज लेकर दिल्ली वापस चला गया।

२१५. प्रश्न - शाही फौज द्वारा आनंदपुर साहिब के घेरे का संक्षेप वर्णन करो?

उत्तर - जब पहाड़ी राजाओं की गुरु जी के आगे एक न चली तो उन्होंने बादशाह औरंगज़ेब तक पहुंच की और उसको गुरु जी से खतरा बता कर भड़काया। औरंगज़ेब स्वयं दक्षिण की लड़ाइयों में व्यस्त होने के कारण, उसने लाहौर के गवर्नर और सरहिंद के फौज़दार को तुरन्त कार्रवाई करने के लिए कहा। इस तरह एक संयुक्त फौज ने आनंदपुर को १७०५ ईः में घेरा डाल लिया। सिंघों का खाना-पीना पहुंचने का रास्ता बंद कर दिया गया परन्तु इस तंगी के बावज़ूद भी सिंघ घबराए नहीं, वह वृक्षों के पत्ते खाकर गुजारा करते रहे। संयुक्त सेना ने शहर को भी लूट लिया परन्तु जब समय बहुत

हो गया तो दोनों तरफ सैनिक थक-टूट गए। इस समय राजा अजमेर चंद ने फिर गुरु जी को पैगाम दिया कि अगर गुरु जी आनंदपुर छोड़ जाएं तो लड़ाई बंद कर दी जाएगी। यह भी यकीन दिलाया कि बाहर आने पर गुरु जी और सिक्खों को कोई नुक्सान नहीं पहुंचाया जाएगा। परन्तु गुरु जी पहाड़ी राजाओं को पहले भी आज़मा चुके थे। उन पर अब यकीन नहीं हो सकता था। फिर एक पैगाम औरंगज़ेब की तरफ से आया। जैसे पहाड़ी राजा गाय की क़सम खाते थे, इस पैगाम में बादशाह ने कुरान की कसम खाकर गुरु जी को यकीन दिलाया कि शांति हो सकती है अगर गुरु जी अपने सिंघों और परिवार को लेकर आनंदपुर से चले जाएं। गुरु जी ने लम्बी लड़ाई को देखते हुए और सिक्खों की कष्टों और भूख से हुई बुरी हालत को विचारते हुए, एक बार फिर दुश्मन पर भरोसा करने का फैसला किया। आप जी ने सिक्खों को टोलियों में कीरतपुर की तरफ भेजना शुरू किया। गुरु जी ने स्वयं अपने परिवार सहित ५-६ दिसंबर की रात १७०५ को आनंदपुर छोड़ दिया। जाने से पहले आप ने यादगारी स्थानों की देखभाल के लिए कुछ आदमियों को नियुक्त किया।

२१६. प्रश्न - क्या गुरु जी के आनंदपुर छोड़ जाने के बाद शांति हो गई?

उत्तर - पहाड़ी राजे बेईमान थे। अजमेर चंद और सूबेदार वज़ीर खान ने सलाह करके गुरु जी का पीछा किया और सिरसा नदी पर उन्हें घेर लिया। सिरसा नदी में बाढ़ आई हुई थी। सिक्ख कई दिनों के भूखे-प्यासे थे। कहर की सर्दी थी। इन सभी कारणों से जब सिक्खों ने सिरसा नदी पार करने की कोशिश की तो उनमें से बहुत सारे डूब कर मर गए। कुछ सिक्ख दुश्मन के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए। उस समय इतनी अफरा-तफरी मच गई थी कि गुरु जी के परिवार में भी विछोड़ा आ गया।

२१७. प्रश्न - गुरु जी के साहिबज़ादों के नाम बताओ, वह कब और कहां पैदा हुए। जब सिरसा नदी पर परिवार विछोड़ा हुआ तो कौन-से साहिबज़ादे साथ रहे?

उत्तर - गुरु जी के चार साहिबज़ादे थे। बड़ा साहिबज़ादा अजीत सिंघ माता सुंदरी जी के उदर से २३ माघ १७४३ को पाऊंटा साहिब में पैदा हुआ था।

बाकी तीनों साहिबज़ादा जुझार सिंघ, साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंघ और साहिबज़ादा फतह सिंघ माता जीतो जी के उदर से सम्वत् १७४३, १७५३ और १७५५ को आनंदपुर साहिब में पैदा हुए थे। परिवार बिछुड़ने के समय माता गुजरी जी और छोटे दो साहिबज़ादे गुरु जी से बिछुड़ गए।

२१८. प्रश्न - परिवार विछोड़े के बाद गुरु जी के चमकौर की गढ़ी पहुंचने पर जो हालात बने, उनका वर्णन करो?

उत्तर - गुरु जी, माता सुंदरी और माता साहिब देवां सभी रोपड़ पहुंच गए और वहां से आप ने दोनों माताओं को भाई मनी सिंघ जी के साथ दिल्ली भेज दिया। रोपड़ के स्थान पर शाही सेना के साथ एक बार फिर सिक्खों की झड़प हुई, जिस में शाही सेना का काफी नुक्सान हुआ। गुरु जी और कुछ सिक्ख इस टक्कर से बच कर चमकौर साहिब पहुंच गए। वहां जाकर गुरु जी को पता चला कि दिल्ली का सूबा दस हज़ार सेना लेकर गुरु जी की तरफ बढ़ रहा है। दूसरी तरफ से पहाड़ी राजे और सरहिंद का सूबा वज़ीर खां अपने सिपाहियों के साथ गुरु जी का पीछा कर रहे थे। गुरु जी ने इन हालातों में चमकौर की गढ़ी में अपने सारे सैनिकों को उनके मोर्चों पर तैनात कर दिया और युद्ध के लिए तैयार हो गए।

२१९. प्रश्न - चमकौर की गढ़ी के युद्ध के बारे में संक्षेप जानकारी दो?

उत्तर - चमकौर की गढ़ी में गुरु जी के साथ बहुत थोड़े सैनिक और उनके साहिबज़ादे थे। गुरु जी के बहुत सारे सैनिक मारे जा चुके थे और चालीस सिक्ख उनको बेदावा लिख कर आनंदपुर छोड़ कर ही चले गए थे। ऐसे हालात में बहादुरी से लड़ने के अलावा गुरु जी के लिए यह ज़रूरी था कि वह योजनाबद्ध तरीके से लड़ें। आप जी ने अपनी योजनाबंदी अनुसार लड़ाई की और सारे सिक्ख बड़ी बहादुरी से लड़े। गुरु जी के दोनों साहिबज़ादे और तीन प्यारे भी इस युद्ध में शहीद हो गए। जब युद्ध करते हुए रात पड़ गई तो गुरु जी के साथ सिर्फ पांच सिक्ख दया सिंघ, भाई धर्म सिंघ, भाई मान सिंघ, भाई संगत सिंघ और भाई संत सिंघ ही रह गए। युद्ध करने के लिए शस्त्र भी खत्म हो गए थे। इस हालत में पांचों सिंघों ने मंत्रणा करके गुरु जी को विनती की कि वह रात को अन्धेरे में उस स्थान को छोड़ कर चले जाएं। गुरु जी को पांचों प्यारों का यह हुक्म मानना ही पड़ा। भाई संत सिंघ और भाई संगत सिंघ शहीदी प्राप्त करने के लिए गढ़ी में ही ठहर

गए और बाकी तीन सिंघ गुरु जी के साथ जाने के लिए तैयार हो गए। जब दुश्मन दल के लोग रात को सोए हुए थे तो गुरु जी और तीन सिंघ एक-एक करके माछीवाड़े में मिलने का प्रोग्राम बना कर निकल गए।

२२०. प्रश्न - गुरु जी का माछीवाड़े के जंगल में अकेले बिताया हुआ समय किस तरह का बीता?

उत्तर - जब रात के घोर अन्धेरे में गुरु साहिब झाड़ियों व बूटियों में से गुजरते हुए काफी सफर तय कर गए तो वे थकावट में चूर गांव चूहड़वाल के पास जंगल में गहन झाड़ियों का सहारा लेकर लेट गए। उस वक्त दिन निकल रहा था। सो आगे सफर करना मुमकिन नहीं था। सारे इलाके में यह ऐलान हो चुका था कि शाही फौजें गुरु जी को ढूंढ रही हैं। ऐसे हालात में गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अकाल पुरुष का ध्यान किया और एक बहुत ही सुंदर शब्द उच्चारण कियाः-

मित्र पिआरे नूं हालु मुरीदां दा कहणा॥
तुधु बिनु रोग रजाईआ का ओढण नाग निवासा के रहणा॥
सूल सुराही खंजरु पिआला बिंग कसाईआ दा सहणा॥
यारड़े दा सानूं सथर चंगा भट्ठ खेड़िआ दा रहणा॥ १॥

२२१. प्रश्न - गुरु जी के चमकौर की गढ़ी में से निकल जाने के बाद चमकौर में क्या हुआ?

उत्तर - जब गुरु जी ने चमकौर की गढ़ी में से निकलना था तो मंत्रणा के अनुसार यह योजना बनाई गई थी कि गुरु जी का पहरावा और कलगी भाई संत सिंघ को पहना दिए जाएं ताकि जब वह शहीद हो जाएं तो शाही सेना और पहाड़िए उनको गुरु साहिब समझ कर पीछा करना छोड़ आराम से बैठ जाएं। योजना के अनुसार उनके लापरवाह होने से गुरु जी को अपनी रक्षा का प्रबंध करने का समय मिल जाना था। जिस तरह योजना बनाई गई थी उस तरह ही हुआ। मुगल फौजों का सेनापति ख्वाज़ा मरदूद बहुत खुश हुआ कि उस ने गुरु जी को मार दिया है। सो उस को औरंगज़ेब से इनाम मिलेगा, परन्तु बाद में जब शिनाख्त के दौरान यह पता लगा कि गुरु जी तो गढ़ी में से बच कर निकल गए थे तो उनको पकड़ने के लिए फिर भाग-दौड़ शुरू हो गई।

२२२. प्रश्न - माछीवाड़े में व्यतीत हुए हालातों के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - माछीवाड़े में दो पठान भाई, भाई नबी खां और भाई गनी खां घोड़ों के सौदागर थे। वह गुरु जी से प्रेम करते थे। उन्होंने गुरु जी को माछीवाड़े में से निकालने के लिए एक योजना बनाई। गुरु जी को 'उच्च का पीर' बना कर और स्वयं मुरीद बन कर गुरु जी का पलंग उठा कर शाही फौजों के बीच से निकल गए। बाकी तीन सिंघ भी उनके मुरीद बन गए और इस तरह से गुरु जी को शाही फौज से दूर पहुंचा दिया गया। वहां से निकल कर गुरु जी गांव लम्मा और जट्टपुरा के रास्ते से होते हुए एक श्रद्धालु राय कल्ला के निवास स्थान पर पहुंच गए। राय कल्ला ने गुरु जी के कहने पर सरहिंद से माता जी और छोटे साहिबज़ादों की खबर मंगवाने के लिए एक चरवाहे को भेजा। उस ने आकर गुरु जी को साहिबज़ादों की शहीदी के बारे में बताया।

२२३. प्रश्न - छोटे साहिबज़ादों की शहीदी के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - जब माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादे गुरु जी से बिछुड़ गए तो उनकी मुलाकात उनके पुराने रसोईए गंगू ब्राह्मण से हो गई। वह उनको अपने घर ले गया और इनाम के लालच से मोरिंडे के हाकम द्वारा सरहिंद के सूबे के पास पहुंचा दिया। सूबे ने साहिबज़ादों को तरह-तरह के डर व लालच देकर हर हालत में मुसलमान बनने के लिए कहा, परन्तु साहिबज़ादों ने अपनी दादी की धर्म निभाने की शिक्षा को याद रखा और कुर्बानी के लिए तैयार हो गए। मालेरकोटला के नवाब ने सूबा को समझाया कि गुरु जी का बदला छोटे बच्चों से लेना ठीक नहीं, परन्तु सुच्चा नंद ने 'सांप के बच्चे सपोले' कह कर सूबे को बच्चों को सज़ा देने के लिए उकसाया। आखिर दोनों साहिबज़ादों को दीवार में चिनवा कर शहीद कर दिया गया। यह साका १३ दिसंबर १७०५ को हुआ। सरहिंद के टोडर मल ने मोहरें देकर बच्चों के संस्कार के लिए उनकी मृत देह प्राप्त की। माता गुजरी जी भी इस खबर को सुन कर परलोक सिधार गए। जिस जगह पर साहिबज़ादे शहीद हुए थे वहां गुरुद्वारा फतहगढ़ साहिब सुभायमान है और जहां माता जी और बच्चों का संस्कार किया गया था वहां गुरुद्वारा ज्योति स्वरूप विद्यमान है।

२२४. प्रश्न - ज़फ़रनामा क्या है और गुरु महाराज ने इस रचना को कब और कहां लिखा?

उत्तर - ज़फरनामा गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा औरंगज़ेब को लिखा एक पत्र है जो फारसी में लिखा था। गुरु जी राय कोट से चल कर गांव दीने कांगड़ चले गए। यह गांव ज़िला मोगा में है। दीना में गुरु जी ने यह पत्र लिखा था। इस में कुल ११५ बैंत हैं। पहले १२ बैंतों में परमात्मा की स्तुति करके १३ से १११ तक औरंगज़ेब को उसके गुनाहों की जानकारी करवाई है। गुरु जी ने लिखा है कि नैतिक तौर पर औरंगज़ेब की हार हुई है। उसने झूठी कसमें खाईं और ईमान से हार गया। आखिरी ४ बैंतों में भी परमात्मा की स्तुति है। भाई दया सिंघ और भाई धर्म सिंघ यह पत्र लेकर अहमदनगर औरंगज़ेब को देने के लिए गए।

२२५. प्रश्न - गुरु जी ने मुगलों से आखिरी लड़ाई कब और कहां लड़ी?

उत्तर - दीना से गुरु जी खिदराना गए और मुगल फौजों से वहां उन्होंने आखिरी लड़ाई लड़ी। यह जंग २१ दिसंबर १७०५ को लड़ी गई। सबसे ज़्यादा बहादुरी से वह ४० सिंघ लड़े जो गुरु जी को बेदावा लिख कर दे गए थे। उनके सरदार भाई महां सिंघ और साथियों ने मुगल सेना को गुरु जी तक पहुंचने से पहले ही रोक लिया और डट कर युद्ध किया। गुरु जी ने इन ४० सिंघों को माफ कर दिया और उन्हें मुक्ते करार दिया। गुरु जी ने भाई महां सिंघ के मरने से पहले उसके पास पहुंच कर उसके सामने बेदावा फाड़ दिया। अब इस स्थान का नाम मुक्तसर है और वहां शहीदों की याद में एक गुरुद्वारा सुशोभित है।

२२६. प्रश्न -गुरु जी खिदराना के बाद कहां गए और वहां क्या महत्त्वपूर्ण काम किया?

उत्तर - गुरु जी लखी जंगल को पार करके २० जनवरी १७०६ को तलवंडी साबो पहुंचे। यहां वह नौ महीने रहे। धीरमल के वारिसों ने आदि ग्रंथ की पहली बीड़ गुरु जी को देने से इन्कार कर दिया था, सो गुरु जी ने बीड़ की नई कापी तैयार करवाई। आप जी ने सारा ग्रंथ भाई मनी सिंघ से लिखवाया। इस नई बीड़ में गुरु जी ने अपने पिता गुरु तेग बहादुर साहिब की बाणी भी शामिल कर दी। गुरु जी को उस समय मिलने के लिए बहुत विद्वान तलवंडी साबो इक्ट्ठे होने शुरू हो गए और उन्होंने साहित्यिक रचनाएं रचीं। इस कारण ही इस स्थान को गुरु की काशी कहने लग गए। आजकल इस स्थान को दमदमा साहिब कहा जाता है और इस को सिक्खों का पांचवां

तख्त करार दिया गया है।

२२७. प्रश्न - तलवंडी साबो से गुरु जी कहां पर गए?

उत्तर - कहा जाता है कि जब औरंगज़ेब को ज़फ़रनामा मिला तो उसके मन पर उसका बहुत असर हुआ। उस ने गुरु जी को मिलने की इच्छा प्रकट करके दक्षिण आने का संदेश दिया। गुरु जी दक्षिण के लिए रवाना हुए परन्तु अभी राजस्थान में बगोंर के स्थान पर ही थे कि उनको औरंगज़ेब की मौत की खबर मिली। गुरु जी फिर दिल्ली आ गए। उस समय औरंगज़ेब के पुत्रों में गद्दी के लिए जंग चल रही थी। गुरु जी ने शहज़ादा मुअज़म का साथ दिया। शहज़ादे की विनती पर अपनी कुछ सेना भी उसकी मदद के लिए भेजी। गुरु जी की सेना ने ८ जून १७०७ को हुई जाजू की लड़ाई में हिस्सा लेकर शहज़ादे को जीत दिलाई। शहज़ादा मुअज़म बादशाह बहादुर शाह बन गया। उस ने गुरु जी को आगरे आने का संदेश दिया। गुरु जी की बादशाह से आगरा में मुलाकात २३ जुलाई १७०७ को हुई। बादशाह दक्षिण में हुए विद्रोह को दबाने के लिए दक्षिण की तरफ जा रहा था, उस ने गुरु जी को भी अपने साथ चलने की विनती की। गुरु जी ने बादशाह को कहा कि वह जाएं और गुरु जी बाद में आएंगे।

२२८. प्रश्न - क्या गुरु जी दक्षिण गए? इस उपरांत आप के जीवन में हुई घटनाओं का उल्लेख करो?

उत्तर - गुरु जी धर्म प्रचार को मुख्य रख कर दक्षिण की तरफ गए। रास्ते में लोगों को गुरु नानक के उपदेश देते हुए आप गोदावरी नदी के किनारे नांदेड़ पहुंचे। यहां आप कुछ समय ठहरे। यहां आप एक वैरागी माधोदास को मिले जिस को सिक्ख सजा कर आप ने गुरबख्श सिंघ का नाम दिया। यह गुरबख्श सिंघ बाद में बंदा बहादुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ और उस ने पंजाब जाकर सिक्खों के खिलाफ हुए ज़ुल्मों का गिन-गिन कर बदला लिया।

२२९. प्रश्न - नांदेड़ में गुरु जी पर हुए हमले का उल्लेख करो?

उत्तर - सरहिंद का सूबा वज़ीर खां, जिस ने छोटे साहिबज़ादों को शहीद किया था, इस बात से डरा हुआ था कि गुरु जी के बादशाह से अच्छे संबंध होने के कारण कहीं उस के विरुद्ध कार्रवाई न हो जाए। उसने दो पठान गुरु जी को मारने के लिए उनके पीछे लगा दिए। इनमें से एक ने मौका देख

कर गुरु जी पर छुरे का वार किया। गुरु जी ने उसी वक्त उस को कृपाण से वार करके मार दिया। दूसरे पठान को भी सिंघों ने मार दिया। छुरे का यह ज़ख़्म ही गुरु जी के ज्योति-ज्योत समाने का कारण बना और ७ अक्तूबर १७०८ को आप जी ज्योति-ज्योत समा गए। ज्योति-ज्योत समाने से पहले गुरु जी ने आदि ग्रंथ को गुरुगद्दी देकर सिक्खों को गुरु ग्रंथ साहिब पर आश्रित कर दिया।

२३०. प्रश्न - गुरु जी के अंतिम समय पर उनके साथ कौन लोग थे?

उत्तर - गुरु जी के साथ उस समय माता साहिब देवां, भाई दया सिंघ, भाई मान सिंघ और भाई धर्म सिंघ आदि प्रसिद्ध सिक्खों के अलावा लगभग ३०० घुड़सवार भी थे। ज्योति-ज्योत समाने से पहले गुरु जी ने भाई मनी सिंघ को माता साहिब कौर के साथ दिल्ली भेज दिया। जहां माता सुन्दरी जी पहले से ही थे। भाई दया सिंघ, भाई धर्म सिंघ तथा अन्य सिक्ख गुरु जी के ज्योति-ज्योत समाने के बाद पंजाब चले गए।

२३१. प्रश्न - माता सुंदरी जी और माता साहिब देवां जी के दिल्ली निवास के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - माता साहिब देवां, जिस को गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की मां बनाया था, दिल्ली जाने के बाद जल्दी ही गुजर गए थे। माता सुंदरी जी ने बाद में काफी वर्ष पंथ की रहनुमाई की। सिक्खों में बंदा सिंघ बहादर के स्वर्ग सिधारने के बाद पैदा हुए झगड़े का निपटारा भी आप ने ही करवाया।

२३२. प्रश्न - जो सिक्ख गुरु जी को बेदावा लिख कर दे गए थे, उनके बारे में जानकारी दो?

उत्तर - जब आनंदपुर की घेराबंदी के कारण सिक्खों को अन्न-पानी बिना अनेक ही मुश्किलों का सामना करना पड़ा तो स. महां सिंघ की अगुवाई में ४० सिंघ गुरु जी को बेदावा लिख कर दे गए थे कि न वह उनका गुरु है और न ही वह उनके सिक्ख। जब वे सिक्ख अपने घरों में पहुंचे तो उनकी औरतें, माताएं, बहनें और बीवियां उनको फिटकारने लगीं। वह माई भागो की अगुवाई में स्वयं जंग में जाने को तैयार हो गईं। उनके इस व्यवहार से सिक्खों को बहुत शर्मिंदगी हुई। उनको समझ आ गई कि शहीद होना ही

इस जीने से अच्छा है। वह सब लड़ाई में वापस चले गए और लड़ते हुए शहीद हो गए। जब वह सिंघ खिदराने के स्थान पर लड़ रहे थे तो गुरु जी थोड़ी दूरी पर एक ऊंची टिब्बी पर खड़े होकर दुश्मनों पर तीर बरसा रहे थे। गुरु जी ने इन शहीद सिंघों का दाह संस्कार स्वयं किया।

२३३. प्रश्न - श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरयाई प्रदान करने के बाद जो पहला हुक्मनामा आया, उसके वचन क्या थे?

उत्तर - उस वक्त गुरु ग्रंथ साहिब में से लिए गए हुक्मनामे के बोल नीचे लिखे थेः-

खुलिआ करमु क्रिपा भई ठाकुर कीरतनु हरि हरि गाई॥
स्रमु थाका पाए बिस्रामा मिटि गई सगली धाई॥ १॥
अब मोहि जीवन पदवी पाई॥ चीति आइओ मनि
पुरखु बिधाता संतन की सरणाई॥ २॥ रहाउ॥
कामु क्रोधु लोभु मोहु निवारे निवरे सगल बैराई॥
सद हजूरि हाजरु है नाजुर कतहि न भईओ दूराई॥
सुख सीतल सरधा सभ पूरी होए संत सहाई॥
पावन पतित कीऐ खिन भीतरि महिमा कथनु न जाई॥ ३॥
निरभउ भए सगल भै खोए गोबिद चरण ओटाई॥
नानकु जसु गावै ठाकुर का रैणि दिनसु लिव लाई॥ ४॥

(पन्ना १०००)

२३४. प्रश्न - दसम ग्रंथ में एकत्र बाणियों का विवरण दो?

उत्तर - दसम ग्रंथ में गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा रचित बाणियों को भाई मनी सिंघ जी ने गुरु जी के ज्योति-ज्योत समाने के बाद एकत्र किया। यह एकत्र की हुई बाणी दसम ग्रंथ के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस में १६ प्रमुख रचनाएं हैं और १७१०० छंद हैं। यह बाणी १४२८ पन्नों पर अंकित है। कुछ प्रमुख रचनाओं के नाम हैं—जापु साहिब, अकाल उसतति, बचित्र नाटक, चंडी चरित्र, चंडी चरित्र दूजा, वार स्री भगउती जी की, गिआन प्रबोध, चउबीस अवतार, शसत्र नाममाला पुराण, ज़फ़रनामा, चरित्रो पखयान, खालसा महिमा, शबद हज़ारे और तेती सवईऐ। इन बाणियों की भाषा संस्कृत, अरबी, फारसी, ब्रज, हिन्दी और पंजाबी है। इस सारी बाणी की रचना गुरु गोबिंद सिंघ जी को कलम का धनी प्रमाणित करती है। गुरु

महाराज का भाषा ज्ञान, राग ज्ञान, पुरातन ग्रंथों बारे ज्ञान और काव्य शैली इतनी प्रभावशाली है कि दुनिया का कोई भी कवि उनका मुकाबला नहीं कर सकता। आप जी की तीन बाणियां जापु साहिब, सवईऐ और चौपई साहिब सिक्खों की अमृत समय के नित्तनेम की पांच बाणियों में शामिल हैं। चौपई साहिब पातशाही १० शाम की बाणी रहरासि के साथ भी पढ़ी जाती है। जहां अकाल उसतति में २७१३ छंद हैं और परमात्मा की स्तुति की गई है, वहां खालसा महिमा में खालसा पंथ का गुणगान है। चौबीस अवतार में पुरातन ग्रंथों की गाथाओं का टीका है। बचित्र नाटक गुरु जी के अपने जीवन की झलक पेश करता है। शबद हज़ारे दसम पिता जी की प्रभु आराधना की बाणी है। जहां शबद हज़ारे में तरह-तरह के रागों का इस्तेमाल है, वहां अनेक तरह के छंद और रचनाएं इस्तेमाल किए गए हैं।

२३५.प्रश्न- गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ५२ कवियों को संरक्षणता प्रदान की। उनमें से कुछ कवियों की रचनाओं का वर्णन करो जो उन्होंने गुरु साहिब के संरक्षण में लिखी थीं?

उत्तर - गुरु साहिब के समय में हुए ५२ कवियों में से भाई गुरदास जी दूजा और भाई नंद लाल जी गोया सबसे प्रसिद्ध कवि थे। भाई गुरदास जी ने ४१वीं वार लिखी है। भाई नंद लाल जी ने गज़लें, ज़िंदगीनामा, गंजनामा, तौसीफो सना, जोति विकास, रहतनामा, तनखाह नामा, दसतूर उलनिसा और अरजुल-अल्फाज आदि रचनाएं फारसी और पंजाबी में लिखी हैं। सेनापति ने 'गुरु सोभा' लिखी और भाई दया सिंघ, भाई चौपा सिंघ, भाई देसा सिंघ और भाई प्रह्लाद सिंघ जी ने रहतनामे लिखें हैं। इन रचनाओं को गुरमति साहित्य का सहायक कहा जा सकता है क्योंकि इसमें गुरुओं की बाणी या उनके वचनों की व्याख्या की गई है।

२३६.प्रश्न- भाई नन्द लाल जी ने गुरु गोबिन्द सिंघ जी के बारे में बहुत सुन्दर विचार प्रकट किए हैं। उनके द्वारा गुरु जी के गुणगान करने वाली कुछ प्रसिद्ध पंक्तियों का उल्लेख करें?

उत्तर - भाई नन्द लाल जी पंजाबी और फारसी के विद्वान थे। उनकी गुरु जी पर अपार श्रद्धा थी। नीचे लिखी पंक्तियां उनकी फारसी रचना में से हैं और इनमें भाई नन्द लाल जी का गुरु जी के प्रति प्रेम और श्रद्धा झलकते हैं :-

नासरो मनसूर गुरु गोबिंद सिंघ॥ एज़दी मनज़ूर गुरु गोबिंद सिंघ॥१०५॥
हक्क हक्क आगाह गुरु गोबिंद सिंघ॥ शाहि शाहनशाह गुरु गोबिंद सिंघ॥ १०७॥
ख़ालसो बेकीना गुरु गोबिंद सिंघ॥ हक्क हक्क आईना गुरु गोबिंद सिंघ॥ १२४॥
हक्क हक्क अंदेश गुरु गोबिंद सिंघ॥ बादशाह दरवेश गुरु गोबिंद सिंघ॥ १२५॥

२३७. प्रश्न - सिक्खों की नित्य की अरदास किस ने लिखी और कब से शुरू हुई?

उत्तर - जो अरदास आज कल हर रोज़ प्रत्येक गुरुद्वारे में और धार्मिक समारोह के बाद की जाती है, उसकी शुरू की पंक्तियां 'वार स्री भगउती जी के' शीर्षक के अधीन गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा 'चंडी की वार' में लिखी गई हैं।

गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यह वार गुरु तेग बहादुर जी के ज़िक्र तक लिखी थी। उस के बाद की पंक्तियां समय-समय पर सिक्ख संस्थाओं की तरफ से जोड़ी गई हैं। १९४७ के बाद शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अरदास में सिक्खों से पाकिस्तान में रह गए गुरुद्वारों के बिछोड़े का ज़िक्र किया और उनकी देखभाल सिक्ख पंथ को प्रदान करने की विनती अरदास में जोड़ी। विस्तार के लिए डा. जसवंत सिंघ नेकी द्वारा लिखी पुस्तक 'अरदास' देखो।

२३८. प्रश्न - अरदास के बाद बोले जाने वाले तीन दोहरे कौन से हैं और वह दोहरे कहां से लिए गए हैं?

उत्तर - पहले २ दोहरे यह हैं-

आगिआ भई अकाल की तबी चलहइओ पंथ॥
सभ सिक्खन को हुकम है गुरु मानिओ ग्रंथ॥
गुरु ग्रंथ जी मानिओ प्रगट गुरां की देह॥
जा का हिरदा शुद्ध है खोज शबद महि लेह॥

ये दोनों दोहरे ज्ञानी ज्ञान सिंघ जी की प्रसिद्ध पुस्तक पंथ प्रकाश में से लिए गए हैं।

तीसरा दोहरा भाई नंद लाल जी के 'तनखाहनामा' में से है जिस में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी भाई नंद लाल जी को खालसा के लक्षण बताते हैं। इस सम्बन्ध में पंक्तियां इस प्रकार हैं:-

सुणो नंद लाल इहो साच॥ प्रगट कराउं आपणो राज॥ ५६॥

चार बरन इक बरन कराऊं॥ वाहिगुरु का जापु जपाऊं॥ ५७॥
चढ़े तुरंग उड़ावैं बाज॥ तुरक देख कर जावैं भाज॥ ५८॥
सवा लाख से एक लड़ाऊं॥ चढ़े सिंघ तिस मुकत कराऊं॥ ५९॥
झूलण नेजे हसती साजे॥ दुआर दुआर पर नौबत बाजे॥ ६०॥
सवा लाख जब धुखै पलीता॥ तब खालसे उदै असत लो जीता॥ ६१॥
राज करेगा खालसा आकी रहे ना कोइ॥
खवार होइ सभ मिलैंगे, बचे सरन जो होइ॥६२॥

इन तीन दोहरों के अलावा और कोई भी दोहरा नहीं बोलना चाहिए।



शब्द गुरु — श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

२३९. प्रश्न - श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के अध्ययन के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की जानकारी दो?

उत्तर - श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी को समझने के लिए विद्वानों ने समय-समय पर टीके किए और इस के शब्दों के अर्थ और व्याकरण की व्याख्या की। पंडित तारा सिंघ नरोत्तम और भाई काह्न सिंघ नाभा जैसे विद्वानों ने ऐसे कोष तैयार किए जो खोज करने वालों के लिए महत्त्वपूर्ण स्रोत बन गए। तारा सिंघ नरोत्तम के गुरु ग्रंथ साहिब कोष व गुरमति निर्णय सागर और भाई काह्न सिंघ नाभा के महान कोष व गुरमति मार्तंड गुरुबाणी को समझने के लिए बहुत लाभदायक हैं। कुछ और किताबें, जो इस सम्बन्ध में लाभदायक हैं, वो हैं: डा. चरन सिंघ का बाणी विवरण, ज्ञानी लाल सिंघ का गुरमति मार्तंड, भाई जोध सिंघ की गुरमति निर्णय, मास्टर महिताब सिंघ का नामों और जगहों का कोष, जी. बी. सिंघ की प्राचीन बीड़ें, शमशेर सिंघ अशोक का राग माला निर्णय आदि। एस. जी. पी. सी ने भी ४ पोथियों में

शब्दार्थ तैयार किया है। गुरु ग्रंथ साहिब में से कई बाणियों का टीका बहुत विद्वानों ने किया है जैसे जपु जी साहिब, सुखमनी साहिब, भगत बाणी आदि। सारे गुरु ग्रंथ साहिब के टीके भी तैयार किए गए हैं जिनमें से एस.जी.पी. सी. द्वारा तैयार किया गया इंगलिश-पंजाबी वाला टीका ८ भागों में उपलब्ध है। अंग्रेज़ी और पंजाबी में कई थिसिस भी तैयार किए गए हैं जिस का सम्बन्ध गुरुबाणी की खोज से है। मिसाल के तौर पर सः सुरिंदर सिंघ कोहली का (A Critical Study of Adi Granth)..................पंजाबी युनिवर्सिटी पटियाला ने सः हरबंस सिंघ द्वारा तैयार किया इन्साइक्लोपीडिया के तीन भाग जारी कर दिए हैं और आखिरी भाग जल्दी ही छप रहा है।

२४०. प्रश्न-गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बाणी के रचयिता कौन-कौन हैं। बाणी कितने रागों में है? गुरु ग्रंथ साहिब के कितने पन्ने हैं तथा पहली और आखिरी बाणी कौन-सी हैं?

उत्तर - श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बाणी के रचयिता नीचे लिखे हैं:-

गुरु नानक देव जी	९७४ शब्द
गुरु अंगद देव जी	६३ सलोक (सारे सलोक वारों में हैं)
गुरु अमरदास जी	९०७ शब्द
गुरु राम दास जी	६७९ शब्द
गुरु अर्जुन देव जी	२२१८ शब्द (३० रागों में)
गुरु तेग बहादुर जी	५९ शब्द, ५६ सलोक (रागु जैजावंती में सिर्फ गुरु तेग बहादुर जी की बाणी है)

★ *गुरु घर के सेवक*

सत्ता	३ शब्द
बलवंड	५ शब्द
बाबा सुंदर जी	६ शब्द (सद)
मर्दाना	३ शब्द

★ *भगत*

जयदेव	२ शब्द

बाबा फरीद जी	४ शब्द, ११२ सलोक
नामदेव	६ शब्द
त्रिलोचन	४ शब्द
परमानंद	१ शब्द
सधना	१ शब्द
बेणी	३ शब्द
रामानंद	१ शब्द
धन्ना	३ शब्द
पीपा	१ शब्द
सैन	१ शब्द
कबीर	२९२ शब्द (बावन अक्खरी मिला कर)
	२४९ सलोक
रविदास	४१ शब्द
सूरदास	२ शब्द
भीखण	२ शब्द

★ *भट्ट*

कलसहार	५४	सवय्ये पांचों गुरुओं की स्तुति में
नल्ह	१६	सवय्ये गुरु रामदास जी की स्तुति में
कीरत	४	सवय्ये गुरु अमरदास जी की स्तुति में
	४	सवय्ये गुरु रामदास जी की स्तुति में
भट्ट मथरा	७	सवय्ये गुरु रामदास जी की स्तुति में
	७	सवय्ये गुरु अर्जुन देव जी की स्तुति में
गयंद	१३	सवय्ये गुरु रामदास जी की स्तुति में
भिख्हा	२	सवय्ये गुरु अमरदास जी की स्तुति में
जालप	५	सवय्ये गुरु अमरदास जी की स्तुति में

सल्ह	३	सवय्ये गुरु अमरदास जी की स्तुति में
भल	१	सवय्या गुरु अमरदास जी की स्तुति में
बल्ह	५	सवय्ये गुरु रामदास जी की स्तुति में
हरिबंस	२	सवय्ये गुरु अमरदास जी की स्तुति में

सारी बाणी ३१ रागों में लिखी गई है और १४३० पन्नों में है। गुरु ग्रंथ साहिब की पहली बाणी जपु जी साहिब है और आखिर में नौवें महले के सलोकों के बाद गुरु अर्जुन देव जी की मुंदावणी ***"थाल विच तिंनि वसतू पईओ"*** और सलोक ***'तेरा कीता जातो'*** और आखिर में राग माला है।

२४१. प्रश्न - गुरु ग्रंथ साहिब में कौन-सी भाषा इस्तेमाल की गई है?

उत्तर - गुरु ग्रंथ साहिब भारतीय भाषाओं का ख़ज़ाना है। बेशक इस में संत भाषा का इस्तेमाल किया गया है परन्तु कई जगह पर पंजाबी, हिन्दी मराठी, अरबी और फारसी भाषा का इस्तेमाल देखने को मिलता है। कई भाषाओं के अलग-अलग रूप भी देखे जा सकते हैं। मिसाल के तौर पर पूर्वी और पश्चिमी हिन्दी की उप-भाषाएं कई संत-कवियों ने इस्तेमाल की हैं। पंजाबी के भी कई रूप जैसे कि लहिंदी और सिंधी गुरु अर्जुन देव जी की रचनाओं में देखने को मिलते हैं। संस्कृत का इस्तेमाल सहसक्रिती सलोकों में, गाथा सलोकों में और जैतसरी की वार में आए सलोकों में देखा जा सकता है। गुरुओं ने और संत कवियों ने कुछ ऐसे शब्द भी इस्तेमाल किए हैं जो उनके द्वारा बनाए गए थे। मिसाल के तौर पर चौथे गुरु रामदास जी ने कलिआन रागु में तरवर शब्द की जगह पर तरोवर शब्द इस्तेमाल किया है। निःसंदेह कई भारतीय भाषायों का संगम गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बाणी में है परन्तु इस ग्रंथ के आने के बाद सबसे ज़्यादा पहचान पंजाबी भाषा को मिली है। गुरुओं द्वारा बाणी को इस भाषा में लिख कर उन्होंने पंजाबी भाषा को एक बोलने वाली भाषा से साहित्यिक भाषा बना दिया।

२४२. प्रश्न - श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज रचनाओं का विवरण रागों के अनुसार दें?

उत्तर -

बाणी	***पन्ने***
जपु	१

२४३. प्रश्न - गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में कौन-से छंद और काव्य रूप इस्तेमाल किए गए हैं?

उत्तर - गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी में तरह-तरह के छंद इस्तेमाल किए गए हैं, जिन को पउड़ी, शब्द, सलोकु, सवय्ये आदि का नाम दिया गया है। काव्य रूप में शब्द, वारें, बारह माहा दोहे आदि इस्तेमाल किए गए हैं। कुछ रचनाओं के अपने ही नाम हैं जैसे पट्टी, बावन अक्खरी, सद, अनंदु, सुखमनी, सोहिला, आरती, अलाहणीआ, घोड़ियां, दिनरैण, वंजारा, बिरहरे, करहले, सुचजी, कुचजी और गुणवंती। सोदरु और सो पुरखु के सिरलेख वाले शब्द बड़ी बाणियों में शामिल किए गए हैं।

२४४. प्रश्न - पउड़ी से क्या भाव है। गुरु ग्रंथ साहिब में कौन-कौन सी महत्त्वपूर्ण रचनाएं हैं जिन में पउड़ी शब्द का प्रयोग किया जाता है।

उत्तर - गुरुबाणी में पउड़ी शब्द एक पहरे के लिये इस्तेमाल किया जाता है। जिस प्रकार एक-एक पउड़ी ऊपर जाकर इन्सान ऊंचाई पर पहुंचता है, उसी प्रकार ही एक-एक पउड़ी में विचारों को प्रकट करके उन को विचारों की बुलंदी पर लाया जाता है। मिसाल के तौर पर जपु जी साहिब में ३८ पउड़ियां हैं। हर पउड़ी में दिया गया विचार पिछली पउड़ी के विचार से आगे ले जाता हुआ हमें इन्सान के जीवन के सबसे ऊँचे लक्ष्य सचखंड को पाने तक ले जाता है। गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज वारों में पउड़ियों का इस्तेमाल किया गया है। पउड़ी को निशानी छंद भी कहा जाता है।

२४५. प्रश्न - वार से क्या भाव है? गुरु ग्रंथ साहिब में कितनी वारें दर्ज हैं?

उत्तर - वार एक ऐसा काव्य रूप है जिस द्वारा किसी खास शूरवीर या विद्वान की तारीफ की जाती है। गुरु साहिब के वक्त से पहले भी गाने वाले वारें गाया करते थे जो बहुत ही प्रचलित थीं। गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज २२ वारें परम पिता परमात्मा, गुरु और धर्म की ज़िंदगी जीने वालों की तारीफें करती हैं। गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज वारों का वर्णन इस प्रकार हैः

★ *वारों का विवरण*

गुरु नानक देव जी की	३ - वार माझ, वार आसा, वार मलार।
गुरु अमरदास जी की	४ - वार गउड़ी, वार सूही, वार रामकली, वार मारू।
गुरु रामदास जी की	८- वार स्री रागु, वार गउड़ी, वार बिहागड़ा, वार वडहंस, वार सोरठि, वार बिलावल,

	वार सारंग, वार कानड़ा।
गुरु अर्जुन देव जी की	६- वार गउड़ी, वार गुजरी, वार जैतसरी, वार रामकली, वार मारू, वार बसंत।
सत्ते बलवंड की वार	१
कुल	*२२*

२४६. प्रश्न - धुनें क्या हैं? गुरु ग्रंथ साहिब में कौन-सी धुनों का जिक्र है?

उत्तर - धुनों से भाव है गाने का ढंग। गुरु ग्रंथ साहिब में ९ वारें ऐसी हैं जिनको पुराने वीरों की वारों के अनुसार गाने का आदेश है। नीचे वारें और उनको गाने की धुनें दर्ज हैं—

१. माझ की वार	(गुरु नानक देव जी की) मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहिया की धुन।
२. गउड़ी की वार	(गुरु अर्जुन देव जी की) राय कमालदी मोजदी की वार की धुन।
३. आसा की वार	(गुरु नानक देव जी की) टुंडे असराजे की धुन।
४. गूजरी की वार	(गुरु अमरदास जी की) सिकंदर इब्राहिम की धुन।
५. वडहंस की वार	(गुरु रामदास जी की) लला बहिलीमा की धुन।
६. रामकली की वार	(गुरु अमरदास जी की) जोधै वीरै पूरबाणी की धुन।
७. सारंग की वार	(गुरु रामदास जी की) राय महिमे हसने की धुन।
८. मलार की वार	(गुरु नानक देव जी की) राणे कैलास तथा मालदे की धुन
९. कानड़े की वार	(गुरु रामदास जी की) मूसे की वार की धुन।

पुरातन वारों की जानकारी और नमूने के लिए भाई काह्न सिंघ नाभा के महान कोष का पन्ना ६७० देखो। अंग्रेज़ी में पढ़ने के लिए स. सुरिंदर सिंघ कोहली की पुस्तक। A Critical Study of Adi Granth and Encyclopaedia of Sikhism Edited by Harbans Singh में से पढ़ सकते हैं।

२४७. प्रश्न - पदु क्या होते हैं और कितने प्रकार के पदु गुरु ग्रंथ साहिब में इस्तेमाल किए गए हैं?

उत्तर - गुरु ग्रंथ साहिब में हर शब्द को कुछ हिस्सों में बांटा गया है। हर हिस्से को एक पदु कहा जाता है। गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज यह पदु एक पंक्ति, दो पंक्तियों, तीन पंक्तियों, चार पंक्तियों और आठ पंक्तियों के भी हैं। सः सुरिंदर सिंघ कोहली ने अपनी पुस्तक A Critical Study of Adi Granth में इस सिलसिले में जो मिसालें दी हैं वह नीचे लिखी हैं:

एक पंक्ति—

जीवत दीसै तिसु सरपर मरणा॥
मुआ होवै तिसु निहचलु रहणा ॥ १ ॥

(पन्ना ३७८)

दो पंक्तियां —

१. उन कै संगि तू करती केल॥ उन कै संगि हम तुम संगि मोल॥
उन्ह कै संगि तुम सभु कोऊ लोरै॥ ओसु बिना कोऊ मुखु नही जोरै॥ १ ॥

(पन्ना ३९०)

२. पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ॥
जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ॥

(पन्ना ४७९)

तीन पंक्तियां —

किसु हउ जाची किसु आराधी जा सभु को कीता होसी॥
जो जो दीसै वडा वडेरा सो सो खाकू रलसी॥
निरभउ निरंकारु भव खंडनु सभि सुख नव निधि देसी॥ १ ॥

(पन्ना ६०८)

जिनि हरि धिआइआ सभु किछु तिस का तिस की भूख गवाई॥
ऐसा धनु दीआ सुखदातै निखुटि न कब ही जाई॥
अनदु भइआ सुख सहजि समाणे सतिगुरि मेलि मिलाई॥ २ ॥

(पन्ना ६०८)

२४८. प्रश्न - असटपदी और सोहिला क्या होते हैं? इनका इस्तेमाल गुरु ग्रंथ साहिब में कहां किया गया है?

उत्तर - असटपदी का अर्थ है आठ पदु और सोहिले का अर्थ है सोलह पदु वाला शब्द। असटपदी का इस्तेमाल गुरु अर्जुन देव जी ने सुखमनी

साहिब में किया है जिस में २४ असटपदियां हैं। सोहिले का इस्तेमाल भी गुरुबाणी में कई जगहों पर किया गया है।

२४९. प्रश्न - सलोकु से क्या भाव है? गुरु ग्रंथ साहिब में इनके इस्तेमाल के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - सलोकु पउड़ी की तरह एक पहरा नहीं होता बल्कि अपने आप में ही एक छोटी और मुकम्मल रचना होती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सलोकों का इस्तेमाल कई शीर्षकों के नीचे किया गया है जैसे कि सलोकु डखणे, सलोकु सहसक्रिती, गाथा, फुनहे और चौबोले। कुछ सलोकु वारों में इस्तेमाल किए गए हैं और कुछ सलोकु वारों और वधीक अलग स्थान में इस्तेमाल किए गए हैं। गुरुबाणी में से इन की मिसालें सः सुरिंदर सिंघ कोहली ने अपनी पुस्तक के पन्ना ७७ पर इस तरह दी हैं:

१. *खंभ विकांदड़े जे लहां घिंना सावी तोलि॥*
तंनि जड़ाई आपणै लहां सु सजणु टोलि॥
(पन्ना १४२६)

२. *जिना पिछै हउ गई से मै पिछै भी रविआसु॥*
जिना की मै आसड़ी तिना महिजी आस॥
(पन्ना १०९७)

३. *बहु जतन करता बलवंत कारी सेवंत सूरा चतुर दिसह॥*
बिखम थान बसंत ऊचह नह सिमरंत मरणं कदांचह॥
होवंति आगिआ भगवान पुरखह नानक कीटी सास अकरखते॥ ७॥
(पन्ना १३५४)

४. *परमाणो परजंत आकासह दीप लोअ सिखंडणह॥*
गछेण नैण भारेण नानक बिना साधू न सिध्यते॥ २॥
(पन्ना १३६०)

५. *सखी काजल हार तंबोल सभै किछु साजिआ॥*
सोलह कीए सीगार कि अंजनु पाजिआ॥
जे घरि आवै कंतु त सभु किछु पाईऐ॥
हरिहां कंतै बाझु सीगारु सभु बिरथा जाईऐ॥ ३॥
(पन्ना १३६१)

६. *मूसन मरमु न जानई मरत हिरत संसार।*
प्रेम पिरंम न बेधिओ उरझिओ मिथ बिउहार॥ ४॥
(पन्ना १३६४)

२५०. प्रश्न - सलोकों का इस्तेमाल दोहा और सोरठा लिख कर भी किया गया है, इस से क्या भाव है? मिसालें देकर स्पष्ट करो?

उत्तर - दोहा या दोहरा दो पंक्तियों की रचना को कहते हैं। सोरठा भी एक प्रकार का दोहरा ही होता है। बाबा फरीद जी और कबीर जी ने सलोकु लिखते समय इन शब्दों का इस्तेमाल भी किया है।

२५१. प्रश्न - गुरु ग्रंथ साहिब में इस्तेमाल किए गए अलंकारों पर रौशनी डालो?

उत्तर - गुरु ग्रंथ साहिब में तरह-तरह के बिम्ब और अलंकार इस्तेमाल किए गए हैं। इन्सान को भगवान को पाने का ढंग बताने और एक योग्य जीवन जीने के लिए कुदरत तथा आम ज़िंदगी में से कई मिसालें देते हुए समझाया गया है। मिसाल के तौर पर सूर्य और चंदा की रौशनी को गुरु बिना अंधेरा बताते हुए गुरु अंगद देव जी इस तरह फुरमाते हैं:

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार॥ (पन्ना ४६३)

गुरु नानक देव जी के अनुसार परमात्मा से विछोड़ा उस तरह ही है जैसे पति का घर न आना और पत्नी का उस के बिना बिजली की चमक से डर जाना। आप जी ने अपने बारह माहा में इस अवस्था को बयान किया है। आम ज़िंदगी में से मिसालें देते हुए नम्रता का गुण गाने के लिए सिंबल वृक्ष को एक बेकार वृक्ष बताया गया है। इन्सान को ज़िंदगी जीते हुए कमल के फूल की तरह कीचड़ के ऊपर रह कर परमात्मा से जुड़े रहने का उपदेश दिया गया है। सारी बाणी में पहले गुरु ने परमात्मा को पति मानते हुए इन्सान को पत्नी के रूप में दर्शाया है।

२५२. प्रश्न - गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज शब्द, आरती, सोहिला, दिनरैण, वणजारा, बिरहरै, करहलै, घोड़ियां, सुचजी, कुचजी और गुणवंती के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - आरती के बारे में गुरु नानक देव जी की आरती 'गगन मै थालु रवि' के बारे में अलग प्रश्न में बताया जा चुका है। सोहिला से भाव है तारीफ करना। प्रभु की तारीफें करने वाली बाणी सोहिला में पांच शब्द हैं जिन में गुरु नानक देव जी द्वारा लिखी आरती भी शामिल है। इस के अलावा दो और शब्द पहले गुरु जी के लिखे हुए हैं। एक शब्द चौथे गुरु का और

आखिरी शब्द गुरु अर्जुन देव जी द्वारा रचित **'करउ बेनंती'** वाला है। सोहिला का पाठ सिक्ख रात को सोने के वक्त करते हैं। दिनरैण का शब्द गुरु नानक देव जी द्वारा रचित है और यह हमें बताता है कि कैसे हमें दिन और रात बिताने चाहिएं। वणजारा से भाव है व्यापारी और इस शब्द में गुरु नानक देव जी हमें सचा व्यापार करने का उपदेश देते हैं। बिरहरै परमात्मा से हमारे विछोड़े की दशा को दर्शाता हुआ शब्द है और करहलै हमें भगवान को मिलने की ऊंचाई को प्राप्त करने के लिए कोशिश करने पर जोर देता है। सुचजी और कुचजी गुरु नानक देव जी द्वारा रचित दो शब्द हैं जो औरत के गुणों और अवगुणों का वर्णन करते हैं। गुरु अर्जुन देव जी द्वारा लिखी हुई रचना गुणवंती एक ऐसी पवित्र औरत को दर्शाती है जिस ने परमात्मा को पाने के लिए अपने आप को परमात्मा को समर्पित किया हुआ है।

२५३. प्रश्न - गुरु ग्रंथ साहिब में हर शब्द के ऊपर महला शब्द के इस्तेमाल का क्या भाव है। इस के साथ ही घर शब्द का इस्तेमाल भी किया गया है, इसका क्या भाव है?

उत्तर - महला शब्द का इस्तेमाल यह बताता है कि यह रचना कौन-से गुरु साहिब की है जैसे महला ५ का भाव है पांचवें गुरु की रचना। घर से भाव है कि उस शब्द को तबले की किस ताल पर गाना है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में १ से १७ तक घर लिखे हैं, इस से गाने वाले को पता चल जाता है कि राग के किस नंबर के ताल अनुसार गाना है।

२५४. प्रश्न - गुरु ग्रंथ साहिब में रहाउ शब्द कई बार इस्तेमाल किया गया है? इस का क्या भाव है?

उत्तर - रहाउ का भाव है ठहराव। जहां हमें रुकने के लिए कहा गया हो, भाव यह संकेत किया होता है कि इस पदु का गंभीरता से विचार करो क्योंकि वह पदु सारे शब्द का केंद्रीय भाव रखता है।

२५५. प्रश्न - क्या गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बाणी अपने समय के हालात का बयान करती है?

उत्तर - संसार की प्रत्येक साहित्यिक रचना उस के लिखे जाने के समय से प्रभावित होती है। गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बाणी भी उस समय के सामाजिक और धार्मिक हालात बताती है। हिन्दुओं में जात-पात का ज़ोर और मुसलमानों

में हकूमत का अहंकार गुरुबाणी के मुख्य आकर्षण में शामिल हैं।

गुरु महाराज ने बाबर के हमले और उस द्वारा किए गए ज़ुल्मों का भी ज़िक्र किया है। गुरु अमरदास जी ने एक सुधारक होने के नाते अपनी बाणी में जात-पात और सती प्रथा पर चोट की है। आप जी ने झूठे गुरुओं का भी अंधुले गुरु कह कर उनकी हरकतों को बताते हुए उनका पर्दा फाश किया है।

२५६. प्रश्न - क्या गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी में हिन्दू धर्म के पौराणिक और ऐतिहासिक संदर्भ से यह कहा जा सकता है कि गुरु जी इन सब संदर्भों और संकेतों में विश्वास रखते थे?

उत्तर - गुरु ग्रंथ साहिब जी के रचयिता गुरुओं तथा अन्य संतों-महापुरुषों के समय हिन्दू और इस्लाम दो प्रमुख धर्म थे। आम लोग इन धर्मों के इतिहास, पुराणों, रीति-रिवाजों तथा मर्यादाओं से वाकिफ थे। इस कारण ही गुरु जी ने जब कोई भी बात समझानी होती थी तो ऐसे संदर्भ देना स्वाभाविक ही था। मिसाल के तौर पर लोगों की नज़र में भक्त ध्रुव और प्रह्लाद भक्ति के प्रतीक थे, इस कारण किसी भक्त की बात करते हुए इनकी मिसाल वास्तविक तथ्य को आसानी से समझा सकती थी। इस तरह ही राम शब्द का इस्तेमाल श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कई जगह पर हुआ है।

परमात्मा के अनेकों नामों में से राम का नाम लोगों में ज़्यादा प्रचलित था। इस कारण ही गुरुबाणी में परमात्मा के नाम के लिए इस शब्द को इस्तेमाल किया गया है। हिन्दू धर्म और इस्लाम में से लिए गए बिम्ब या उदाहरण इस बात को प्रामाणित नहीं करती कि गुरु जी सभी पौराणिक घटनाओं और प्रचलित रीति-रिवाजों की प्रौढ़ता करते थे। उनकी नज़र में सभी देवता और भगवान माने जाने वाले राम और कृष्ण आदि एक सर्व शक्तिमान परमात्मा की रची हुई सृष्टि का एक हिस्सा थे। सिर्फ वेद या शास्त्र पढ़ने से कोई भी परमात्मा को नहीं पा सकता था क्योंकि उसका नाम जपने के अलावा उस को पाने का और कोई भी ढंग नहीं है। गुरु नानक देव जी और दूसरे गुरुओं ने हिन्दू धर्म और इस्लाम से जुड़ी कोरी रस्मों का विरोध किया। मिसाल के तौर पर गुरु नानक देव जी ने स्वयं जनेऊ पहनने से इन्कार किया। उन्होंने राग आसा में वर्णन किया है कि जनेऊ से क्या भाव है और यह किस तरह का होना चाहिए! उन्होंने जात-पात और मूर्ति पूजा का भी खंडन किया।

गुरु जी ने स्पष्ट किया कि अगर कोई धर्म के पाखंडों और आडम्बरों को धर्म समझता है तो वह भूल कर रहा है। रामकली राग में गुरु अर्जुन देव जी भी इस बात को स्पष्ट करते हैं।

भक्तों की बाणी में भी ऐसे ही विचार मिलते हैं।

२५७. प्रश्न - गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी का मनुष्य-जाति को संदेश संक्षेप में वर्णन करो?

उत्तर - गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी के अनुसार सारी दुनिया के लोगों में आपसी भाईचारा है क्योंकि हम सब 'एकु पिता एकसु के हम बारिक हैं। संसार में रह कर हर प्राणी को कमल के फूल की तरह कीचड़ रूपी काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के माया जाल में से निकल कर अहं के दीर्घ रोग से अपने आप को बचाना चाहिए परन्तु यह तब ही मुमकिन है जब कोई सच्चा गुरु उस की लिव परमात्मा से जोड़ दे। परमात्मा, जो सर्व शक्तिमान है, जिस के रूप और गुणों को बयान नहीं किया जा सकता, सिर्फ कल्पना की जा सकती है, के नाम जपने का ढंग गुरु की कृपा से, साध के संग से और सत्संग में जाकर समझ आता है। इन्सान जो भी पाता है, वह उसके कर्मों का फल है। इस संसार में किए हुए शुभ कर्म ही दरगाह में काम आते हैं और जात-पात का फर्क और ऊंच-नीच का भेदभाव वाहिगुरु की नज़र में कोई कीमत नहीं रखता। गुरुबाणी हमें सच्चा और अच्छा जीवन जीने का उपदेश देती है और हमें हर वक्त अकाल पुरुष को मिलने के लिए कोशिश करने के लिए प्रेरित करती है।

२५८. प्रश्न - गुरु ग्रंथ साहिब में गुरुओं के अलावा कौन-से भक्त की बाणी सबसे ज्यादा है और कितनी है?

उत्तर - गुरु ग्रंथ साहिब में गुरुओं के अलावा सबसे ज़्यादा भक्त कबीर जी की बाणी है।

२५९. प्रश्न - गुरु नानक देव जी द्वारा रचित 'आसा दी वार' की जानकारी दें?

उत्तर - गुरु नानक देव जी द्वारा रची हुई 'आसा दी वार' का कीर्तन और पाठ प्रातःकाल किया जाता है। इसमें २४ पउड़ियां (पहरे) और सलोक हैं। इसका गायन करते समय गुरु रामदास जी द्वारा रचित इसी राग में २४ छन्द भी साथ में गाए जाते हैं। इस वार में गुरु जी ने परमात्मा की महिमा

गाई है। उनके अनुसार जो भी व्यक्ति परमात्मा की कृपा का पात्र होता है वह उसका ही रूप हो जाता है। इन्सान के जीवन की बुराइयां धर्म के रास्ते पर रुकावटें हैं। गुरु जी उनका जिक्र करते हुए उनको दूर करने का रास्ता भी बताते हैं। वह हमें झूठ और कपट से दूर रहने की प्रेरणा देते हुए संसार में फैले हुए झूठ और पाखण्ड का पर्दा फाश करते हैं। नम्रता के गुण का वर्णन करते हुए आप सिम्बल के वृक्ष का जिक्र करते हैं जो बहुत लम्बा और विशाल होता है पर जिसमें कोई फल नहीं होता और जिसके फूल भी फीके और बेकार होते हैं। इस वृक्ष के साथ तुलना करते हुए गुरु जी कहते हैं कि नम्रता के बिना कोई भी इन्सान गरूर से भरा हुआ होता है और वह इस वृक्ष की तरह किसी के काम नहीं आता। 'आसा दी वार' की बहुत सारी पंक्तियां जीवन को दिशा-निर्देश देने के लिए अपने हृदय में बसाने योग्य हैं जैसे कि :

मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु॥

....

हऊमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि॥

....

नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु॥

इस वार में जहां गुरु नानक देव जी के ४५ सलोकु हैं वहां गुरु अंगद देव जी के भी १४ सलोकु हैं। गुरु अंगद देव जी के कुछ सलोकु श्रद्धा और प्रेम से भरे हुए हैं जैसे कि :-

जे सऊ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार॥ २॥

गुरु रामदास जी के छन्द जो 'आसा दी वार' का गायन करते समय साथ में जोड़ कर गाए जाते हैं और इस वार का हिस्सा बन गए हैं वो भी इसी राग में गुरु ग्रन्थ साहिब में सम्मिलित हैं। मिसाल के तौर पर नीचे लिखी पंक्तियां गुरु रामदास जी के ऐसे ही छन्द हैं:-

जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरु सो थानु सुहावा राम राजे॥

'आसा दी वार' जिस पुरातन वार के आधार पर गाई जानी चाहिए, उसका जिक्र भी गुरु साहिब ने वार के शुरू में ही कर दिया है। यह वार टुण्डे असराजे की धुन में गाने का आदेश है।

२६०. प्रश्न - गुरु अमरदास जी द्वारा रचित 'अनंदु साहिब' की जानकारी प्रदान करें?

उत्तर - 'अनंदु साहिब' गुरु अमरदास जी की सबसे प्रसिंद्ध बाणी है। कहा जाता है कि गुरु जी ने यह बाणी अपनी बेटी बीबी भानी जी और चौथे गुरु रामदास जी की शादी के समय उच्चारण की। उसी समय गुरु जी को अपने पुत्र के गृह में एक पुत्र के पैदा होने का समाचार भी मिला। इस बाणी में अपनी खुशी का इज़हार करते हुए गुरु जी ने परमात्मा का धन्यवाद किया। इस बाणी में ४० पउड़ियां (पहरे) हैं। पहली दो पउड़ियों में गुरु जी अपने मन की प्रसन्नता का जिक्र करते हुए कहते हैं कि हे मन, तू सदा प्रभु के संग रह, क्योंकि वह सभी दुखों को दूर करने वाला है। वह परमात्मा, जिसके पास सभी शक्तियां हैं वह हमारे सभी कार्य पूरे करता है। अगली दो पउड़ियों में गुरु जी कहते हैं कि उस मालिक के घर में किसी चीज की कमी नहीं है वह हमारी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करके हमारे मन को शांति प्रदान करता है। मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूं जिसकी वजह से मुझे सभी खुशियां, सभी सुख प्राप्त हुए हैं। अपने विचारों को आगे बढ़ाते हुए गुरु जी अगली दो पउड़ियों में कहते हैं कि उस परमात्मा के वश में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हैं और जिनकी किस्मत में हरि के नाम के साथ जुड़ना लिखा है वे इन सबसे छुटकारा पा लेते हैं। सच्चा आनंद गुरु से ही प्राप्त होता है। नाम की महिमा का गायन करते हुए वे ७वीं, ८वीं एवं १०वीं पउड़ी में भी यही विचार प्रकट करते हैं कि जब उसका असर होता है तो दुखों का नाश होता है, माया से मोह छुटता है और सचे आनंद का ज्ञान प्राप्त होता है। हमें अपने शरीर और मन, तन सब कुछ गुरु जी को सौंपकर उनके हुक्म के अनुसार रहना चाहिए।

११वीं पउड़ी में गुरु जी बताते हैं कि यह जो परिवार हमें नजर आता है इसमें से कोई भी हमेशा साथ देने वाला नहीं है। वह हमें ऐसा कार्य करने के लिए ही आदेश देता है जिसको करने से बाद में पछतावा नहीं होता है। १२वीं, १३वीं और १४वीं पउड़ी में गुरु जी हमें समझाते हैं कि परमात्मा का अन्त किसी ने नहीं पाया। यह सृष्टि रचना और जीव जन्तु सभी उसका खेल हैं। जो देवता, ऋषि और मुनि अमृत ढूंढते हैं वह अमृत उनको प्राप्त होता है जिन्होंने सच्चे परमात्मा को अपने हृदय में बसाया है। ऐसे लोगों का लोभ,

लालच और अहंकार सब मिट जाता है। भक्तों का जिक्र करते हुए गुरु जी कहते हैं कि उनकी चाल सबसे अलग है। वह बहुत कठिन राह पर चलते हैं। वे लोभ, लालच, अहंकार और ख्वाहिशों को त्याग देते हैं। वे बहुत बोलते भी नहीं हैं। उनका मार्ग "खंनिअहु तिखी वालहु निकी" वाला मार्ग है।

अगली पांच पउड़ियों में गुरु जी हमें बताते हैं कि जो लोग बड़ी-बड़ी बातें करते हैं उनको प्रभु-रस की प्राप्ति नहीं होती। नाम को जपने वाले लोग पवित्र लोग हैं और दूसरे लोगों को भी पवित्र करते हैं। सिर्फ कर्म करने से ही ज्ञान प्राप्त नहीं होता है। ज्ञान के बिना भ्रम दूर नहीं होता। यह सब तभी होता है जब गुरु की कृपा हम पर होती है। जो लोग दिल के काले हैं लेकिन बाहर से साफ नज़र आते हैं वे अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा रहे हैं। जो नाम के व्यापारी हैं वे अन्दर से भी सच्चे और बाहर से भी सच्चे हैं। ऐसा ही विचार अगली पउड़ियों में भी दिया गया है।

गुरु जी ने सिक्खों को सच्ची बाणी पढ़ने का आदेश दिया है। सच्ची बाणी के विपरीत जो लोग कच्ची बाणी पढ़ते हैं वे सच्चे रास्ते पर नहीं चल सकते। कच्ची बाणी से गुरु जी का तात्पर्य है ऐसी बाणी जो गुरु जी के अलावा अन्य लोगों को गुरु का नाम लेकर छोड़ देते हैं। गुरु के शब्द को रत्न बताते हुए परमात्मा के ज्ञान की प्राप्ति में इसका स्थान बताया गया है।

गुरु जी ने अगली कुछ पउड़ियों में अपने शरीर का शुभ कर्म करने और परमात्मा का नाम जपने के लिए इस्तेमाल करने का उपदेश दिया है। ३२वीं पउड़ी में वह अपनी रसना को अन्य सभी स्वाद छोड़कर प्रभु नाम का रस लेने के लिए कहते हैं। ३३वीं और ३५वीं पउड़ी में आप अपने शरीर को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि प्रभु ने अपनी ज्योति तक तुझमें रखकर इस संसार में भेजा है, इसलिए जिस काम के लिए तुझे भेजा गया है वही काम कर। ३६वीं पउड़ी में गुरु जी अपने नेत्रों का संयोजन करते हैं और कहते हैं कि उनको हरि की तरफ ही देखना चाहिए। सर्व संसार परमात्मा का ही स्वरूप है। अगर ऐसा विचार मन में आ जाए तो हर तरफ परमात्मा ही नज़र आता है। अपने कानों को भी वह हरि नाम सुनने के लिए कहते हैं। ३८वीं और ३९वीं पउड़ी में वह शरीर की सभी इन्द्रियों और सभी द्वारों को परमात्मा की देन बताते हुए उसका सिमरन करने के लिए और उसके नाम के सच्चे गीत को सुनने की प्रेरणा देते हैं। अनंद साहिब की आखिरी पउड़ी में गुरु

जी कहते हैं कि वे लोग बड़े भाग्यशाली हैं जिनको परमात्मा का नाम प्राप्त हो गया है और उनके सभी दुख और कष्ट दूर हो गये हैं। प्रभु बाणी से दुख और संताप सब समाप्त हो गया है। ऐसी बाणी पढ़ने और सुनने से सभी लोग पवित्र हो गये हैं। इस खुशी की अवस्था में यह बाणी खत्म होती है।

इस बाणी की महानता को देखते हुए इसको प्रातःकाल पाठ करने वाली नित्तनेम की पांच बाणियों में शामिल किया गया है। जब भी अखण्ड पाठ या साधारण पाठ का भोग पड़ता है अथवा कीर्तन की समाप्ति होती है तो अरदास करने से पहले अनंदु साहिब का पाठ किया जाता है। ज़्यादातर अनंदु साहिब की छः पउड़ियों का पाठ होता है, जिसमें पहली पांच पउड़ियां और आखिरी पौड़ी का जाप सब मिलकर करते हैं।

२६१. प्रश्न - गुरु रामदास जी द्वारा रचित (लावां) के बारे में जानकारी दें?

उत्तर - गुरु रामदास जी द्वारा रचित लावां चार पहरों में लिखा हुआ एक शब्द है जिसके पाठ के बिना किसी भी सिक्ख की शादी सम्पन्न नहीं होती। गुरुओं के समय की यह प्रथा महाराजा रणजीत सिंघ के काल में और उसके बाद कम हो गई थी लेकिन बाद में जब अनंद मैरिज़ एक्ट १९०९ में पारित किया गया तब से हर सिक्ख की शादी 'लावां' का पाठ करके ही की जाती है। पाठी सिंघ पहले एक लांव का पाठ करता है और उसके बाद रागी सिंघ उसका गायन करते हैं जिस दौरान होने वाले वर-वधू गुरु ग्रन्थ साहिब के इर्द-गिर्द परिक्रमा करते हैं। जब ४ लावां खत्म हो जाती हैं तब शादी सम्पन्न मानी जाती है और फेरे लेने वाले लड़का और लड़की पति-पत्नी बन जाते हैं।

इन चार लावों में जहां लड़के और लड़की को शादी की महत्ता के बारे में बताया गया है वहां उनको परमात्मा की उनके ऊपर की गई कृपा के अन्तर्गत उनको परमात्मा का नाम लेने और अपने जीवन को उसकी रज़ा के अनुसार व्यतीत करने के लिए उपदेश दिया गया है। पहली लांव में गुरु जी कहते हैं कि आपको अपने वैवाहिक जीवन के कर्त्तव्यों का ज्ञान होना चाहिए। गुरुओं की बाणी को मन में रखते हुए आप सच्चाई के रास्ते पर चलें और पापों से मुक्ति पाएं। अपने आपको सिर्फ सच्चे गुरु और परम पिता परमात्मा के साथ जोडें। ऐसे लोगों को खुशी प्राप्त होती है और वह खुश किस्मत होते हैं।

दूसरी लांव में कहा गया है कि मन की मैल और डर दूर हो गए हैं। हमारे अन्दर और बाहर सिर्फ एक ही परमात्मा है और उसका गुणगान करने वाले सन्तों के संग में ही उसकी प्राप्ति होती है।

तीसरी लांव में भी ऐसे ही विचार प्रकट किए गए हैं, जिससे मन में परमात्मा का प्रेम उत्पन्न हो जाए। चौथी और आखिरी लांव में गुरु जी उस अवस्था का बयान करते हैं जिसमें इन्सान को परमात्मा के बारे में ज्ञान हो जाता है और गुरु की बख्शिश से परमात्मा रोम-रोम में समा जाता है। दिन-रात हमारा ध्यान उसकी तरफ रहता है। इन्सान को पत्नी रूप में पेश करते हुए उसको अपने प्रियतम परम पिता परमात्मा के नाम में ही खुश दिखाया है। मन में पूर्ण खुशी की अवस्था प्राप्त हो गई है।

इन्सान रूपी स्त्री और उसके पति के रूप में परमात्मा को पाने की इच्छा तथा खुशी का बयान करके गुरु जी ने शादी करने वाले सिक्ख लड़के और लड़की को धर्म का रास्ता अपनाने की प्रेरणा दी है। सिक्ख धर्म में गृहस्थ न छोड़ते हुए परमात्मा के साथ जुड़े रहने का सुन्दर संकल्प प्रकट किया गया है।

२६२. प्रश्न - क्या गुरुबाणी में अन्य धर्मों से अलग रास्ता बताया गया है?

उत्तर- गुरुबाणी में बताया गुरमति मार्ग अन्य धर्मों द्वारा बताए मार्गों से थोड़ा हट कर है। तीन प्राचीन मार्ग परमात्मा को पाने के लिए कर्म मार्ग, भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग बताए जाते थे। मोक्ष प्राप्ति के ये तीनों मार्ग आपस में इस तरह से जुड़े हुए थे कि ये एक-दूसरे के बिना चल नहीं सकते। ज्ञान मार्ग में भक्ति और कर्म के अंश भी होंगे वैसे तो प्रधान ज्ञान होगा, इस तरह ही बाकी दो मार्ग—हिन्दू मत अनुसार कर्म मार्ग में कई कठिन योगाभ्यास भी शामिल थे जैसे कि मन और शरीर की हठ योग द्वारा शोध या शारीरिक और मानसिक सारे ही कर्मों का त्याग आदि।

भक्ति वाला मार्ग प्रेम मार्ग है और इस को बुद्ध और जैन जैसे कोमल सदाचारक धर्मों ने अपनाया। वैष्णव हिन्दू भी इस मार्ग की तरफ आकर्षित हुए। भक्ति लहर ने इस मार्ग को प्रचारित किया। ज्ञान मार्ग को मत के रूप में पेश करने वाले शंकराचार्य थे। गीता, वेद और उपनिषद सभी ज्ञान पर ज़ोर देते थे। इस मार्ग के लिए गृहस्थ त्यागना पड़ता है और संन्यास ग्रहण करना पड़ता है।

गुरुबाणी में बताया मार्ग इन तीनों के अंश रखता है, परन्तु फिर भी भिन्न है। गुरु साहिब आचरण की शुद्धि और मन की सफाई पर ज़ोर देते हैं परन्तु कर्म इस शुद्धि या सफाई को नहीं पा सकते क्योंकि कर्म अहं को जन्म देते हैं। परन्तु गुरु जी के अनुसार अहंत्व 'दीर्घ रोग' है और इसको छोड़ कर ही मुक्ति मिल सकती है। सो गुरु जी के अनुसार सारे कर्म भी अकाल पुरुष की इच्छा अनुसार ही करने हैं और उसकी कृपा सदका करने हैं। इसी तरह प्रभु में श्रद्धा और विश्वास बढ़ते हैं और निराशा तथा अवनति दूर होते हैं। शुभ कर्म क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से क्षीण हैं, परन्तु वह झूठे कांडों में नहीं जैसे कि योग धारण करना, गृहस्थ त्यागना आदि। भक्ति मार्ग को अपनाते हुए गुरमति में दलेरी और पौरुष के अंश शामिल किए गए हैं। भक्ति के साथ शक्ति का संकल्प सम्मिलित है। ज्ञान मार्ग से गुरमति अलग है क्योंकि ज्ञान भी अहंत्व और संन्यास की तरफ ले जाता है। गुरुबाणी का मार्ग है गृहस्थ का मार्ग, दुनिया में रह कर मुक्ति पाने का रास्ता, कमल के फूल जैसा जीवन। यह है परमात्मा के नाम से जुड़ने का रास्ता—नाम मार्ग। पाठक अगर विस्तार में नाम मार्ग पर और मार्गों के फर्क जानना चाहें तो एस. जी. पी. सी. द्वारा प्रकाशित ज्ञानी शेर सिंघ की पुस्तक गुरमति दर्शन पढ़ें। यह पुस्तक अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध है।

२६३. प्रश्न - बारह माहा से क्या भाव है? गुरु ग्रंथ साहिब में आए बारह माहा की जानकारी दो?

उत्तर - बारह माहा लोक काव्य का एक ऐसा रूप है जिस में बारह महीनों को उनके मौसम अनुसार बयान करते हुए अपने प्रियतम से बिछुड़ी हुई ब्रिहन के वियोग का ज़िक्र होता है। गुरु नानक देव जी द्वारा रचित बारह माहा तुखारी राग में शायद पंजाबी साहित्य का पहला बारह माहा है, जिस में पति-पत्नी का बिंब इस्तेमाल करके जीव-आत्मा को परम-आत्मा से बिछुड़ी हुई बताया गया है। गुरु नानक देव जी ने अपने बारह माहा में यह बताया है कि जीव अपने किए कर्मों के अनुसार इस जग में दुख भोगता है। जब जीव पर सतिगुरु की कृपा होती है तो उसको यह ज्ञान हो जाता है और वह परमात्मा से जुड़ जाता है। जो जीव गुरु उपदेश को ग्रहण करके अहं त्याग करते हैं, उनके सांसारिक दुख-क्लेश खत्म हो जाते हैं और उनकी सहज अवस्था शुरू हो जाती है। गुरु जी ने कई तरह के अलंकार इस्तेमाल

करके शब्द चित्रों द्वारा इस विचार का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। उनकी भाषा आसान और आम लोगों को समझ आने वाली है।

गुरु अर्जुन देव जी ने दूसरा बारह माहा लिखा जो कि माझ रागु में है। इसकी बोली भी बहुत आसान है। गुरु अर्जुन देव जी ने जंन साधारण को झूठे कर्म-कांडों में से निकल कर सच्चे मार्ग पर चलने का रास्ता बताया है। उनका कथन है, **"सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु"** गुरु महाराज ने हर महीने के बारे में लिखते हुए अंतिम पंक्ति में नाम जपने का उपदेश दिया है क्योंकि गुरु अर्जुन देव जी के बारह माहा का पाठ हर संग्रांद को किया जाता है। इस से यह न समझ लिया जाए कि गुरु जी ने केवल संग्रांद के दिन ही नाम जपने के लिए कहा है। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि, **"जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥"** जब उसकी कृपा आदमी पर हो जाती है तो उस के लिए सब दिन एक जैसे ही होते हैं:-

माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे॥
नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे॥ १४॥ *(पन्ना १३६)*

२६४. प्रश्न - सुखमनी साहिब में सुखों को प्राप्त करने का मार्ग बताया गया है। इसके बारे में जानकारी दें?

उत्तर - सुखमनी साहिब में २४ असटपदियां हैं और हर असटपदी से पहले एक सलोकु है। गुरु अर्जुन देव जी ने सुखमनी साहिब में इन्सान को प्रभु के नाम से जुड़ कर सुखों को मानने का रास्ता बताया है। उनके अनुसार प्रभु का नाम ही सब सुखों का खज़ाना है और यह नाम भक्तजनों के मन में रहता है। मन की शुद्धता पर ज़ोर देते हुए मन को स्थिर-अवस्था में लाने के लिए सबसे बढ़िया साधन नाम सिमरन ही बताया गया है। सुखमनी साहिब का सारा विषय-वस्तु नाम सिमरन, नाम जपने वाले की महिमा और निरंकार की महिमा के इर्द-गिर्द ही घूमता है। गुरु साहिब ने पहली असटपदी में ही प्रभु सिमरन से हासिल होने वाले वरदानों का ज़िक्र किया है। दूसरी असटपदी में भी प्रभु नाम की महिमा को बयान किया गया है। तीसरी असटपदी में नाम सिमरन की तुलना दूसरी धार्मिक विधियों से करके नाम सिमरन को ही सबसे उत्तम बताया गया है। जहां चौथी असटपदी प्रभु के आगे उसकी कृपा के लिए अरदास है, वहां पांचवीं असटपदी में मनुष्य की अकृतघ्नता का ज़िक्र किया गया है।

"गोबिद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम ॥" का निष्कर्ष निकालते हुए इन्सान को प्रभु की कृपालता का पात्र बनने के लिए प्रेरित किया गया है। अगली कुछ असटपदियां उन ढंगों को बयान करती हैं जिससे परमात्मा की कृपा पाई जा सकती है। जहां गुरु साहिब ने साधु और संगति की सम्मानता की है, वहीं ब्रह्मज्ञानी की व्याख्या भी की है। महापुरुषों की निंदा और अपना सम्मान इन्सान के ऐसे अवगुण हैं जो उसको परमात्मा से दूर रखते हैं। मनुष्य के आश्रय को व्यर्थ बताते हुए गुरु साहिब ने मनुष्य को सभी तरीके छोड़ कर प्रभु की बख्शिश लेने के लिए उसके चरणों में विनती करने का ढंग सुझाया है। जहां २२वीं असटपदी प्रभु के सर्व व्यापकता के पक्ष को उजागर करती है और मनुष्य को उस वाहिगुरु के गुण गाकर **"इह लोक सुखीए परलोक सुहेले"** का संदेश देती है, वहां २३वीं असटपदी मनुष्य को वाहिगुरु के मेल-मिलाप के ज्ञान की रौशनी का प्रकटावा करती है। सुखमनी साहिब की आखिरी असटपदी में गुरु महाराज ने इन्सान को पूर्ण गुरु की शिक्षा पर अमल करते हुए और संत जनों के बताए मार्ग से प्रभु को प्राप्त करने के वरदान को फिर दोहराया है।

ऐसा मनुष्य, जिस पर वाहिगुरु की कृपा हो जाती है समस्त युगों में मुक्ति प्राप्त करता हुआ सुखों की मणि प्राप्त करता है।

२६५. प्रश्न - सत्ते और बलवंड द्वारा रची हुई वार की जानकारी दो?

उत्तर - सत्ते-बलवंड की वार राग रामकली में है और गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ९६६-९६८ पर दर्ज है। इस वार को टिके की वार भी कहा जाता है। इस वार में गुरुओं की स्तुति करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि सभी गुरु एक ही ज्योति थे। माता खीवी जी का ज़िक्र भी इस वार में आता है।

२६६. प्रश्न - गुरुबाणी में दर्ज 'सद' के बारे में जानकारी दो?

उत्तर - सद से भाव है बुलाना। यह रचना परमात्मा द्वारा अपने पास बुलाने के मौके से सम्बन्धित है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल सद बाबा सुंदर जी द्वारा लिखी हुई है और आप ने यह गुरु अमरदास जी के ज्योति-ज्योत समाने के बाद लिखी थी। इस में ६ बंद हैं। इस में गुरु जी का ऐसे मौके पर उपदेश दिया गया है। गुरु जी के अनुसार प्राणी के मरने के बाद रोने-धोने की ज़रूरत नहीं बल्कि उस के आत्मिक कल्याण के लिए

निर्वाण कीर्तन और पाठ करना ज़रूरी है। मौत की सच्चाई को धीरज से लेना और हुक्म मानना है। सिक्खों में यह सद का पाठ अकाल चलाने के भोग के समय किया जाता है।



सिक्ख व्यक्तित्व, गुरुद्वारे और मर्यादाएं

२६७. प्रश्न - भाई बाला और मर्दाना बारे संक्षेप जानकारी दो?

उत्तर - भाई बाला और मर्दाना के नाम गुरु नानक देव जी साथ जुड़े हुए हैं। सिक्ख पुराणों के अनुसार भाई बाला और मर्दाना गुरु जी के साथ उनकी उदासियों के दौरान गए थे। वैसे तो हमें बाला जी बारे ज़्यादा जानकारी प्राप्त नहीं हुई, लेकिन पुरानी फोटो और बनाई हुई तस्वीरों से भाई बाला जी का गुरु नानक देव जी के साथ होना साबित होता है। भाई बाले वाली जन्म साखी की प्रसिद्धी और विद्वानों की उस पर निर्भरता भी भाई बाले के अस्तित्व का सबूत है। जहां तक भाई मर्दाना जी का सवाल है वह जन्म साखियों में उभर कर आएं हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उनके नाम पर ३ शब्द भी हैं। कहा जाता है कि आप जी का जन्म भी राय भोइं की तलवंडी में ही गुरु नानक जी के जन्म से कोई १० वर्ष पहले हुआ था क्योंकि आप जी के पहले ६ बहन-भाई गुजर चुके थे, इस कारण आप जी की माता ने आप जी को बचाने की खातिर 'मर जाना' कहना शुरू कर दिया था परन्तु जब उस परिवार का सम्बन्ध गुरु नानक देव जी के साथ हुआ तो गुरु जी ने उस को 'मरता-ना' का नाम दे दिया। जन्म साखियों में भाई मर्दाना की बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। गुरु जी ने जब भी कोई बात समझानी होती तो भाई मर्दाने को ही इसका माध्यम बनाया जाता। मिसाल के तौर पर भाई मर्दाना को प्यास लगी तो वली कंधारी को तारने का समय आया। भाई मर्दाना जी

की एक और बात, जिस ने उनको अमर कर दिया, वह है उनका गुरु जी के लिए कीर्तन करने के समय रबाब बजाना। सिक्ख इतिहास में वह पहले रागी और रबाबी थे। पाकिस्तान में आज भी उनकी पीढ़ी में से लोग गुरुबाणी का कीर्तन करते हैं।

२६८. प्रश्न - भाई गुरदास जी के बारे में ज़रूरी जानकारी दो?

उत्तर - भाई गुरदास जी भल्ला परिवार के साथ सम्बन्धित थे और गुरु अमरदास जी के भतीजे लगते थे। उनके पिता ईशर दास भल्ला गुरु जी के चाचा जी के पुत्र थे। वैसे तो उनके शुरू के जीवन के बारे में ज़रूरी जानकारी प्राप्त नहीं है परन्तु क्योंकि आप बहुत विद्वान थे इस कारण यह कहा जा सकता है कि आप ने काफी विद्या हासिल की होगी। आप ने सिक्खी प्रचार के लिए बहुत यात्रा की और गुरु अमरदास जी से लेकर गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के समय तक कई स्थानों पर सिक्खी का प्रचार किया। गुरु ग्रंथ साहिब की पहली बीड़ के लिखारी भी भाई गुरदास जी ही थे। भाई गुरदास जी ने स्वयं भी बहुत काव्य रचना की परन्तु जब गुरु जी ने उनकी रचनाओं को गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल करने के लिए कहा तो आप ने नम्रता से यह कहा कि "सेवक साहिब के दरबार बैठा शोभा नहीं देता" क्योंकि भाई गुरदास जी की ज्यादा रचनाएं गुरु जीवन, गुरुबाणी और सिक्खी के उसूलों की व्याख्या करती हैं इस कारण गुरु जी ने उनको आदि ग्रंथ में न शामिल करते हुए उनकी बाणी को 'गुरुबाणी की कुंजी' होने का वचन किया। १६०६ ई. में भाई गुरदास जी और बाबा बुड्ढा जी को साथ लेकर गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अकाल तख्त की नींव रखी। भाई साहिब ने इस के निर्माण की सेवा भी निभाई। उनकी रचनाओं में ४० आध्यात्मिक वारें और ६७५ कबित्त ब्रज भाषा में और कुछ सलोक संस्कृत में मिलते हैं।

२६९. प्रश्न - भाई मंझ जी कौन थे और उन्होंने गुरु घर की सेवा किस तरह की?

उत्तर - भाई मंझ जी एक राजपूत खानदान में से थे। आप जी सुल्तान सखी सरवर के शिष्य थे। एक बार जब आप जी की मुलाकात गुरु अर्जुन देव जी से हुई तो वह गुरु घर के ही होकर रह गए। आप जी गुरु के लंगर हेतु लकड़ियां लाते हुए कुएं में गिर पड़े। आप सारी रात सीधे खड़े रहे और लकड़ियों को सिर पर उठाए रखा ताकि वह भीग न जाएं। सुबह जब गुरु

जी को पता चला तो उन्होंने भाई मंञ जी को कुएं में से निकलवा कर उस की सेवा की प्रशन्सा की। भाई मंञ जी को बाद में सिक्ख धर्म के प्रचार के लिए भी सेवा दी गई। आप जी यह प्रचार गांव कंग में करते थे जहां अब उनकी याद में एक गुरुद्वारा भी है।

२७०. प्रश्न - भाई सालो जी कौन थे और उन्होंने गुरु घर की सेवा कैसे की?

उत्तर - भाई सालो जी श्री गुरु अमरदास जी के एक विश्वस्त सिक्ख थे। आप जी ने गुरु अर्जुन देव जी के समय अमृतसर की स्थापना के लिए बड़ी सेवा की। हरिमन्दिर साहिब की सेवा में भी आप का योगदान था। आप जी का देहांत श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय हुआ और गुरु जी ने आप अपने हाथों से उनकी चिता को अग्नि भेंट किया। उनकी याद में गुरुद्वारा टोबा भाई सालो जी अमृतसर में स्थित है जहां बहुत श्रद्धालु दर्शन करने और स्नान करने के लिए आते हैं। कई औरतें संतान प्राप्ति के लिए उस टोबे में स्नान करके मनवांछित फल प्राप्त करते हैं।

२७१. प्रश्न - भाई नंद लाल जी के बारे में आवश्यक जानकारी दो?

उत्तर - भाई नंद लाल जी गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय में एक प्रसिद्ध कवि थे। आप जी अरबी और फारसी के विद्वान थे। आप जी की पत्नी एक सिक्ख परिवार से होने के कारण आप सिक्ख धर्म के साथ बहुत प्यार करते थे। आप ने कुछ देर औरंगज़ेब के दरबार में काम किया था फिर आनंदपुर साहिब में आकर ज़्यादा समय गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ ही बिताया। भाई नंद लाल जी की कुल ९ रचनाएं हमारे पास उपलब्ध हैं जिन में से १ हिन्दी में और ८ फारसी में हैं। इन रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं:

दीवानि गोइआ (फारसी में,) जिंदगीनामा, जोत बिकास (फारसी) और जोत बिकास (हिन्दी), गंजो नामा, तौसीफ-ओ सिना, अरज़ुल अल्फाज़, दस्तूर-अल इनशॉ खातिमा, रहतनामा और तनखाहनामा।

भाई नंद लाल जी ने गुरु गोबिंद सिंघ जी के बारे में जो यादगारी पंक्तियां कही हैं उनसे गुरु जी के व्यक्तित्व के बारे में जानकारी तो मिलती ही है, भाई साहिब के गुरमति के प्रति प्यार और सत्कार का भी प्रकटावा होता है। ऐसी कुछ पंक्तियों का ज़िक्र पहले सवालों के जवाबों में आ चुका है।

२७२. प्रश्न - नीचे लिखे सिक्ख व्यक्तित्वों की संक्षेप जानकारी दो?
भाई महां सिंघ जी, भाई घनय्या जी, भाई जोगा सिंघ जी, बाबा बंदा सिंघ बहादुर, भाई बिधी चंद जी और भाई मनी सिंघ जी।

उत्तर - भाई महां सिंघ—भाई महां सिंघ जी उन सिक्खों के नेता थे जो गुरु गोबिंद सिंघ से विमुख होकर उनको बेदावा लिख कर आनंदपुर साहिब की लड़ाई को बीच में छोड़ कर चले गए थे परन्तु जब बाद में उनको अपने घरों से फिटकारें मिलीं तो वह वापस गुरु जी के पास आ गए और मुगल सेना से लड़ते हुए अपने ४० साथियों के साथ मुक्तसर के स्थान पर शहीद हो गए। भाई महां सिंघ ने इस संसार को छोड़ने से पहले गुरु जी के आगे विनती की थी कि वे उनका बेदावा फाड़ दें और गुरु जी ने उनकी विनती प्रवान करके उनका बेदावा उऩके सामने फाड़ दिया और टूटी जोड़ दी। आप जी का शहीदी दिवस अन्य शहीदों के साथ मुक्तसर में माघी वाले दिन मनाया जाता है।

भाई घनय्या—भाई घनय्या जी सेवा की वह पुंज थे जो गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा लड़ी आनंदपुर की लड़ाई में हर सिक्ख और मुसलमान को एक जैसा समझ कर पानी पिलाते थे। आप जी की सेवा को देखते हुए गुरु गोबिंद सिंघ जी ने आप को मरहम-पट्टी भी दी थी ताकि प्रत्येक ज़ख़्मों पर भी आप पट्टी कर सकें। इस बात से भाई घनय्या जी आज की दुनिया में चल रहे 'रैड क्रॉस मूवमैंट' के सिरमौर हैं।

भाई जोगा सिंघ—भाई जोगा सिंघ एक पूर्ण गुरसिख थे और गुरु गोबिंद सिंघ जी की हज़ूरी में रहते थे। कहा जाता है कि जब आप के लावां फेरे हो रहे थे तो अभी दो फेरे बाकी थे कि उनको गुरु जी की तरफ से आनंदपुर साहिब पहुंचने का संदेश मिला। आप उसी वक्त आनंदपुर साहिब गुरु जी को मिलने के लिए चल पड़े। उनकी रास्ते में एक वेश्या के पास जाने की कहानी सच्ची नहीं लगती। जो आदमी गुरु जी का हुक्म मान कर अपनी शादी छोड़ सकता है वह कोई बुरा काम नहीं कर सकता।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर — बाबा बंदा सिंघ बहादुर एक वैरागी थे। उनका जन्म पुंछ कशमीर में हुआ था, परन्तु बाद में वह नांदेड़ के स्थान पर जाकर रहने लग गए थे। गुरु गोबिंद सिंघ जी की मुलाकात बंदा सिंघ बहादुर के साथ वहीं हुई थी। बंदा सिंघ बहादुर का पहला नाम माधो दास था परन्तु

गुरु जी के प्रभाव में आकर उसका नाम गुरबख्श सिंघ हो गया था। वह गुरु जी के हुक्म पर ही पंजाब आया था और यहां आकर सारे पंजाब के हाकमों द्वारा गुरु जी पर किए गए जुल्मों का बदला लिया। उस ने पहली बार पंजाब में सिक्ख राज की नींव रखी। आखिर में वह गुरदास नंगल की लड़ाई में पकड़ा गया और उसको व उसके साथियों को दिल्ली ले जाकर शहीद कर दिया गया। दो गुरुओं की कुबार्नियों के बाद बंदा सिंघ बहादुर ने सिक्खों की धर्म के लिए कुर्बानी देने की प्रथा को शुरू किया।

भाई बिधी चंद — भाई बिधी चन्द जी श्री गुरु अर्जुन देव जी के समय में गुरु-घर से जुड़े हुए थे। गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय उनकी ग्वालियर से रहाई के बाद आप जी गुरु के अंग-रक्षक बने रहे। जब गुरु जी को मिलने वाले घोड़े शाही फौज ने कब्जे में ले लिए थे तो लाहौर के किले में से घोड़ों को निकालने का दायित्व आप को सौंपा गया। इस से उनकी बहादुरी का पता चलता है।

भाई मनी सिंघ — भाई मनी सिंघ जी गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रमुख सिक्ख थे। आप जी एक निर्भय योद्धा, धार्मिक और सामाजिक अग्रणी, गंभीर विद्वान और महान शहीद थे। गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ शुरू करवाई तब बीड़ लिखने की सेवा आप ने की। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के ज्योति-ज्योत समाने के बाद जब सिक्खों में दो धड़े बन गए तो माता जी ने आप को अमृतसर भेजा ताकि समस्या का हल हो सके। आप जी हरिमन्दिर साहिब के ग्रंथी नियुक्त किए। आप ने अपनी सेवा से सिक्खों को एकमुठ होकर अमृतसर आकर दीवाली मनाने का संदेश दिया, परन्तु मुगलों के षड़यंत्र के कारण बहुत सारे सिक्ख अमृतसर न पहुंच सके जिससे चढ़ावा कम हुआ तो भाई मनी सिंघ वह पैसे मुगल हाकम को न दे सके, जिस बारे में उन्होंने उनके साथ समझौता किया था। इस समझौते अनुसार भाई मनी सिंघ ने सिक्खों को हरिमन्दिर आकर दीवाली मनाने के बदले सरकार को कुछ पैसे देने किए थे। मगर मुगल हाकमों की नीयत खराब होने के कारण यह समझौता फेल हो गया। इस उपरांत जब भाई मनी सिंघ जी ने मुगल हाकमों को कुछ भी देने से इन्कार कर दिया तो ज़ालिमों ने उनके बंद-बंद कटवा कर उन्हें शहीद करवा दिया। यहां यह भी बताना ज़रूरी है कि गुरु गोबिंद सिंघ जी की सारी बाणी भाई मनी सिंघ जी ने एकत्र करके दसम ग्रंथ की स्थापना की थी।

२७३. प्रश्न - नीचे लिखी सिक्ख बीबियों के व्यक्तित्व के बारे में जानकारी दें? माता गुजरी जी, माता साहिब कौर जी, माई भागो जी।

उत्तर - *माता गुजरी जी* — माता गुजरी जी गुरु तेग बहादुर जी की पत्नी और गुरु गोबिंद सिंघ जी के माता जी थे। आप जी ने अपने जीवन में हुई घटनाओं को परमात्मा की इच्छा मानते हुए बड़े धैर्य और शांति से जीवन व्यतीत किया। जब गुरु तेग बहादुर साहिब जी शहीद हुए तो आपने हिम्मत न हारी और अपने ९ वर्ष के पुत्र गुरु गोबिंद सिंघ को अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए तैयार किया। माता गुजरी जी ने अपने परिवार को कष्टों में से गुजरते हुए देखा और आखिर में छोटे साहिबज़ादों की शहीदी के समय का आघात सहने के लिए भी वह उनके साथ थे। यह बात सच है कि छोटे साहिबज़ादों की शहीदी की खबर सुन कर माता जी ने भी अपना शरीर त्याग दिया परन्तु उनके बारे में यह कहना कि उन्होंने बुर्ज से कूद कर आत्महत्या कर ली, उनके व्यक्तित्व के खिलाफ होगा। भाई काह्न सिंघ नाभा जैसे महान विद्वान इस बात को नहीं मानते। वास्तविकता यह है कि छोटे साहिबज़ादों को शहीद होने की प्रेरणा उनकी दादी जी ने ही दी थी। जब माता जी को इस बात का पता चला होगा तो उन्होंने वाहिगुरु का शुक्र ही किया होगा।

माता साहिब कौर जी—माता साहिब कौर जी गुरु गोबिंद सिंघ जी की पत्नी थीं। आप नांदेड़ में भी गुरु जी के साथ थीं परन्तु गुरु जी ने ज्योति-ज्योत समाने से पहले माता जी को दिल्ली भेज दिया था। माता सुन्दरी जी और माता साहिब कौर जी दोनों अजमेरी गेट के पास कूचा दिलवाली में रहते थे। दिल्ली आते समय माता साहिब कौर अपने साथ कुछ शस्त्र भी लेकर आए थे जो उन्होंने बहुत संभाल कर रखे थे। जब बंदा सिंघ बहादुर की शहीदी के बाद सिक्खों में गुटबाज़ी हो गई तो दोनों माताओं ने दिल्ली में पंथ का संतोषजनक मार्गदर्शन किया। सिक्खों को दसवंद देने की प्रेरणा भी माताओं ने ही दी, जिस सिलसिले में कई हुक्मनामे जारी किए गए जो आज भी उपलब्ध हैं। माता साहिब कौर जी का देहांत १७४७ को दिल्ली में हुआ। माता साहिब देवां का एक गुरुद्वारा गोदावरी के किनारे नांदेड़ से कुछ दूरी पर स्थित है।

माई भागो जी—माई भागो जी सिक्ख इतिहास की वह माता है जिस

ने महां सिंघ और उन के साथियों को, जो गुरु गोबिंद सिंघ जी को बेदावा लिख कर दे आये थे, फिटकारा और शर्मिंदा किया। जिस के फलस्वरूप वे गुरु साहिब के पास वापस गये और बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हुए। माई भागो जी आप भी मुक्तसर की लड़ाई में लड़ी थीं और ज़ख्मी हुई थीं। गुरु जी ने उनके ज़ख्मों को ठीक किया और अमृत-पान करा कर उन्हें माई भागो से भाग कौर बना दिया। माई जी गुरु जी के साथ ही नांदेड़ गईं और गुरु जी के ज्योति-ज्योत समाने के बाद उन्होंने अपना डेरा बिदर जाकर बना लिया। आज गांव जनवाड़े में, जो बिदर से करीब १० किलोमीटर की दूरी पर है, एक कमरे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश है और यह स्थान माई भागो जी का डेरा बताया जाता है। अब वहां गुरुद्वारा बनाया जा रहा है।

२७४. प्रश्न- सिक्खों की ऐतिहासिक यादगारों के बारे में जानकारी देने की कुछ पुस्तकों का जिक्र करें?

उत्तर - सिक्खों की ऐतिहासिक यादगारों में गुरुओं से सम्बन्धित गुरुद्वारे हैं। गुरुद्ववारों के बारे में किताबें कम हैं लेकिन उनके इतिहास के बारे में जानकारी उन किताबों में मिल जाती है जिसमें गुरु साहिब का जीवन वृत्तांत है। पुरानी पुस्तकों में पंडित तारा सिंघ नरोत्तम की गुरु तीर्थ संग्रह (१८८४) और ज्ञानी ठाकुर सिंघ की 'गुरुद्वारा दर्शन' दो महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं। उस के बाद पंजाबी में कई किताबें छपी हैं जिन में एस. जी. पी. सी. द्वारा तैयार की हुई पाकिस्तान के गुरुद्वारों के बारे में भी एक किताब है। गुरुद्वारों के बारे में सबसे महत्त्वपूर्ण पुस्तक सः पतवंत सिंघ द्वारा तैयार की हुई और "हिमालियन बुक्स दिल्ली" द्वारा छापी गई है। इस बहुत बड़े आकार वाली पुस्तक में दुनिया के सारे गुरुद्वारों के बारे में पंजाबी और अंग्रेज़ी में जानकारी दी गई है। सारे ऐतिहासिक गुरुद्वारों के सुन्दर चित्र भी इस में उपलब्ध हैं। एक और किताब "हिस्टोरिकल सिक्ख श्राइन" जो कि मेजर गुरमुख सिंघ द्वारा तैयार की गई है और सिंघ ब्रदर्ज़ अमृतसर की तरफ से छापी गई है। कुछ किताबें पाकिस्तान में भी छपी हैं जो इस में बहुत उपयोगी हैं। हाल ही में छपी इकबाल कैसर की "पाकिस्तान में सिक्खों के ऐतिहासिक पवित्र स्थान" बहुत ही महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ सिद्ध होगी। इस में गुरुद्वारों का इतिहास, गुरुओं का इतिहास, सिक्ख धर्म के शुरू वाले सिद्धांतों पर रौशनी डाली गई है। कुछ सूफियों के बारे में जिनका सिक्ख इतिहास से सम्बन्ध

है जैसे मर्दाना, राय बुलार, मियां मीर आदि की ज़रूरी जानकारी भी दी गई है।

२७५. प्रश्न - *गुरु नानक देव जी से सम्बन्धित वह कौन से गुरुद्वारे हैं जो पाकिस्तान में रह गए हैं?*

उत्तर - क्योंकि गुरु नानक देव जी पंजाब के उस हिस्से में पैदा हुए थे जो अब पाकिस्तान में चला गया है, इस कारण उनसे सम्बन्धित बहुत से गुरुद्वारे पाकिस्तान में हैं। ननकाना साहिब के बहुत से गुरुद्वारों का ज़िक्र पहले कुछ सवालों के जवाबों में कर चुके हैं, सिर्फ यहां पर नाम ही बताए जा रहे हैं, गुः जन्म स्थान, गुः बाल लीला, गुः पट्टी साहिब, गुः क्यारा साहिब, गुः माल जी साहिब और गुः तंबू साहिब (यहां पर गुरु जी सच्चा सौदा करके आने के बाद अपने पिता जी से छुप कर बैठे थे) गुः पंजा साहिब हसन अबदाल, ऐमनाबाद में गुः रोड़ी साहिब, गुः चक्की साहिब और खुई भाई लालो जी तथा दीपालपुर में ननकियाना कुछ और प्रसिद्ध गुरुद्वारे हैं जो गुरु नानक देव जी के जीवन से सम्बन्धित हैं और पाकिस्तान में रह गए हैं।

२७६. प्रश्न - *क्या गुरु नानक देव जी से सम्बन्धित भारत और पाकिस्तान से बाहर भी कहीं कोई गुरुद्वारा है?*

उत्तर - ईराक की राजधानी बगदाद में एक कमरा गुरु जी से सम्बन्धित बताया जाता है परन्तु वहां कोई गुरुद्वारा नहीं है। अफगानिस्तान में पहले काबुल में एक गुरुद्वारा बताया जाता था, परन्तु अब वहां कोई गुरुद्वारा नहीं। जलालाबाद में एक गुरुद्वारा चश्मा साहिब गुरु जी की वहां की यात्रा की यादगार है। बंगला देश में ढाका, चिट्टागांग और सिल्बट के स्थानों तथा देश के बंटवारे से पहले गुरुद्वारे थे परन्तु अब वह नहीं हैं। सो भारत और पाकिस्तान से बाहर अब कोई भी गुरुद्वारा चलती हालत में नहीं।

२७७. प्रश्न - *भारत के किन इलाकों में गुरु नानक देव जी से सम्बन्धित गुरुद्वारे हैं?*

उत्तर - क्योंकि गुरु नानक देव जी ने लंबी यात्राएं कीं, इस कारण आप से सम्बन्धित गुरुद्वारे हर कोने में फैले हुए हैं। कशमीर में अनंतनाग, मटन और बीरवाहा के स्थानों पर आप की यात्रा की गवाही देते हुए गुरुद्वारे मौजूद हैं। दिल्ली में गुः नानक पिआऊ और गुः मजनूं का टिल्ला आप की यादगार

है। हरियाणा में कुरुक्षेत्र, पिहोवा, करनाल और यू. पी. में मथुरा, बनारस व हरिद्वार में भी पहली पातिशाही के गुरुद्वारे हैं। यू.पी. में सबसे प्रसिद्ध गुरुद्वारे नानक मत्ता और निकटवर्ती इलाके में हैं और इन का ज़िक्र पहले आ चुका है। गुरु नानक देव जी के कुछ और प्रसिद्ध गुरुद्वारे कर्नाटक में बिदर के स्थान पर और पंजाब में बटाला और सुल्तानपुर के स्थान पर हैं। बिदर के स्थान पर गुरु जी ने पीर जलालुद्दीन से गोष्टी की और उसकी पानी की कमी की शिकायत पर एक पत्थर हटा कर पानी का चश्मा निकाल दिया। बटाला और सुल्तानपुर के गुरुधामों का ज़िक्र आगे हो चुका है।

२७८. प्रश्न - गुरु अंगद देव जी, गुरु अमरदास जी और गुरु रामदास जी के जीवन से सम्बन्ध रखने वाले गुरुद्वारे कहां-कहां पर स्थित हैं?

उत्तर - गुरु अंगद देव जी, गुरु अमरदास जी और गुरु रामदास जी ने बहुत थोड़ी यात्राएं कीं जिस कारण उनसे सम्बन्धित ज़्यादा गुरुद्वारे वहां पर हैं जहां उनकी गद्दी स्थित थी जैसे कि गुरु अंगद देव जी के खडूर साहिब, गुरु अमरदास जी के गोइंदवाल साहिब और गुरु रामदास जी के अमृतसर। गुरु रामदास जी के जन्म-स्थान का गुरुद्वारा लाहौर में है जो अब पाकिस्तान में रह गया है। खडूर साहिब तरनतारन से करीब २० किलोमीटर दूरी पर तथा अमृतसर से करीब ४० किलोमीटर दूर है। इस स्थान पर गुः तपयाणा साहिब, गुः तप स्थान श्री गुरु अंगद देव जी, गुः अंगीठा साहिब, गुः थड़ा साहिब गुरु अमरदास जी का माई भराई वाला गुरुद्वारा सुशोभित है। गुरुद्वारा मल्ल अखाड़ा का ज़िक्र पहले एक प्रश्न में आ चुका है। गोइंदवाल साहिब में स्थित गुरुद्वारे हैं—बाऊली साहिब, किल्ली साहिब, चौबारा बाबा मोहन जी, गुरुयाई स्थान गुरु रामदास जी और ज्योति-ज्योत स्थान भाई गुरदास जी। गोइंदवाल से खडूर साहिब जाने वाली सड़क पर स्थित गुरुद्वारा दमदमा साहिब का ज़िक्र पहले आ चुका है। गुरु रामदास जी के अमृतसर स्थित गुरुद्वारों में गुरुद्वारा गुरु के महल का ज़िक्र भी हम पहले सवालों के जवाबों में कर चुके हैं।

२७९. प्रश्न - गुरु अर्जुन देव जी और गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के गुरुद्वारे .ज्यादा कौन से शहरों में हैं?

उत्तर - गुरु अर्जुन देव जी से सम्बन्धित गुरुद्वारे ज़्यादा अमृतसर और लाहौर में हैं जिनमें अमृतसर का श्री दरबार साहिब का गुरुद्वारा शामिल है।

आप जी की शहीदी वाले स्थान पर लाहौर में गुरुद्वारा है। गुरु हरिगोबिंद साहिब ने कशमीर और पाकिस्तान में गए हुए इलाकों की यात्रा की। आप और भी कई स्थानों पर गए जिस कारण आप के गुरुद्वारे कई जगहों पर हैं। आप के प्रसिद्ध गुरुद्वारों का ज़िक्र आप के जीवन से संबंधित सवालों के जवाबों में किया गया है।

२८०. प्रश्न - गुरु हरि राय साहिब और गुरु हरि कृष्ण और गुरु तेग बहादुर साहिब के गुरुद्वारे कौन-से प्रमुख शहरों में स्थित हैं?

उत्तर - पहले २ गुरुओं का अत्यधिक जीवन कीरतपुर में व्यतीत हुआ इस कारण आप से सम्बन्धित गुरुद्वारे कीरतपुर में हैं। दिल्ली के दो मशहूर गुरुद्वारे बंगला साहिब और बाला साहिब गुरु हरि कृष्ण जी से जुड़े हुए हैं। गुरु तेग बहादुर साहिब के बहुत से गुरुद्वारे आनंदपुर साहिब, जिस को पहले चक्क नानकी कहा जाता था, कीरतपुर साहिब और दिल्ली में हैं। गुः शीश गंज और रकाब गंज आप जी की शहीदी और शरीर के अंतिम संस्कार की घटनाओं से सम्बन्धित हैं। गुरु तेग बहादुर जी ने बहुत लंबी यात्रा की जिस कारण उनके गुरुद्वारे हिमाचल, हरियाणा, उत्तर-प्रदेश से लेकर आसाम तक हैं।

२८१. प्रश्न - गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन से सम्बन्धित गुरुद्वारों का ज़िक्र करें?

उत्तर - गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन से सम्बन्धित गुरुद्वारे ज़्यादातर पटना, बिहार और हिमाचल प्रदेश में हैं। आप जी की बाल अवस्था का ज़िक्र करते हुए पटना के गुरुद्वारों का ज़िक्र किया गया था। हिमाचल में ज़िला बिलासपुर में बसंतगढ़ गांव में ३ गुरुद्वारे गुरु जी के माता जीतो जी के साथ विवाह से सम्बन्धित हैं, जिनको मिला कर गुरु का लाहौर कहा जाता है। ऊना ज़िले के बाथू गांव में, जहां गुरु जी बाबा कलाधारी को मिले थे, एक गुरुद्वारा स्थित है। ऊना-अम्ब मार्ग पर एक और गुरुद्वारा गुरु जी के नादौन जाते हुए रास्ते में रुकने से सम्बन्धित है। ये दोनों गुरुद्वारे महाराजा रणजीत सिंघ के समय ग्रांट मिलने पर बनाए गए थे जो अब एस.जी.पी.सी. के नियंत्रण में हैं। गुरुद्वारा दमदमा साहिब ऊना (पंजावर मार्ग पर) ऐसा ही एक और गुरुद्वारा है। पाऊंटा साहिब, भंगाणी, नादौन, मण्डी और रिवालसर के गुरुद्वारों का ज़िक्र आगे आ चुका है। गुरु जी के पंजाब में गुरुद्वारे गुरु गोबिंद

सिंघ मार्ग पर पड़ते हैं, जैसे चमकौर साहिब, माछीवाड़ा, लुधियाना के बाहर आलमगीर, मुक्तसर, तलवंडी साबो आदि। दिल्ली में मोती बाग का गुरुद्वारा और दमदमा साहिब का गुरुद्वारा दसम पातिशाह से संबंध रखते हैं।

गुरुद्वारा माता सुंदरी जी वह स्थान है जहां माता सुंदरी जी और माता साहिब देवां जी दिल्ली में रहते थे। दोनों माताओं का अंतिम संस्कार जिस जगह पर हुआ था वह गुरुद्वारा बाला साहिब है, जहां गुरु हरिकृष्ण जी का अंतिम संस्कार भी हुआ था। दोनों माताओं की समाधियां भी वहीं पर हैं। गुरु गोबिंद सिंघ से सम्बन्धित बहुत से गुरुद्वारे नांदेड़ और उसके आस-पास ही हैं जहां गुरु जी ने अपने जीवन के अंतिम वर्ष बिताए। मुख्य गुरुद्वारों के नाम हैं—सचखंड श्री हज़ूर साहिब (जहां गुरु जी ज्योति-ज्योत समाए), गुः नगीना घाट, गुः बाबा बंदा बहादुर, गुः हीरा घाट, गुः शिकार घाट और गुः माता साहिब देवां।

२८२. प्रश्न - सिक्खों के पांच तख़्त कौन से हैं?

उत्तर - १. तख़्त श्री पटना साहिब। २. तख़्त श्री केसगढ़ साहिब। ३. श्री अकाल तख़्त साहिब। ४. तख़्त श्री हज़ूर साहिब। ५. तख़्त श्री दमदमा साहिब।

२८३. प्रश्न - गुरुबाणी में सिक्खों को किस तरह का जीवन बिताने की प्रेरणा दी गई है?

उत्तर - गुरुबाणी में सिक्खों को गृहस्थ में रह कर परमात्मा से जुड़े रहने का संदेश दिया गया है। गुरु जी ने कमल के फूल की मिसाल देकर यह बताया है कि जिस तरह कमल का फूल कीचड़ में रह कर भी कीचड़ से ऊपर उठ कर रहता है उसी तरह ही इस मायायुक्त संसार में अपनी नेक कमाई करते हुए गुरसिख को वाहिगुरु के नाम से जुड़े रहना चाहिए। इस संबंध में आगे आए हुए सवालों में स्थिति को स्पष्ट किया गया है। संक्षेप में गुरु जी ने सिक्खों को अपने सारे फर्ज़ निभाते हुए एक अच्छा इन्सान बन कर जीने का संदेश दिया है।

२८४. प्रश्न - सिक्ख को सुबह उठने व नाम जपने के बारे में क्या हिदायतें हैं?

उत्तर - गुरुबाणी के अनुसार सुबह का समय नाम जपने का सबसे उत्तम समय है। गुरसिख अपना दिन सुबह उठ कर स्नान करके प्रभु की भजन

बंदगी से शुरू करता है। हर गुरसिख को सुबह नित्तनेम की ५ बाणियों का पाठ करने का आदेश है। ये बाणियां हैं: जपु जी साहिब, जापु साहिब, स्वय्ये, चौपई और अनंदु साहिब। गुरु रामदास जी की गुरुबाणी में दी गई महत्त्वपूर्ण पंक्तियां जो एक जवाब में आ चुकी हैं इस बात को स्पष्ट करती हैं। जिन गुरसिखों के घर गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश है उनका यह फर्ज़ बनता है कि वे सुबह ही प्रकाश करके गुरु महाराज का हुक्मनामा लें। जो गुरसिख गुरुबाणी के वचनों के अनुसार अपना दिन व्यतीत करते हैं उनको गुरु महाराज हर मुश्किल और समस्या से बचाते हैं और हर मैदान फतह करवाते हैं।

२८५. प्रश्न - श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से हुक्मनामा किस तरह लेना चाहिए?

उत्तर - श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश करते समय जो शुभ वाक्य पन्ने के सामने हों, उनके दाईं तरफ के पन्ने (अर्थात जपु की तरफ) जो शब्द शुरू हो अथवा जिस शब्द के आदि १ओंकार हो, उस का पाठ मूल मंत्र पढ़ने के बाद करना चाहिए। इस शब्द को सिक्ख संगत सतिगुरु का हुक्म मान कर अंगीकार करती है। अगर शब्द पिछले पन्ने से शुरू हुआ हो, तब पत्रा पलट कर पाठ आरम्भ करना चाहिए। कई ग्रंथी दोपहर के समय पन्ने के मध्य का शब्द और श्याम के समय पन्ने का अंतिम शब्द पढ़ते हैं, परन्तु यह मन-कल्पित रीति है। *(काह्न सिंघ नाभा)*

२८६. प्रश्न - गुरु ग्रंथ साहिब का आदर करते हुए किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर - गुरु ग्रंथ साहिब कोई धार्मिक पुस्तक नहीं बल्कि सिक्खों के गुरु हैं, इस कारण उनका सम्मान करना सब सिक्खों का फर्ज है। कुछ अज्ञानी लोग कहते हैं कि यह भी एक किस्म की मूर्ति पूजा है परन्तु वह भूल जाते हैं कि गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित बाणी हमारे गुरुओं के मुख से उच्चारण किए शब्द हैं। वह शब्द हमें ज़िंदगी को ठीक ढंग से जीने का रास्ता दिखाते हैं और आखिर में आत्मा को परम-आत्मा से मिलने के लिए सहायक होते हैं। ऐसे शब्द-गुरु कोई मूर्ति नहीं हैं। भाई काह्न सिंघ नाभा गुरु ग्रंथ साहिब के सम्मान के बारे में बात करते हुए इस तरह कथन करते हैं कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर जब गुरु ग्रंथ साहिब को ले जाना हो, तब उन्हें शीश पर या किसी सवारी पर सम्मान के साथ शब्द पढ़ते और चंवर झूलाते हुए ले

जाना चाहिए। कई सज्जन रास्ते में सवारी के आगे जल छिड़कते जाते हैं, यह केवल अज्ञानता है, क्योंकि कुछ बूंदें छिड़कने से मिट्टी नहीं दब सकती। अगर किसी गुरुपर्व आदि के समय सड़कों पर छिड़काव किया जाए तो योग्य है। प्रत्येक सिक्ख का फर्ज़ है कि गुरु ग्रंथ साहिब को देख कर ताज़ीम (ताज़ीम) दे।

बहुत लोग गुरु ग्रंथ साहिब की सवारी के आगे शंख और घड़ियाल बजाते हैं, जो शोभा नहीं देता, क्योंकि यह सब इस (घड़ियाल) समय मुर्दों के विमानों के आगे ही बजता है। गुरु साहिब की सवारी के आगे नगारा निशान ही पंथ द्वारा निश्चित की गई मर्यादा अनुसार (नगारा निशान) शोभा देता है।

२८७. प्रश्न - गुरुद्वारे जाने का क्या फायदा होता है?

उत्तर - गुरुद्वारे जाने से सबसे बड़ा फायदा यह है कि गुरुद्वारा जिस गुरु जी के साथ और घटना से सम्बन्ध रखता है, हमारे दिल में उस की याद को कायम रखता हुआ हमें मार्गदर्शन और प्रेरणा देता है। हम स्वयं को गुरु के निकट महसूस करते हैं। मन की शांति हमें खुशहाली में रखती है। गुरुद्वारे में साध-संगत का साथ भी हमें मुक्ति के रास्ते पर मदद करता है। गुरुबाणी में साध-संगत की बड़ी महिमा दर्शाई गई है, जैसे—

सची संगति बैसणा सचि नामि मनु धीर ॥ १ ॥ (पन्ना ६९)
ऊतम संगति ऊतमु होवै ॥ गुण कउ धावै अवगुण धोवै ॥ (पन्ना ४१४)
मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सि तरिआ ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥ १ ॥ (पन्ना ४९५)
थानु सुहावा पवितु है जिथै संत सभा ॥ (पन्ना ४४)

सो गुरुद्वारे जाने से जीवन पवित्र बनता है। हर सिक्ख को गुरुद्वारे जाकर अपना जीवन गुरुबाणी के अनुसार ढालना चाहिए। पंचम पातिशाह का हुक्म है:

गुर दुआरै हरि कीरतनु सुणीऐ ॥ (पन्ना १०७५)

२८८. प्रश्न - गुरुद्वारे जाने के समय पांव नंगे और सिर ढक कर क्यों जाना चाहिए?

उत्तर - किसी भी राज दरबार में सिर ढक कर जाना एक आदर-सूचक है। मुसलमानों में भी नमाज़ पढ़ते समय सिर ढंका जाता है क्योंकि गुरुद्वारे जाते समय हम अपने शहंशाह गुरु ग्रंथ साहिब के दरबार में हाज़िर होते हैं।

इस कारण हमारा फर्ज बन जाता है कि हम उनका आदर करते हुए सिर को नंगा न रखें। जूता उतारने का रिवाज़ हर धर्म में है क्योंकि जूते को लगी अपवित्रता पवित्र स्थानों पर लेकर जाना उचित नहीं। बाइबल और कुरान में भी इस बात के बारे में आदेश दिए गए हैं। जो प्रेमी जूते उतार कर गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ सिर पर रख कर सफर करते हैं उस बारे जो भ्रम है उस को भाई काह्न सिंघ जी नाभा इन शब्दों में स्पष्ट करते हैं:

कितने प्रेमी सिक्ख गुरु ग्रंथ साहिब जी को सिर पर रख कर सफर करते हुए अथवा गुरु साहिब की पालकी उठाते हुए जूता उतार कर नंगे पांव जाते हैं और चंवर करने वाला और कीर्तनिए सिक्ख जूता उतार देते हैं, परन्तु यह अविद्या और भ्रम मूलक कर्म है। रास्ते में जूता उतार कर जाना योग्य नहीं, अगर जूते की मिट्टी अपवित्रता का कारण हो सकती है, तब रास्ते में पड़ा मल, कुत्ते आदि जीवों का मल मूत्र पावों को कितना अपवित्र कर सकता है? कंकर-कांटा आदि पैरों को दुख देने का कारण होते हैं। श्री गुरु साहिबान की सेवा में जो सिक्ख सेवक चलते थे, वह नंगे पांव नहीं हुआ करते थे, गुरसिखों को गुरु नानक देव जी का वाक्यः

पग उपेताणा॥ अपणा कीआ कमाणा॥ ***(पन्ना ४६७)***

और दशमेश का वाक्य—

बांदरा सदीव पाइ नागे ई फिरत है॥

सदा मन में बसा कर पाखंड कर्मों से बचना चाहिए।

२८९. प्रश्न - गुरुबाणी में खाने-पहनने के बारे में सिक्ख को क्या आदेश हैं?

उत्तर - सिक्ख धर्म में खाने के बारे में दो पाबंदियां हैं। एक जैसे कि गुरु नानक देव जी ने कहा थाः

बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु॥
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार॥ १॥ ***(पन्ना १६)***

ऐसी ही पाबंदी गुरु नानक जी ने पहनने के बारे में भी लगाई है, अर्थात जिस खाने-पहनने से शरीर को तकलीफ होती है और मन में विकार पैदा होते हैं, वह खाना-पहनना गुरमति अनुसार उचित नहीं। मिसाल के तौर पर नशों का सेवन सेहत को खराब करता है और मन में विकार भी पैदा करता है, इसलिए नशों के सेवन की मनाही है। इसी तरह अगर कोई खाना या

ज़्यादा खाना खाने से हज़्म नहीं होता या उसके शरीर के योग्य नहीं है तो वह नहीं खाना चाहिए। कई कपड़े भी ऐसे होते हैं जो शरीर को नुक्सान पहुंचाते हैं या हमारे मन में या देखने वालों के मन में विकार पैदा करते हैं, ऐसे कपड़े पहनने की मनाही है। सादा खाना और सादा पहनना सबसे उत्तम है। तंबाकू का इस्तेमाल और हलाल मांस खाना गुरु गोबिंद सिंघ ने कुकर्म करार दिया है। सो सिक्ख का फर्ज़ है कि वह कुकर्म करके गुरु जी के हुक्म की उल्लंघना न करे। पहनने के बारे में गुरमति में दो वस्त्रों का हुक्म है— एक सिर पर दस्तार, दूसरे कछहरा पहनना। जो पांच ककार गुरु गोबिंद सिंघ ने हमें दिए ***(कछहरा, कड़ा, कृपाण, कंघा और केस)*** कछहरा उनमें से ही एक है। और किसी भी तरह का कपड़ा मौसम अथवा फैशन अनुसार पहना जा सकता है, परन्तु वह मन और तन पर कोई गलत प्रभाव न डाले जैसे ऊपर बताया गया है। तीसरे गुरु जी के अनुसार नेक कमाई से प्रयोग किया हुआ खाना और पहनना अमृत है, इस से सम्मान मिलता है:

अंम्रितु खाणा अंम्रितु पैन्हणा नानक नामु वडाई होइ ॥ १ ॥ (पन्ना ५११)

२९०. प्रश्न - सिक्ख धर्म में मनुष्य जीवन का क्या उद्देश्य है? क्या इस धर्म में पूर्व जन्म माने जाते हैं?

उत्तर - सिक्ख धर्म में यह विश्वास किया जाता है कि मनुष्य जन्म कई जन्मों के बाद मिलता है। चौरासी लाख योनियों का विश्वास किया जाता है जैसे कि गुरु अर्जुन देव जी फुरमाते हैं:

लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ ॥
नानक नामु समालि तूं सो दिनु नेड़ा आइओइ ॥ ४ ॥
(पन्ना ५०)

सिक्ख धर्म के विद्वान भाई गुरदास जी भी कहते हैं:

चौरासी लक्ख जोनि विच्च उतम जनम सु मानस देही ॥
(वार १, पउड़ी ३)

गुरुबाणी अनुसार यह जन्म हमें प्रभु का नाम लेने के लिए मिला है तथा और किसी जन्म में नाम लेने की सूझ नहीं होती—यह एक सुनहरी मौका है, नाम जपने का, ताकि इन्सान आगे से जन्म-मरण के चक्कर में न पड़े। नहीं तो फिर आवागमन के चक्कर में पड़ा रहेगा। पांचवें पातिशाह स्पष्ट करते हैं:

भई परापति मानुख देहुरीआ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम॥ मिलु साधसंगति भजु केवल नाम॥ १॥
(पन्ना १२)

कबीर जी भी मानस जन्म को दुर्लभ कहते हैं और यह दुर्लभ जन्म नाम जपने के बगैर ही बीत गया तो हमने ऐसे ही गंवाया।

दुलभ देह पाई वडभागी नामु न जपहि ते आतम घाती॥ १॥
(पन्ना १८८)

सतिगुरु भेटि हरि जसु मुखि भणीऐ॥
कलि कलेस मिटाए सतिगुरु हरि दरगह देवै माना हे॥ ४॥
(पन्ना १०७५)

२९१. प्रश्न - गुरुबाणी में निंदा, ईर्ष्या, कपट, ठगी और अकृतघ्नता के पापों के बारे में क्या विचार दिए गए हैं?

उत्तर - निंदा—निंदा करना एक बहुत ही बुरी आदत है। गुरुबाणी में निंदा त्यागने का आदेश है। गुरु अमरदास जी कहते हैं:

मेरे मन तजि निंदा हउमै अहंकारु॥ *(पन्ना २९)*

गुरु रामदास जी ने निंदक की दशा इस तरह बयान की है:

निंदकु निंदा करि मलु धोवै, ओह मलभखु माइआधारी॥
(पन्ना ५०७)

कबीर जी ने जब निंदो निंदो का गान किया तो गुजरी मः ५ उनका भाव था कि सज्जन पुरुष की निंदा करने वाला ही निंदा का पात्र बनता है। आप जी कहते हैं:

हमरे कपरे निंदकु धोइ॥ १॥ *(पन्ना ३३९)*

भाई गुरदास जी भी १२वीं वार में कहते हैं:

हउं तिस घोल घुमाइआ पर निंदा सुणि आपु हटावै॥

भाई चौपा सिंघ के रहतनामे अनुसार:

खालसा सो जो निंदा तिआगे॥

ईर्ष्या—ईर्ष्या की भावना भी निंदा की तरह ही इन्सान के अच्छे बनने में रुकावट है। ईर्ष्या से भाव है दूसरों की इज्जत और शोभा न सहन करनी। गुरुबाणी किसी से भी ईर्ष्या करने को बुरा मानती है। गुरु रामदास जी तो यहां तक कहते हैं:

जिसु अंदरि ताति पराई होवै तिस दा कदे न होवी भला॥ (पन्ना ३०८)

गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं:

ऐकसु सिउ जा का मनु राता॥ विसरी तिसै पराई तात॥ १॥

(पन्ना १८९)

परन्तु यह गुण इन्सान प्रभु की कृपा से ही हासिल करता है।

गुरु नानक देव जी के अनुसार जब गुरु की यह बात समझ आ जाती है कि -

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई॥ (पन्ना २)

तब वह अवस्था आ जाती है कि सब तात पराई भूल जाती है। गुरु अर्जुन देव जी के शब्दों में—

अचरजु ऐकु सुनहु रे भाई गुरि ऐसी बूझ बुझाई॥
लाहि परदा ठाकुरु जउ भेटिओ तउ बिसरी ताति पराई॥ २॥

(पन्ना २१५)

उस अवस्था में—

ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई॥ १॥

(पन्ना १२९९)

कपट—कपट से भाव है फरेब, यानी कि जो है उस से उलट नज़र आना। अंदर से कुछ और तथा बाहर से कुछ और कपटी का ढंग है। कपटी अपने के लिए झूठ का सहारा लेते हैं। गुरु रामदास जी ऐसे आदमी का स्वभाव बताते हुए कहते हैं—

इकि वलु छलु करि कै खावदे मुहहु कूड़ु कुसतु तिनी ढाहिआ॥

(पन्ना ८५)

गुरुबाणी के अनुसार ऐसे लोगों का विश्वास नहीं किया जा सकता। उनका जन्म किसी काम का नहीं —

बिरथा जनमु गवाइआ कपटी बिनु सबदै दुखु पावणिआ॥ ४॥

(पन्ना १२३)

आज कल कुछ झूठे साधु भी हैं जो फरेब का सहारा लेकर लोगों को गुमराह कर रहे हैं। ऐसे लोगों के लिए पंचम पातिशाह फुरमाते हैं:,

हिरदै जिन्ह कै कपटु वसै बाहरहु संत कहाहि॥
त्रिसना मूलि न चुकई अंति गए पछुताहि॥ २॥

(पन्ना ४९१)

ठगी—ठगी भी कपट का ही एक ढंग है। गुरु नानक देव जी का वचन है कि जो ठगी करके खाता है वह मुरदार खाता है:

ठगि खाधा मुरदार॥ ***(सिरीरागु म: १)***

अकृतघ्न—अकृतघ्न गुरुबाणी में सबसे ज्यादा पापों में गिना जाने वाला पाप है। नमक हलाली, शुक्राना न करना।

गुरु अर्जुन देव जी फुरमाते हैं:

नरक घोर बहु दुख घणे अकिरतघणा का थानु॥ ***(पन्ना ३१५)***

इन्सान किसी दूसरे इन्सान का किया तो भुला देता है परन्तु वह भगवान को भी भूल जाता है, "जिन सभ कुछ दीआ"। गुरु नानक देव जी वचन करते हैं:-

मनमुख लूण हराम किआ न जाणिआ॥
बधे करनि सलाम खसम न भाणिआ॥ ***(पन्ना १४३)***

गुरु अर्जुन देव जी भी यह विचार रखते हैं:

जिस का दीआ पैनै खाइ॥ तिसु सिउ आलसु किउ बनै माइ॥ १॥
खसमु बिसारि आन कंमि लागहि॥ कउडी बदले रतनु तिआगहि॥ १॥
(पन्ना १९५)

गुरुबाणी में ऐसे पुरुष को, जो किसी के उपकार को भुला देता है, साकत भी कहा गया है। कबीर जी कहते हैं कि ऐसे पुरुष का संग भी अपने आप को अपवित्र कर देता है:-

कबीर साकत संगु न कीजीऐ दूरहि जाईऐ भागि॥
बासनु कारो परसीऐ तउ कछु लागै दागु॥
(पन्ना १३७२)

ऐसे पुरुष से तो गंदगी खाने वाला सूअर भी अच्छा है:-

कबीर साकत ते सूकर भला राखै आछा गाउ॥
उहु साकतु बपुरा मरि गइआ कोइ न लैहै नाउ॥
(पन्ना १३७२)

भाई गुरदास जी अकृतघ्न को भूमि पर बोझ समझते हैं। सो सिक्खों का धर्म है कि वह किसी का किया न भूलें। वाहिगुरु की शुक्रगुजारी तो कदम-कदम पर करनी चाहिए। उसने हमें सब कुछ दिया है—कान, नाक, जिह्वा, सब कुछ देने वाले मालिक को कभी भी न भूलना ही गुरमति है।

२९२. प्रश्न - गुरुबाणी अनुसार नम्रता की महानता बयान करो?

उत्तर - सिक्ख को नम्रता की शिक्षा गुरुओं के जीवन और गुरुबाणी से बहुत स्पष्ट शब्दों में मिलती है। गुरु नानक देव जी ने बाणी में अपने आप को बहुत छोटा कहा है (नानक नीच कहे वीचार)

वह लिखते हैं:-

जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ॥

(पन्ना ४६५)

गुरु अर्जुन देव जी भी रागु सोरठि में कहते हैं:-

गरीबी गदा हमारी॥ खंना सगल रेनु छारी॥
इसु आगै को न टिकै वेकारी॥ गुर पूरे एह गल सारी॥ २॥

(पन्ना ६२८)

कबीर जी भी नम्रता की प्रौढ़ता करते हुए कहते हैं:-

कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ॥
जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ॥

(पन्ना १३६४)

गुरु नानक देव जी ने **"मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु"** का उपदेश देने के लिए सिंबल वृक्ष की मिसाल देकर हमें समझाया। आप फुरमाते हैं:-

धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ॥ *(पन्ना ४७०)*

सिक्खों को नम्रता कभी नहीं छोड़नी चाहिए। सुखमनी साहिब ने स्पष्ट किया है कि नम्रता वाला इन्सान ही बड़ा है।

आपस कउ जो जाणै नीचा॥ सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा॥

(पन्ना २६६)

२९३. प्रश्न - सिक्ख धर्म में भक्ति से क्या भाव है?

उत्तर - मन को एकाग्र करके प्रभु का नाम जपना ही भक्ति है। सुखमनी साहिब में आता है कि **"बिनु भगती तनु होसी छारु"** जो भक्ति करता है वह आप भी मुक्त होता है और दूसरों को भी मुक्ति की तरफ ले जाता है। परन्तु भक्ति के लिए नम्रता की ज़रूरत है। मन से काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को निकालना है। अहत्व नाम का दुश्मन है। इस को मारना पड़ता है। इस को मारने के लिए परमात्मा के हुक्म अनुसार चलना भी ज़रूरी है।

इस कारण ही गुरु अमरदास भक्ति मार्गों को 'बिखड़ा' मार्ग बताते हैं:-

भगति भाव इहु मारगु बिखड़ा गुर दुआरै को पावए॥
कहे नानकु जिसु करे किरपा सो हरि भगती चित लावए॥ १॥

(पन्ना ४४०)

परन्तु गुरुबाणी में आदेश है कि भक्ति का मार्ग अपनाना है तो उस की कृपा द्वारा.—सो सिक्ख को चाहिए कि वाहिगुरु के आगे अरदास करे कि वह कृपा करके उसको इस रास्ते पर डाले। अगर यह रास्ता न अपनाया तो रविदास जी कहते हैं कि कुछ भी लेखे नहीं:-

राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै॥

(पन्ना ६५८)

२९४. प्रश्न - सिक्ख का स्वभाव किस तरह का होना चाहिए?

उत्तर - सिक्ख गुरुओं ने सिक्ख को एक आदर्श इन्सान बनाने के लिए उसको जीवन के उत्तम उसूल बताए। विद्वता, सहनशीलता, नम्रता और मिठास के गुण उसको अपनाने के लिए आदेश दिया। सिक्ख किसी के साथ ईर्ष्या नहीं करता, प्रत्येक का भला मांगता है, विपत्ति में मदद करता है। वह सुख-दुख को एक समान मानता है। वह मायाधारी नहीं बनता। जो भी मेहनत से कमाता है, मिल-बांट कर खाता है। वह मीठा बोलता है किसी से भी कड़वा नहीं बोलता। वह अधिकार और इन्साफ के लिए लड़ता है। अपनी जीत और प्राप्ति को वह वाहिगुरु की देन समझता है और हार व नुक्सान को उसका हुक्म करके मानता है।

२९५. प्रश्न - सिक्ख धर्म अनुसार नीचे लिखे विषयों पर विचार करो?

कीर्तन, कथनी और करनी, फीका बोलना, दस्तारबंदी, मेल-मिलाप।

उत्तर - कीर्तन— सिक्ख धर्म दुनिया का पहला धर्म है जिस में कीर्तन को इतनी मान्यता दी गई है। गुरु नानक देव जी और मर्दाना उदासियों के समय कीर्तन करके सभी को मंत्रमुग्ध कर देते थे। सभी गुरुओं ने कीर्तन की प्रथा को उत्साहित किया। श्री गुरु अर्जुन देव जी ने एक वाद्य सरंदा रच कर प्रेमी सिक्खों को संगीत विद्या आप सिखाई। गुरुबाणी में कीर्तन की महिमा सुशोभित है। कीर्तन को कलियुग में प्रधान बताया गया है।

कथनी और करनी—आज की दुनिया में कथनी और करनी में बहुत फर्क आ गया है। यही कारण है कि लोगों के चरित्र में गिरावट आ गई है। गुरुबाणी में अमल बिना कथनी की निंदा की गई है। नीचे लिखी पंक्तियां इस बात की गवाही देती हैं:-

सिरीरागु महला १

जह करणी तह पूरी मति॥ करणी बाझहु घटे घटि॥ ३॥

(पन्ना २५)

कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु॥ ६॥

(पन्ना ५६)

करि सिदकु करणी खरचु बाधहु लागि रहु नामे॥ १॥ रहाउ॥

(पन्ना ६४)

रहत रहत रहि जाहि बिकारा॥ गुर पूरै कै सबदि अपारा॥

(पन्ना २५९)

सचु करणी सचु ता की रहत॥ सचु हिरदै सति मुखि कहत॥ (पन्ना २८३)

जगि गिआनी विरला आचारी॥ जगि पंडितु विरला वीचारी॥

बिनु सतिगुरु भेटे सभ फिरै अहंकारी॥ ६॥

(पन्ना ४१३)

भणति नानकु बूझै को बीचारी॥ इसु जग महि करणी सारी॥

(पन्ना ५९९)

गावनहारी गावै गीत॥ ते उधरे बसे जिह चीत॥ १॥

....

कहन कहावन सगल जंजार॥ नानक दास सचु करणी सारु॥ ४॥

(पन्ना १२९९)

फीका बोलना—एक प्रश्न के उत्तर में सिक्ख के स्वभाव का ज़िक्र करते हुए यह बताया गया है कि गुरसिख को मीठा बोलने वाला होना चाहिए। जो लोग कड़वा बोल-बोल कर दूसरों का दिल दुखा देते हैं उनको गुरसिख नहीं कहा जा सकता। फीका वही इन्सान बोलता है जो अपने आप को अच्छा और अक्लमंद तथा दूसरों को मंदा, बेअक्ल या नीचा समझता है। परन्तु गुरुबाणी तो बताती है कि मंदा तो किसी को कहना ही नहीं। **"जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ सुरति सबदु लिखाईऐ"**। अपने आप को नीचा और दूसरों से बुरा समझना ही गुरमति के अनुसार है। गुरु नानक देव जी की नीचे लिखी

पंक्तियां हमें याद रखनी चाहिएं—

नानक फिकै बोलीऐ तनु मनु फिका होइ॥
फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ॥
फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ॥
फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ॥

(पन्ना ४७३)

मेल-मिलाप—मेल-मिलाप से भाव है भाईचारा। सिक्ख धर्म सारी दुनिया के इन्सानों में भाईचारे पर विश्वास रखता है। जब सारे इन्सान एक परम पिता वाहिगुरु की औलाद हैं तब कोई वैरी या बेगाना नहीं, सभी से प्यार और मेल-मिलाप ही गुरमति है। इस कारण ही अरदास में 'सरबत का भला' मांगा जाता है।

*२९६. प्रश्न - **सिक्ख धर्म अनुसार नीचे लिखे विषयों पर विचार प्रकट करो?***

उदासी, अहिंसा, आत्मघात, लोगों का सम्मान, उधम, भरोसा।

उत्तर - उदासी—सिक्ख धर्म अनुसार इन्सान को उदयीमान रहना चाहिए। जो इन्सान उदयीमान रहता है वह हमेशा खुशी और प्रसन्नता महसूस करता है। वह उदासी या अवनति में नहीं जाता। उदासी में न जाना, सुख-दुख को एक समान जानना ही गुरमति है। गुरु अर्जुन देव जी ऐसे इन्सान को जीवन मुक्त कहते हैं। सुखमनी साहिब की नौवीं असटपदी में उन्होंने ऐसे इन्सान के बारे में इस तरह फुरमाया है:

तैसा हरखु तैसा उसु सोगु॥ सदा अनंदु तह नही बिओगु॥
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी॥ तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी॥

(पन्ना २७५)

अहिंसा—हर धर्म इन्सान को दया सिखाता है परन्तु गुरमति में यथार्थ भाव में अहिंसा और दया का इस्तेमाल बताया गया है। बुद्ध मत्त और जैन मत्त के नियम अनुसार अहिंसा को परम धर्म मानते हुए मुंह पर पट्टी बांध लेने को अहिंसा नहीं माना गया। जूंओं, खटमल, पागल कुत्ता या सांप आदि को मारना हिंसा नहीं है क्योंकि उनको मारना ही ज़रूरी होता है, परन्तु किसी भी जीव का मन दुखाना या उस पर जुल्म करना हिंसा है। दूसरे शब्दों में बगैर किसी कारण किसी को भी कष्ट देना या मारना उचित नहीं परन्तु जब दुश्मन सामने हो और उसको जिंदा रखना अपने लिए, कौम और देश

के लिए नुक्सानदायक हो तो उस पर दया करने का कोई मतलब नहीं।

आत्मघात—आत्मघात देश के कानून के अनुसार एक कुकृत्य है। आत्मघाती वही इन्सान होता है जो जीवन की मुश्किलों से घबरा जाता है। परन्तु गुरुबाणी सिक्ख को डोलने से बचाती है। जो प्रभु के नाम से जुड़ा है वह कभी डोलता नहीं। जो प्रभु के नाम से बेमुख होकर कुकर्मों में पड़ जाता है, वह असल में आत्मघाती है। किसी अंग्रेज़ कवि ने भी कहा है।

When blandishments of life are gone

The coward sneaks to death, The brave live on.

गुरु का सिक्ख डरपोक अथवा कमज़ोर नहीं हो सकता। इस कारण वह न तो शारीरिक तौर पर आत्मघात करता है और न ही गुरुबाणी के आधार पर अपने आप को आत्मघात के हालातों में पाता है। गुरुबाणी के अनुसार आत्मघात महा पाप है।

लोगों का सम्मान—आज के युग में वाह-वाह सुनना प्रत्येक व्यक्ति को अच्छा लगता है परन्तु ऐसी वाह-वाह में कोई स्वार्थ होता है। वाह-वाह करने वाला इन्सान सदा सच नहीं बोल रहा होता। जिस इन्सान की वाह-वाह होती है उसके अंदर अहंकार पैदा होता है। इसलिए गुरुबाणी लोगों के सम्मान कोई महत्ता नहीं देती। अगर कोई सम्मान है भी तो वह वाहिगुरु का है। वह मेहरबान हो जाए तो इज्जत मिल जाती है। गुरसिख को सदा यह सोचना चाहिए कि **"हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥"** यदि किसी की इज्जत करनी है तब भी यही कहना चाहिए कि परमात्मा की उस इन्सान पर कृपा है जो उस ने सम्मान योग्य काम किया है। गुरु अर्जुन देव जी सिरीरागु में कहते हैं:-

दुनीआ कीआ वडिआईआ कवनै आवहि कामि ॥
माइआ का रंगु सभु फिका जातो बिनसि निदानि ॥

(पन्ना ४५)

उधम—उधम करना हर इन्सान का फर्ज़ है। कुछ लोग सब चीज़ किस्मत पर छोड़ कर उधम करना बंद कर देते हैं। सिक्ख धर्म में उधम की बहुत महिमा है। जो धर्म परिश्रम से निर्वाह नहीं करते और आलसी होकर जीवन बिताते हैं, वह सिक्ख धर्म के नियम 'दान' की पालना नहीं कर सकते

और न ही उनका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है।

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु॥
धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत॥

(पन्ना ५२२)

आगाहा कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा॥

(पन्ना १०९६)

कबीर कालि करंता अबहि करु अब करता सुइ ताल॥

(पन्ना १३७१)

भरोसा—भरोसे से भाव है विश्वास। गुरुबाणी में प्रभु पर विश्वास करने का विचार प्रकट किया गया है। अपने आप पर भरोसा रखने से अहं पैदा होता है, परन्तु अगर हम यह विश्वास करें कि प्रभु हमारा काम संवार देगा तब उस काम को करने के लिए हमारा भरोसा बढ़ जाता है। सुखमनी साहिब में स्पष्ट लिखा है :

जा कै रिदे बिस्वासु प्रभ आइआ॥
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥ (पन्ना २८५)

गुरु अर्जुन देव जी रागु धनासरी में भी बहुत साफ शब्दों में कहते हैं:

जिन कै मनि साचा बिस्वासु॥
पेखि पेखि सुआमी की सोभा आनदु सदा उलासु॥

(पन्ना ६७७)

इस बात से यह अंदाज़ा नहीं लगाना चाहिए कि हमें अपने आप पर विश्वास ही नहीं होना चाहिए। हमें अपने विश्वास के लिए प्रभु आश्रय की ज़रूरत है अगर हम वह आश्रय रखेंगे तो फिर गुरु महाराज नीचे लिखे शब्दों में हमारी हौसला अफजाई करके हमारे हर कार्य में फतह करेंगे:

असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि॥
जै जै कारु सगल भू मंडल मुख ऊजल दरबार॥

(पन्ना ६७८)

२९७. प्रश्न - सिक्ख धर्म में नशों की मनाही के बारे में संक्षेप में बताओ?

उत्तर - गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने जब खालसा पंथ सजाया तो उन्होंने कुछ मर्यादाएं और कुछ निषेध-कार्य पंथ के लिए निश्चित किए। गुरु जी ने जिन चार निषेध कार्यों का ज़िक्र किया, उनमें से एक नशों के सेवन

के साथ सम्बन्धित है। इसमें तंबाकू के इस्तेमाल की मनाही है। कुछ सिक्खों को यह भ्रम है कि नशों में सिर्फ बीड़ी, सिगरेट पीने की और तंबाकू के इस्तेमाल की मनाही है, परन्तु सच तो यह है कि तंबाकू नशों का एक चिन्ह है जिसके इस्तेमाल हेतु खालसा पंथ को मना किया गया है। सिक्ख धर्म का नशों के प्रति विरोध गुरुबाणी में आई कई पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है। ऐसी ही कुछ पंक्तियां नीचे दी जा रही हैं जो यह दर्शाती हैं कि नशे बल और बुद्धि के विनाशक हैं और इनसे पराधीनता, आलस, कमज़ोरी और कई रोग तथा विकार पैदा होते हैं।

दुरमति मदु जो पीवते बिखली पति कमली॥
राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली॥ ४॥

(पन्ना ३९९)

इतु मदि पीतै नानका बहुते खटीअहि बिकार॥

(पन्ना ५५३)

गुरु रामदास जी जब कहते हैं कि जो प्रभु का नाम नहीं जपते, उनके मुंह में से झाग निकलती है और वह पगले लगते हैं, तो उनका इशारा एक नशा करने वाले की तरफ ही है। चौथे पातिशाह ने पान-सुपारी खाकर मुंह लाल करने वाले लोगों के बारे में भी ज़िक्र किया है और ऐसे लोग नाम को भुला कर मौत के फरिश्ते के वश में हो जाते हैं। गुरु अमरदास जी ने वार बिहागड़ा में शराब पीने वाले की तस्वीर नीचे लिखीं पंक्तियों में पेश करते हुए झूठे नशों से बचने के लिए कहा है।

जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ॥
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ॥

(पन्ना ५५४)

जन्म साखियों से पता चलता है कि गुरु नानक देव जी को जब बाबर और फिर सिद्ध-योगियों ने झूठे नशों से खुमारी में रहने के बारे में बताया तो गुरु जी ने झूठे नशे त्याग कर नाम की खुमारी में रहने का उपदेश दिया— ऐसी खुमारी जो कभी नहीं उतरती। झूठे नशों के बारे में संत कबीर और रविदास जी भी चेतावनी देते हैं कि:-

कबीर भांग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खांहि॥
तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसातलि जांहि॥
(पन्ना १३७७)

सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे संत जन करत नही पानं॥
सुरा अपवित्र नहंत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं॥
(पन्ना १२९३)

भाई गुरदास जी ने भी अपनी रचनाओं में पोश्त, भांग और शराब पीने वाले अमलियों का जीवन तोहमतों से भरा बताया है। रहतनामों में भी सिंघों को पांच नशों में शराब को नशा बताते हुए कहा कि यह त्याग कर ही कोई सिंघ बन सकता है।

पर नारी जूआ असत चोरी मदिरा जान।
पांच ऐब ए जगत मे तजै सु सिंघ सुजान।

२९८. प्रश्न - सिक्ख की विद्या ज्ञान प्राप्ति के बारे में क्या आदेश हैं?

उत्तर - गुरुओं ने सिक्खों को ज्ञानवान बनाने के लिए उनको पुराने ग्रंथों और भाषाओं की विद्या हासिल करने के लिए उपयुक्त स्थानों पर भेजा। सिक्ख गुरु आप भी बहुत विद्वान थे जैसे कि उनकी काव्य कला से पता चलता है। ज्ञान हासिल करने के लिए विद्या ज़रूरी है परन्तु सिर्फ किताबें अथवा वेद शास्त्र पढ़ कर कोई इन्सान विद्वान नहीं बनता जब तक वह ज्ञान को विचारता नहीं। विचार करने वाला ब्रह्मज्ञानी होता है जैसे कि सुखमनी साहिब में आता है:

आपु बीचारे सु गिआनी होइ॥ मन साचा मुखि साचा सोइ॥
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ॥ नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ॥
(पन्ना २७२)

पढ़ा-लिखा ज्ञानी इन्सान परोपकारी होता है।

विदिआ वीचारी तां परउपकारी (पन्ना ३५६)

२९९. प्रश्न - धर्म अनुसार गुरु की क्या ज़रूरत है और गुरु कैसा होना चाहिए?

उत्तर - सिक्ख धर्म में गुरु की बड़ी महानता है। गुरु बिन घोर अंधेरा है। ज्ञान और रौशनी दिखाने वाला गुरु हम जैसे भूले हुए को ठीक रास्ते पर चलाता है। गुरुबाणी में अनेकों पंक्तियां हैं जो गुरु की महिमा गाती हैं जैसे:-

भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु॥

(पन्ना ६१)

जिसु मिलिऐ मनि होइ अनंदु सो सतिगुरु कहीऐ॥
मन की दुबिधा बिनसि जाइ हरि परम पदु लहीऐ॥

(पन्ना १६८)

गुर गोविंदु गोविंद गुरू है नानक भेदु न भाई॥

(पन्ना ४४२)

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे॥

(पन्ना ९८२)

परन्तु गुरुबाणी में यह चेतावनी भी है कि जिनका गुरु आप अंधकार में है वह कोई रास्ता नहीं दिखा सकता, इसलिए सच्चे गुरु के संग ही रहना चाहिए। सिक्खों के लिए अब एकमात्र सच्चा गुरु है- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, और कोई नहीं।

३००. प्रश्न - क्या सिक्ख धर्म में औरत को अखंड पाठ में हिस्सा लेने या अरदास करने की इज़ाजत है?

उत्तर - सिक्ख धर्म में औरत को बहुत सम्मानपूर्वक देखा जाता है। उस को हर सामाजिक और धार्मिक काम करने की छूट है। गुरु नानक देव जी ने फुरमाया है कि ***"सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान॥"*** गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अमृत छकाने के समय माता जी को साथ रखा था। सो सिक्ख धर्म में औरत को पाठ और अरदास करने का एक-समान अधिकार है।

